ISSN-0971-8397

योजना

अगस्त 2014 विकास को समर्पित मासिक ` 20

विशेषांक

नीतियां तथा क्रियान्वयन - आंशिक बदलाव
आशिमा गोयल

वित्तीय सुदृढ़ीकरण का व्यावहारिक दृष्टिकोण
चरण सिंह एवं शारदा शिम्पी

बदलते आर्थिक परिदृश्य में लक्ष्यों व प्राथमिकताओं पर विचार
रवीन्द्र ढोलकिया

संतुलित और विकासोन्मुखी रेल बजट
अरविंद कुमार सिंह

केंद्रीय बजट 2014-15

विशेष आलेख
यमुना सफाई
वर्तमान चुनौतियां और समाधान
दीपशिखा शर्मा

मुक्त विद्यालय-छुए मन, बदले जीवन

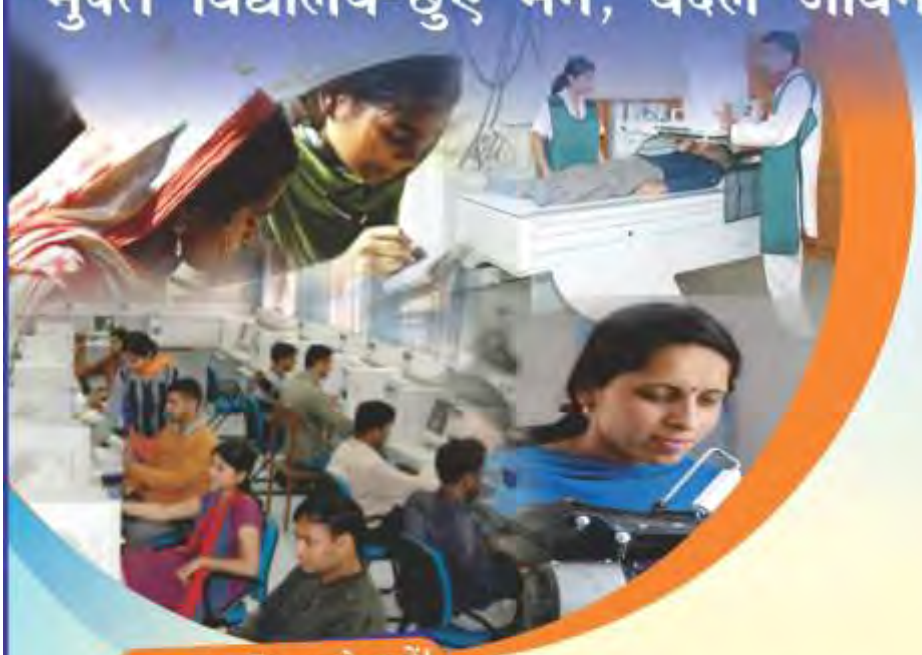

आओ पढ़ें! आगे बढ़ें!

अपनी शिक्षा आगे बढ़ायें...
मुक्त विद्यालय को अपनायें

पाठ्यक्रम	प्रवेश शुल्क (बिना विलम्ब)			प्रवेश के लिए तिथियां
	पुरुष	महिलाएं	छूट प्राप्त वर्ग	
• मुक्त बेसिक शिक्षा कक्षा–III, V एवं VIII	–	–	–	30 जून (प्रत्येक वर्ष)
• सेकेन्डरी (कक्षा - X)				ब्लाक-1 : 16 मार्च–31 जुलाई (बिना विलम्ब शुल्क)
(i) पाँच विषयों के लिए	₹ 1350	₹ 1100	₹ 900	1 अगस्त–15 सितम्बर (विलम्ब शुल्क के साथ)
(ii) प्रत्येक अतिरिक्त विषय के लिए	₹ 200	₹ 200	₹ 200	ब्लाक-2 : 16 सितम्बर–31 जनवरी (बिना विलम्ब शुल्क)
				1 फरवरी–15 मार्च (विलम्ब शुल्क के साथ)
• सीनियर सेकेन्डरी (कक्षा - XII)				ब्लाक-1 : 16 मार्च–31 जुलाई (बिना विलम्ब शुल्क)
(i) पाँच विषयों के लिए	₹ 1500	₹ 1250	₹ 975	1 अगस्त–15 सितम्बर (विलम्ब शुल्क के साथ)
(ii) प्रत्येक अतिरिक्त विषय के लिए	₹ 230	₹ 230	₹ 230	ब्लाक-2 : 16 सितम्बर–31 जनवरी (बिना विलम्ब शुल्क)
				1 फरवरी–15 मार्च (विलम्ब शुल्क के साथ)
• व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम (6 माह से 2 वर्ष)	पाठ्यक्रमों एवं अवधि के आधार पर			सत्र - 1 : 30 जून (प्रत्येक वर्ष) सत्र - 2 : 31 दिसम्बर (प्रत्येक वर्ष)

प्रवेश के लिए अपने निकटतम अध्ययन केंद्र अथवा संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय से संपर्क करें।
विलम्ब शुल्क, अध्ययन केंद्रों, क्षेत्रीय कार्यालयों आदि की विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट www.nios.ac.in देखें।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त संस्थान)

ए–24/25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उ.प्र.)

टॉल फ्री नं. 1800-180-9393; ईमेल : lsc@nios.ac.in वेबसाइट : www.nios.ac.in

विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षा प्रणाली

YH - 117/2014

योजना

वर्ष 58 ● अंक 8 ● अगस्त 2014 ● श्रावण-भाद्रपद, शक संवत 1936 ● कुल पृष्ठ 76

प्रधान संपादक
राजेश कुमार झा

संपादक
जय सिंह
ऋतेश पाठक

संपादकीय कार्यालय
538, योजना भवन, संसद मार्ग,
नयी दिल्ली-110 001
दूरभाष: 23717910, 23096738
टेलीफैक्स: 23359578
ईमेल: yojanahindi@gmail.com
वेबसाइट: www.yojana.gov.in
www.publicationsdivision.nic.in
http://www.facebook.com/yojanajournal

संयुक्त निदेशक (उत्पादन)
वी. के. मीणा

व्यापार व्यवस्थापक (प्रसार एवं विज्ञापन)
सूर्यकांत शर्मा

दूरभाष: 26100207
फैक्स: 26175516
ईमेल: pdjucir@gmail.com

आवरण: **जी. पी. धोपे**

इस अंक में

- संपादकीय – 5
- नीतियां तथा क्रियान्वयन: आंशिक बदलाव आशिमा गोयल 7
- विशिष्ट सक्रिय राजकोषीय नीति की अनिवार्यता कमल नयन काबरा 13
- बदलते आर्थिक परिदृश्य में लक्ष्यों व प्राथमिकताओं पर विचार रवीन्द्र ढोलकिया 17
- केंद्रीय बजट 2014-15: एक मूल्यांकन अश्विनी महाजन 21
- संतुलित और विकासोन्मुखी रेल बजट अरविंद कुमार सिंह 27
- आर्थिक सुदृढ़ीकरण का व्यावहारिक रुख चरण सिंह, शारदा शिम्पी 31

विशेष आलेख
- यमुना सफाई: वर्तमान चुनौतियां और समाधान दीपशिखा शर्मा 35

क्या आप जानते हैं? – 40
- बजट और स्वस्थ भारत का सपना रवि शंकर 41
- नयी सरकार में शिक्षा की नई उड़ान विमल कुमार 46
- सब का साथ सब का विकास प्रियंका संभव 48
- उम्मीद से काफी कम मिला शशांक द्विवेदी 51
- नहीं मिली सामाजिक पूंजी को अहमियत रहीस सिंह 55
- बहुत मिला, लेकिन बहुत कुछ बाकी उमेश चतुर्वेदी 59
- विकासशील देशों का सारथी: ब्रिक्स विकास बैंक सुरेश अवस्थी 62
- माइक्रोफाइनेंस के जरिए जनजीवन बेहतर बनाने का प्रयास अरुण श्रीवास्तव 65
- बजट की प्रक्रिया: तैयारी से प्रस्तुति तक देवेन्द्र उपाध्याय 67

शोधयात्रा
- कपास के गोलों को चुनने वाली मशीन नाथूभाई आर वढेर 69

योजना हिंदी के अतिरिक्त असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तेलुगु तथा उर्दू भाषाओं में भी प्रकाशित की जाती है। पत्रिका मंगवाने हेतु, नयी सदस्यता, नवीकरण, पुराने अंकों की प्राप्ति एवं एजेंसी आदि के लिए मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर 'अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग' के नाम से बनवा कर निम्न पते पर भेजें। व्यापार व्यवस्थापक (प्रसार एवं विज्ञापन), प्रकाशन विभाग, पूर्वी खंड IV, तल VII, आर. के. पुरम, नयी दिल्ली-66 दूरभाष : 26100207, 26105590

सदस्य बनने अथवा पत्रिका मंगाने के लिए आप हमारे निम्नलिखित बिक्री केंद्रों पर भी संपर्क कर सकते हैं : सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नयी दिल्ली-110003 (दूरभाष : 24367260, 5610), हाल सं, 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054 (दूरभाष : 23890205) * 701, सी- विंग, सातवीं मंजिल, केंद्रीय सदन, बेलापुर, नवी मुंबई-400614 (दूरभाष : 27570686) * 8, एसप्लानेड, ईस्ट, कोलकाता-700069 (दूरभाष : 22488030), * 'ए' विंग, राजाजी भवन, बंसल नगर, चेन्नई-600090 (दूरभाष : 24917673) * प्रेस रोड नयी गवर्नमेंट प्रेस के निकट, तिरुअनंतपुरम-695001 (दूरभाष : 2330650) * ब्लॉक सं-4, पहला तल, गृहकल्प, एमजी रोड, नामपल्ली, हैदराबाद-500001 (दूरभाष : 24605383) * फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला, बंगलुरु-560034 (दूरभाष : 25537244) * बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ, पटना-800004 (दूरभाष : 2683407) * हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर-एच, अलीगंज, लखनऊ-226024 (दूरभाष : 2225455) * अंबिका कॉम्प्लेक्स, फर्स्ट फ्लोर अहमदाबाद-380007 (दूरभाष : 26588669) के. के. बी. रोड, नयी कॉलोनी, कमान संख्या-7, चेनीकुटी, गुवाहाटी-781003 (दूरभाष : 2665090)

चंदे की दरें : वार्षिक: ₹ 100 द्विवार्षिक : ₹ 180, त्रैवार्षिक : ₹ 250, विदेशों में वार्षिक दरें : पड़ोसी देश : ₹ 530, यूरोपीय एवं अन्य देश: ₹ 730। योजना में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। जरूरी नहीं कि ये लेखक भारत सरकार के जिन मंत्रालयों, विभागों अथवा संगठनों से संबद्ध हैं, उनका भी यही दृष्टिकोण हो। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषयवस्तु के लिए योजना उत्तरदायी नहीं हैं।

आपकी राय

किसानों का पलायन रोकना ही होगा

जून अंक भारतीय कृषि पर केंद्रित है जो काफी रोचक है। कृषि का कार्य करने वालों को योजना हिंदी में प्रकाशित सभी लेखों के लिए समस्त लेखकों को हार्दिक अभिनंदन एवं बधाई अवश्य देनी चाहिए।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। अभी भी यहां की सत्तर प्रतिशत आबादी कृषि से गुजर-बसर करती है। मुश्किल यह है कि कृषि घाटे का सौदा साबित होती जा रही है और दूसरी ओर ग्रामीण इलाकों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव है और यह स्थिति अभी भी बरकरार है। कृषि को आधुनिक तकनीक और विज्ञान से जोड़ना अनिवार्य हो चुका है। यह तो सभी कहते हैं कि कृषि क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं, लेकिन बावजूद इसके सच्चाई यह है कि कृषि आधारित औद्योगीकरण पर जैसा ध्यान दशकों पहले दिया जाना चाहिए था वैसा अभी भी नहीं दिया जा रहा है। यह तब है जब यह स्पष्ट हो चुका है कि देश के आर्थिक उत्थान के लिए ऐसा किया जाना जरूरी है। ऐसा करके एक तो ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर होने वाले पलायन को रोकने में मदद मिलेगी और दूसरी ओर कृषि पर निर्भर तबके को खुशहाल बनाने में आसानी होगी। बेहतर होगा कि मोदी सरकार संभावित सूखे और उसके चलते सिर उठा रही मंहगाई से निपटने के दीर्घकालिक उपाय करने के साथ ही कृषि क्षेत्र में भी बुनियादी बदलाव के लिए निर्णय ले। ऐसा करके ही वह उन तमाम वादों को पूरा कर सकती है जो उसकी ओर से किए गए थे और जिनके पूरा होने का इंतजार सारे देश को है और आज यही समय है कृषि क्षेत्र को सबल बनाने के लिए।

आज हमें आजादी की 67वीं वर्षगांठ पर खेती को लाभदायक बनाने का प्रण लेना चाहिए क्योंकि खेती ही देश की इतनी बड़ी विशाल जनसंख्या को संभाल सकती है। वर्ष 1996 में विश्व बैंक की एक रपट आई थी, जिसमें कहा गया था कि 2015 तक गांव छोड़कर जितने लोग भारत के विभिन्न शहरों में बसेंगे उनकी संख्या इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी की जनसंख्या से दोगुनी होगी। अभी इन तीनों देशों की जनसंख्या लगभग 20 करोड़ है। इसका मतलब है कि 2015 तक 40 करोड़ लोग अलग-अलग शहरों में बसेंगे। क्या इतने लोगों को शहरों में रोजगार मिल जाएगा? हम कृषि को मजबूत बनाने की कोशिश क्यों नहीं कर रहे हैं? हाल की जनगणना की रपट के अनुसार रोजाना 2358 किसान लगभग खेती छोड़ रहे हैं। ये लोग शौक से खेती नहीं छोड़ रहे हैं। ऐसी स्थिति बना दी गई है कि खेती छोड़ने के लिए लोग मजबूर हैं। जब तक हम खेती को मजबूत नहीं करेंगे तब तक हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं हो पाएगी।

खुशाल सिंह कोली
फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

भारतीय कृषि : नया दौर, नई चुनौतियां

जून 2014 का 'भारतीय कृषि' पर केंद्रित अंक पढ़ा। इसकी प्रस्तुति सटीक, सरल व पठनीय रही। इसमें कई नई जानकारियां प्राप्त हुईं।

'भारतीय कृषि संवर्धन में निवेश की महत्ता' आधारित लेख आकर्षक व अद्वितीय लगा। भारत में जी.एम. फसलों के भविष्य व इनकी उपयोगिता पर केंद्रित यू.के.एस. चौहान जी का लेख भी भारतीय कृषि में प्रौद्योगिकी की महत्ता को स्पष्ट बताता है।

भारतीय कृषि के समक्ष क्या चुनौतियां हैं, द्वितीय हरित क्रांति की आवश्यकता पर आधारित लेख भी यथार्थपरक व शानदार लगे।

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) पर विशेष 'एक वृक्ष दस पुत्र समान' लेख भी हमें मानव प्रकृति संबंध की नई परिभाषा प्रदान करता है।

गंगासिंह राजपुरोहित
डण्डाली, सिणहारी, बाड़मेर (राज.)

किसानों को नहीं मिलता मेहनत का फल

मैंने जून 2014 की 'योजना' पत्रिका पढ़ी। जिसमें कृषि संबंधी काफी सारी महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई थीं। 'भारतीय कृषि' पर यह विशेषांक मुझे बेहद पसंद आया। हमारे देश का किसान काफी मेहनती है। अपनी मेहनत के बल पर ही वो खेतों में अन्न उगाता

है। अगर देश का किसान खेत में मेहनत न करे तो देश में खाद्यान्न का संकट खड़ा हो जाए लेकिन इतनी मेहनत के बाद भी हमारे देश के किसानों को उनकी मेहनत का सही मूल्य नहीं मिल पाता। सरकारी दांव पेंच और दलालों, घूसखोरों के कारण हमारे देश का किसान पिसता रहता है। कभी सूखा, कभी बाढ़ के कारण भी फसल खराब हो जाती है। जिसके चलते किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है और कभी नकली बीज, नकली खाद के कारण भी किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है जिसके फलस्वरूप किसान खेती करने का खयाल त्याग देता है क्योंकि खेती में नुकसान दिखने के कारण उसका मन खेती की तरफ से हटने लगता है। आज की नई पीढ़ी भी शहर की चमक-दमक में खोकर गांवों से पलायन कर रही है जिससे खेती पर संकट बढ़ता जा रहा है। अगर उत्तराखंड का ही उदाहरण लें तो पता चलता है कि पहले जिस गांव में 35 से 40 परिवार रहा करते थे आज उसी गांव में 10 से 12 परिवार ही रह गए हैं। गांव में कई घरों में ताला लटका दिखाई देता है। गांव की रौनक तो गायब ही हो गई है। पहाड़ की खेती हाशिये पर जाती मालूम पड़ रही है। अगर यों ही पहाड़ से पलायन होता रहा तो पर्वतीय कृषि पूरी तरह से बर्बाद हो जाएगी। पिछले वर्ष आई आपदा ने पर्वतीय कृषि को भारी नुकसान पहुंचाया है। उत्तराखंड के दोनों मंडलों कुमाऊं और गढ़वाल में काफी हेक्टेअर कृषि भूमि आपदा की भेंट चढ़ गई। किसानों को भारी नुकसान हुआ। गांवों से पलायन रोकने के उपाय किए जाने बहुत जरूरी हैं। सरकार को गांवों से पलायन रोकने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। खेती छोड़ चुके किसानों को पुनः खेती करने के लिए प्रेरित करना होगा।

इस अंक में आलेख 'भारत में जी.एम. फसलों का भविष्य', 'भारतीय कृषि के समक्ष चुनौतियां और अवसर', 'आवश्यकता दूसरी हरित क्रांति की', 'संकट में खेती-किसानी' और 'एक वृक्ष दस पुत्र समान' काफी अच्छे लगे।

महेन्द्र प्रताप सिंह
मेहरागांव, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

सूखा अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती

मैं योजना का नियमित पाठक हूं। जून 2014 का अंक पढ़ा जो भारतीय कृषि पर केंद्रित था। इस अंक को पढ़कर भारतीय कृषि के संदर्भ में काफी अच्छी जानकारियां मिलीं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन आज भारतीय कृषि कई गंभीर समस्याओं से जूझ रही है। इन्हीं में से एक गंभीर समस्या सूखे की है। इस साल देश के पांच सौ जिलों को सूखा आपात योजना में शामिल करने का केंद्र सरकार का फैसला यह साफ-साफ बताता है कि अच्छे दिनों की उम्मीद के बावजूद सूखे के रूप में एक बड़ी चुनौती हमारे सामने है। करीब आधी जुलाई बीत जाने के बाद भी स्थिति ऐसी रहती है कि देश के बड़े हिस्से में सूखे पड़ रहे खेत वर्षा की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। इस कारण खरीफ फसल की बुआई तो कम होती ही है साथ ही पर्याप्त बारिश न होने के कारण बुआई वाले क्षेत्रों में भी भारी नुकसान की आशंका बनी रहती है, क्योंकि फसल पीली पड़ती जाती है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में आधी जुलाई के बाद भी पानी बरसता है, तो खरीफ की पछेती किस्म बोई जा सकती है, लेकिन महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में तो इस समय इसकी भी संभावना समाप्त हो गई रहती है, क्योंकि वहां पहले ही देर हो चुकी रहती है।

धान के उत्पादन में तो इस बार कमी की आशंका है क्योंकि वर्षा देरी से और अपर्याप्त हुई है, जिससे किसानों के सामने मोटे अनाज की बुआई के सिवा और विकल्प नहीं रहता है। ऐसी ही आशंका दलहन और तिलहन फसलों के उत्पादन के बारे में भी जताई जा रही है। इससे पहले सूखे के कारण हमें चीनी और दाल से लेकर खाद्य तेल तक आयात करने पड़े थे। अब अगर वैसी ही स्थिति पैदा होती है तो आयात बिल और महंगाई बढ़ने से अर्थव्यवस्था भी बुरी तरह प्रभावित होगी। सूखा सिर्फ खेती ही चौपट नहीं करता, बल्कि अपने साथ और भी कई मुसीबतें लेकर आता है। बारिश के अभाव में देशभर के जलाशयों में इस बार जल संग्रह काफी कम होने की संभावना है। जिससे आने वाले दिनों में पेयजल का संकट गहरा सकता है। सूखे में पशुओं के लिए चारे का संकट भी पैदा होता है, जिससे दूध का उत्पादन तो घटता ही है, खुद पशुओं का जीवन भी संकटग्रस्त हो जाता है।

खेत सूखते हैं तो किसानों और खेत मजदूरों की रोजी-रोटी भी छिन जाती है। इसी आशंका को ध्यान में रखते हुए इस बार मनरेगा में डेढ़ सौ दिनों तक रोजगार की जरूरत बताई जा रही है। कुल मिलाकर, आने वाले दिन खेती-किसानी से लेकर अर्थव्यवस्था के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण साबित होने वाले हैं।

राजेंद्र कुमार
कुशीनगर, उ.प्र.

कृषि पर आधारित महत्वपूर्ण अंक

'योजना' जून 2014 की प्रति जुलाई के प्रथम सप्ताह में मिली। सशक्त संप्रेषण शैली एवं गंभीर, विचारपरक लेखों के माध्यम से आपने इसे एक बेहद सारगर्भित अंक बना दिया है। सबसे पहले आपके संपादकीय लेख की चर्चा - आपने लिखा है कि कृषि संपूर्ण भारत के निवासियों का कल्याण सुनिश्चित करने की दृष्टि से एक निर्णायक तत्व है। यह सच है कि कृषि क्षेत्र में यह क्षमता विद्यमान है क्योंकि यह लोगों का पेट भर सकती है, उन्हें रोजगार दे सकती है और उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकती है; लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि पहले स्वयं कृषि का क्षेत्र विकसित हो जाए और किसानों की हालत सुदृढ़ हो जाए; जो पिछले 66 वर्षों में नहीं हो सकी है। उल्लेखनीय है कि 1950-51 में भारत के सकल घरेलु उत्पाद में कृषि का योगदान लगभग 60 प्रतिशत से घटकर 2012-13 में मात्र 14 प्रतिशत के करीब ही रह गया है। यह साबित करता है कि कृषि का क्षेत्र हमारे देश में शासक वर्ग द्वारा उपेक्षित रहा है।

इस अंक में विशेष रूप से कुछ रचनाएं मुझे बहुत अच्छी लगीं यथा - शुकदेव प्रसाद की एक वृक्ष दस पुत्र समान, अशोक गुलाटी की भारत के कृषि संवर्द्धन में निवेश की महत्ता, अजय शाह की भारत में क्षमता निर्माण एवं नरसिंह नारायण सिंह की भारतीय कृषि के समक्ष चुनौतियां और अवसर आदि। अन्य रचनाएं भी अच्छी हैं। सच कहें तो भारतीय कृषि पर आधारित यह अंक मुझे बहुत अच्छा लगा। धन्यवाद एवं अनेक शुभकामनाओं सहित -

चेतनादित्य आलोक
विद्या नगर (पश्चिम), रांची, झारखंड

संघ/राज्य लोक सेवा आयोग (प्रारम्भिक) परीक्षा हेतु

प्रथम प्रश्न-पत्र

1523	सिविल सेवा प्रा. परीक्षा सामान्य अध्ययन
1524	सिविल सेवा प्रा. परीक्षा सामान्य अध्ययनः हल प्रश्न–पत्र
847	भारत का इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
849	भारतीय राजव्यवस्था एवं भारत का संविधान
A1076	भूगोल
850	विश्व एवं भारत का भूगोल
A1091	भारतीय अर्थव्यवस्था
851	भारतीय अर्थव्यवस्था
A1089	सामान्य विज्ञान
853	सामान्य विज्ञान
172	भारतीय कला एवं संस्कृति
A1090	पारिस्थितिकी, पर्यावरण, जैव–विविधता एवं विज्ञान–प्रौद्योगिकी
1393	सिविल सेवा प्रा. परीक्षा सामान्य अध्ययनः प्रैक्टिस वर्क-बुक

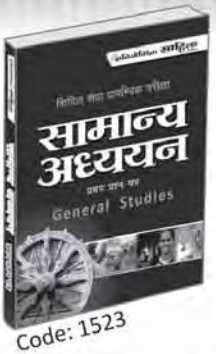

Code: 1523

Code: 847

द्वितीय प्रश्न-पत्र

A1077	सिविल सर्विसेज एप्टीट्यूड टेस्ट
A1080	तार्किक एवं विश्लेषणात्मक योग्यता
A1078	समंक व्याख्या एवं पर्याप्तता
A1096	मौलिक आंकिक योग्यता
852	सामान्य मानसिक योग्यता
766	सामान्य बुद्धि एवं तर्कशक्ति परीक्षण
A723	तर्कशक्ति परीक्षण
A939	सामान्य बुद्धि एवं तर्क परीक्षण

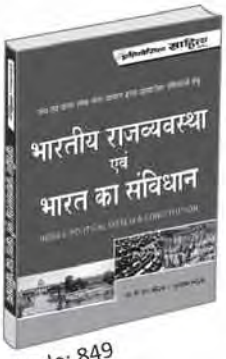

Code: 849

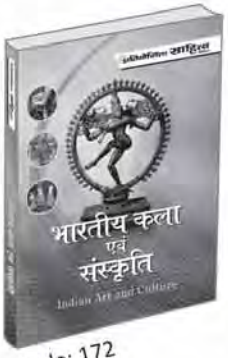

Code: 172

Code: A1077

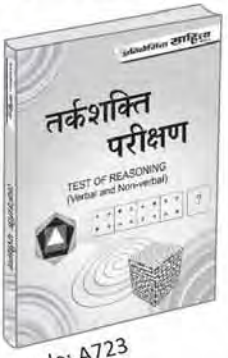

Code: A723

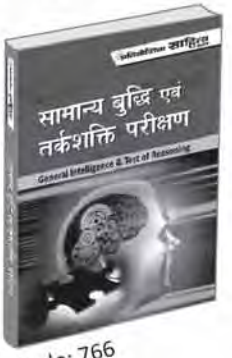

Code: 766

मुख्य परीक्षा हेतु

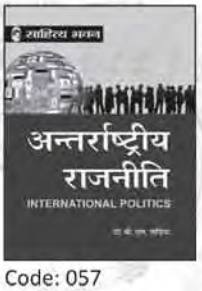

Code: 057

Code: 085

Code: 059

Code: 1333

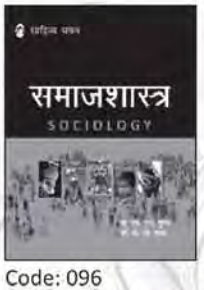

Code: 096

Code: 298

प्रतियोगिता साहित्य सीरीज

For More information Call : +91 89585 00222 info@psagra.in www.psagra.in

YH - 119/2014

संपादकीय

निरंतरता एवं परिवर्तन

देश के आर्थिक प्रबंधन को वर्तमान के राजनीतिक यथार्थ से अलग कर नहीं देखा जा सकता। नई सरकार ने मई 2014 में सरकार के आने के बाद जो नीतिगत घोषणाएं की हैं उन्हें इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। केंद्रीय बजट 2014-15 नई सरकार की पहली प्रमुख नीतिगत घोषणा है। व्यापक जन समर्थन की लहर पर सवार सरकार को कार्यभार संभालने के 45 दिनों के अंदर ही बजट प्रस्तुत करना पड़ा। नई सरकार से लोगों को जो भारी आशाएं थीं उसे देखते हुए निश्चय ही यह एक भगीरथ कार्य था। पिछले तीन दशकों में पहली बार किसी राजनीतिक दल को अपने बल पर पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ है। गठबंधन राजनीति की विवशताएं दूर हो गई हैं और अपनी आर्थिक सोच के अनुसार महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन लाने के लिए समूचे राष्ट्र ने सरकार को व्यापक समर्थन दिया है। परंतु भारत जैसे विशालकाय और जटिलताओं वाले देश के करोड़ों लोगों के जीवन और नियति को प्रभावित कर सकने वाले ऐसे परिवर्तन जल्दबाजी में नहीं लाए जा सकते। जाहिर है, विभिन्न विकल्पों की परख किए बिना मूलभूत परिवर्तन लाना संभव नहीं है। इस बजट में संभवत: यही बात कहने का प्रयास किया गया है। परिवर्तन का मंतव्य तो स्पष्ट है परंतु अतीत के साथ संतुलन और निरंतरता बनाए रखने की इच्छा भी दिखाई देती है।

सरकार के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वह है, आर्थिक विकास दर में वृद्धि और राजकोषीय स्थिरता सुनिश्चित करना। भारत की सकल घरेलू उत्पाद दर पिछले दो वित्तीय वर्षों में 4.7 और 4.5 तक गिर गई थी। अर्थव्यवस्था में आई मंदी विनिर्माण, निर्माण, खनन और परिवहन क्षेत्रों में सबसे अधिक दिखाई देती थी। विकास दर में यह गिरावट वृद्धिमान पूंजी परिणाम अनुपात (आईसीओआर) में बढ़ोतरी में परिलक्षित होती है। आईसीओआर, जो वर्ष 2009 से 2011 के बीच 4.1 पर था, उसमें दो वर्षों में तेजी से वृद्धि हुई है। विकासदर में आई सुस्ती और क्षमता का पूर्णरूप से उपयोग नहीं किए जाने के कारण ऐसा हुआ है। निवेश को गति देना और उत्पादकता में वृद्धि बजट की प्रमुख नीतिगत चिंताएं थीं। लोक परिव्यय में वृद्धि अथवा कमी के प्रभाव के बारे में बहस के बीच सरकार ने निजी क्षेत्र के साथ भागीदारी (पीपीपी), प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) और अन्य संस्थागत उपायों से निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए हैं। नए बजट में स्पष्ट रूप से निवेश के अनुकूल नीति और उसके कुशल कार्यान्वयन हेतु संस्थागत वातावरण के निर्माण पर जोर दिया गया। अस्थाई कर ऋण की सीमा 100 करोड़ रुपये से घटाकर 25 करोड़ रुपये करना, त्वरित निर्णय की प्रतिबद्धता, बीमा और रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पिछली तारीख से लागू कर (पूर्वप्रभावी कर) पर पुनर्विचार की घोषणा आदि प्रयास इसी दिशा में उठाए गए सकारात्मक कदम हैं।

विकास दर में वृद्धि और राजकोषीय स्थिरता के लक्ष्यों के बीच समन्वय संभव है। दोनों के बीच संतुलन से ही यह चमत्कार हो सकता है। बजट का उद्देश्य कर राजस्व बढ़ाकर और सब्सिडी में कमी लाकर राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण करना है। वर्तमान वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जहां 4.1 प्रतिशत रखा गया है वहीं वर्ष 2015-16 के लिए इसे जीडीपी के 3.6 प्रतिशत तक सीमित रखने का अनुमान लगाया गया है। इसमें 2016-17 तक और कमी लाकर 3 प्रतिशत तक लाने का इरादा है। इसी के साथ-साथ 2013-14 में जीडीपी के प्रतिशत के रूप में सकल कर राजस्व में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि करना है जिसे 2016-17 तक बढ़ाकर 11.2 प्रतिशत ले जाने का लक्ष्य है। कर राजस्व में वृद्धि की रणनीति को कर का आधार, विशेषकर सेवाकर और कर संग्रह में दक्षता बढ़ाकर अंजाम दिया जा सकता है। इसी के साथ-साथ बेहतर लक्ष्य निर्धारण और व्यवस्थागत खामियों में कमी लाकर सब्सिडी को जीडीपी के दो प्रतिशत तक सीमित रखने का इरादा है।

आर्थिक विषयों पर इस प्रकार की चर्चाओं पर प्राय: आंकड़े हावी रहते हैं लेकिन आम आदमी के नजरिये से मूल्य वृद्धि, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, विद्युत, सद्भावनापूर्ण सामाजिक और राजनीतिक परिवेश, समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक समानता आदि जैसे मौलिक प्रश्न ही महत्वपूर्ण होते हैं। किसी लोकनीति की सफलता लोगों के लिए इन लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने से ही आंकी जा सकती है। संभवत: उत्पादकता और रोजगार के अवसरों में वृद्धि के जरिए 'सक्रिय समावेशन' का पथ अपनाकर मानव क्षमता में वह उपलब्धि हासिल की जा सकती है जो 'समावेशी विकास' के मॉडल में पूरी नहीं की जा सकी। ❑

CL हॉल ऑफ फेम

सिविल सेवा '13 की प्रारंभिक परीक्षा का कट ऑफ -241 (समान्य श्रेणी) है
आप 241 में से 180 अंक GS II (CSAT) में ही प्राप्त कर सकते हैं
बहुत से CL विद्यार्थियों ने यही किया है

CL पंजीकरण संख्या	विद्यार्थी का नाम	यूपीएससी अनुक्रमांक	CSAT प्राप्तांक	CSAT प्रतिशत (200 में)	सिविल सेवा (प्रा.) 2013 के कट ऑफ (241) में CSAT के प्राप्तांक का प्रतिशत
1988094	अभिषेक आनंद	225650	194.18	97.1	80.6
2699229	राज कमल रंजन	220538	190.83	95.4	79.2
5619304	श्रुजीत वेलुमुला	044017	190	95.0	78.8
5619556	शेख़ रहमान	181495	190	95.0	78.8
5619239	प्रशांत जैन	322447	190	95.0	78.8
5619441	रविंदर जैन	327293	190	95.0	78.8
494563	शरत थोटा	083223	190	95.0	78.8
5293707	आशीष सांगवान	011764	188.33	94.2	78.1
5597674	रानाधीर अल्लू	136150	187.5	93.8	77.8
2387378	श्रीकांत रेड्डी	188130	187.5	93.8	77.8
5619612	गरूण सुमित सुनील	361061	187.5	93.8	77.8
2387056	प्रतीक वमसी गुर्रम	164567	187.5	93.8	77.8
5597676	मुरलीधर कोमीशेट्टी	033471	187.5	93.8	77.8
5597844	अर्पित शर्मा	103316	187.5	93.8	77.8
3013398	विनीत कुमार	241717	187.5	93.8	77.8
5293702	रतेन्द्र सिंह	006643	186.68	93.3	77.5
5099681	पंकज मित्तल	153106	186.68	93.3	77.5
3012296	अनुदीप दूरीशेट्टी	123528	186.68	93.3	77.5
2387152	प्रेम अकुंला	539516	185.83	92.9	77.1
5597689	आकांश दूबे	020889	185	92.5	76.8
2387786	नरसिम्हा पालाशानी	109847	185	92.5	76.8
3013337	गौरीशंकर डी	404474	185	92.5	76.8

और कई अन्य...

CSAT '15 के लिए CL से जुड़ें और अपनी सफलता सुनिश्चित करें

सिविल सेवा '13 के टॉप **10** में से **6** CL विद्यार्थी हैं

और कई अन्य...

80+* CL विद्यार्थियों ने सिविल सेवा 2013 में ऑल इंडिया रैंक प्राप्त की है

*परिणामों का ऑडिट अभी जारी है

प्रवेश जारी है
GS और CSAT '15 बैच के लिए

CL | Civil Services Test Prep

/CLRocks

www.careerlauncher.com/civils

नये बैचों की जानकारी हेतु अपने निकटतम् CL सिविल केंद्र से संपर्क करें

मुखर्जी नगरः 204/216, द्वितीय तल, विराट भवन/एमटीएनएल बिल्डिंग, पोस्ट ऑफिस के सामने, फोन – 41415241/46
ओल्ड राजेन्द्र नगरः 18/1, प्रथम तल, अग्रवाल स्वीट कॉर्नर के सामने, फोन – 42375128/29
बेर सरायः 61बी, ओल्ड जे. एन. यू. कैम्पस के सामने, जवाहर बुक डिपो के पीछे, फोन – 26566616/17
साउथ कैम्पसः 283, प्रथम तल, वेंकेटेश्वरा कॉलेज के सामने, सत्या निकेतन, फोन – 24103121/39

अहमदाबादः 9879111881 | इलाहाबादः (0)9956130010 | बंगलुरूः 41505590 | भोपालः 4093447 | भुवनेश्वरः 2542322 | चंडीगढ़ः 4000666 | चेन्नईः 28154725
हैदराबादः 66254100 | इन्दौरः 4244300 | जयपुरः 4054623 | लखनऊः 4108009 | नागपुरः 6464666 | पटनाः 2678155 | पुणेः 32502168

YH - 129/2014

नीतियां तथा क्रियान्वयनः आंशिक बदलाव

आशिमा गोयल

बजट में रोजगार बहुल क्षेत्रों, बुनियादी ढांचा, आवास, कृषि विपणन और कृषि संबंधी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रणालियों, प्रोत्साहनों, सरकारी व्यय और सार्वजनिक सेवाओं के संघटन को बेहतर बनाने की दिशा में शुरुआत भी की गई है। ये सभी उपाय विकास में योगदान के अलावा क्षमता निर्माण के जरिए समानता की स्थिति में सुधार लाने में मदद करेंगे ताकि अर्थव्यवस्था के मार्ग में रुकावटें न आएं

किसी नई सरकार के पहले बजट से यह उम्मीद की जाती है कि उसमें स्पष्ट लक्ष्य और उनके कार्यान्वयन की योजनाएं दिखाई दें। उच्चतर बढ़ोतरी, रोजगार, बेहतर सुविधाएं, बुनियादी ढांचा और सुशासन के जरिये आकांक्षाएं पूरी करने की मंशा तो व्यक्त की गई है, परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि बजट में किए गए उपाय लक्ष्य हासिल करने में कैसे सार्थक होंगे।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि कई ऐसे तरीके हैं जिनमें समग्र निरंतरता के बावजूद, बजट परिवर्तन की ओर संकेत करता नज़र आता है। परिणामों में सुधार के लिए परस्पर क्रियाशील पहलू निरंतर कार्य करते हैं, जैसा कि नीचे दिए गए अनुच्छेदों से पता चलता है।

विकास के बृहद आर्थिक निर्धारक

बजट में बृहत्त आर्थिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के निवेश और परिवार की बचत के लिए ऐसे उत्प्रेरक विद्यमान हैं, जो विकास में वृद्धि करने वाले हैं। तालिका 1 (अगले पृष्ठ पर देखें) के कॉलम 1 में वर्तमान बजट के बजट अनुमानों और अंतरिम बजट के अनुमानों के बीच अंतर का प्रतिशत दिया गया है, जिससे पिछली सरकार के बजट की तुलना में नवीनीकरण का बोध होता है। कॉलम 2, 2013-14 के संशोधित बजट अनुमान की तुलना में 2014-15 के जुलाई बजट अनुमान में की गई वृद्धि से व्यय में बढ़ोतरी होने की संभावना है, जिसका असर अर्थव्यस्था पर पड़ेगा। कॉलम 3 में उसी तरह के वादे किए गए हैं, जो अंतरिम बजट में किए गए थे। कॉलम 4 में वादों की संभाव्यता दर्शायी गई है, क्योंकि इसमें पिछला वास्तविक कार्य-निष्पादन दिया गया है-अर्थात् 2012-13 के वास्तविक की तुलना में 2013-14 के सशोंधित अनुमान में परिवर्तन दर्शाया गया है।

कॉलम 1 वर्तमान बजट में सुदृढ़ प्रयास दर्शाता है, जिसमें अंतरिम बजट की तुलना में विभिन्न प्रकार के उत्पादक व्ययों में बढ़ोतरी प्रस्तावित की गई है। योजना राजस्व व्यय और योजना-गैर योजना पूंजी व्यय से बाहर पूंजी निर्माण में, और पूंजी परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए अनुदानों में अतीत में की गई वृद्धियों (कॉलम 4) की तुलना में कहीं अधिक भारी बढ़ोतरी (कॉलम 2) प्रस्तावित की गई है।

सार्वजनिक पूंजी के मामूली विनिवेश के अलावा निजी निवेश में गिरावट रोकने और उसकी उत्पादकता बढ़ाने के अनेक उपाय किए गए हैं। विनिर्माण क्षेत्र में मंदी का रुख बदलने के लिए यह अनिवार्य है। इन उपायों में निवेश के लिए अस्थायी कर क्रेडिट शामिल है, जिसमें निवेश भत्ते के लिए पात्रता 25 करोड़ रुपये के निवेश तक तय की गई है, जिसकी पिछली सीमा 100 करोड़ रुपये थी। ऐसा करने से अनेक सूक्ष्म और लघु विनिर्माण उद्यम यह सुविधा पाने के हकदार हो जाएंगे। सरकारी-निजी-भागीदारी यानी पीपीपी मॉडल पर बल दिया गया है, और इस दिशा में तेज़ी से निर्णय करने का वादा किया गया है, यहां तक कि राज्यों के साथ अनुवर्ती प्रयासों के

लेखिका आईजीआईडीआर, मुम्बई में प्रोफेसर हैं और मैक्रोइकनॉमिक्स तथा अंतर्राष्ट्रीय वित्त पर एक पत्रिका की सहसंपादक और भारतीय अर्थव्यस्था पर ओयूपी हेंडबुक की संपादक हैं। उन्हें कई फैलोशिप और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है। वह सांस्थानिक तथा खुली अर्थव्यवस्था, मैक्रोइकनॉमिक्स, अंतर्राष्ट्रीय वित्त तथा शासन संबंधी विषयों पर लगातार लिखती रहती हैं। वह एशियाड विकास बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक, विश्व बैंक, ग्लोबल डेवलपमेंट नेटवर्क एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र के लिए आर्थिक तथा सामाजिक आयोग जैसे संस्थानों के साथ शोध परियोजनाओं पर काम कर चुकी हैं। वे येल विश्वविद्यालय, अमेरिका के इकनॉमिक ग्रोथ सेंटर में विजिटिंग फैलो भी रही हैं। ईमेलः ashima@igidr.ac.in

तालिका 1: बजट के महत्वपूर्ण आंकड़े (प्रतिशत बढ़ोतरी)

	नवीनीकरण	संभावित प्रभाव: ब.अ.	संभावित प्रभाव: अं.ब.अ.	संभाव्यता
	अं.ब.अ. की अपेक्षा ब.अ.	गत की अपेक्षा ब.अ.		वृद्धि*
	1	2	3	4
राजस्व घाटा अनुपात	-3.33	-12.12	-9.09	-8.33
राजकोषीय घाटा अनुपात	0.00	-10.87	-10.87	-4.17
प्राथमिक घाटा अनुपात	0.00	-38.46	-38.46	-27.78
गैर-योजना पूंजी व्यय	5.17	20.72	14.79	5.79
कुल योजना पूंजी व्यय	4.00	20.90	16.80	14.97
योजना राजस्व व्यय	2.54	21.96	18.94	12.95
योजना पूंजी व्यय	7.47	17.18	9.04	22.82
कुल राजस्व व्यय	15.80	12.86	-2.54	12.77
पूंजी परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए अनुदान	14.68	21.61	6.04	19.46
गैर-योजना राजस्व व्यय	0.62	8.46	7.79	12.40
जिसमें से सब्सिडी	1.94	2.01	0.08	-0.61
सामाजिक सेवाएं	2.03	.0.40	-2.40	20.17
कुल पूंजी व्यय	6.39	18.80	11.66	14.41
राजस्व प्राप्तियां	1.94	15.59	13.40	17.06
पूंजी प्राप्तियां	1.52	7.83	6.22	5.66

** 2012-13 के वास्तविक की तुलना में संशोधित अनुमान में वृद्धि*

स्रोत: *indiabudget.nic.in*

जरिये स्थानीय स्तर पर भी ऐसी भागीदारी को अपनाने की अनुशंसा की गई है। एक आईटी सक्षम ई-बिज़ एकल खिड़की उद्योग के लिए केंद्र सरकार की सेवाओं में समन्वय स्थापित करेगी, जिसके अंतर्गत अनेक औद्योगिक कॉरीडोर और क्लस्टर (यानी मार्ग और समूह) विकसित किए जाएंगे।

रक्षा उत्पादन और बीमा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को बढ़ावा देने से भी निवेश, घरेलू रोजगार, प्रौद्योगिकी और वित्त व्यवस्था में प्रत्यक्ष वृद्धि होगी। एफडीआई की सीमा 26 प्रतिशत से बढ़ाकर 49 प्रतिशत कर दी गई है ताकि प्रबंधन और नियंत्रण भारत के पास रहे। अन्य रियायतें निर्मित क्षेत्र और पूंजी शर्तों के आधार पर, विशेष कर कम लागत के आवास और स्मार्ट शहरों के लिए, दी गई हैं।

निवेश के लिए अतिरिक्त धन घरेलू बचत को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए उपायों से आएगा। आय कर में रियायत के लिए लोक भविष्य निधि में निवेश की सीमा बढ़ाना, अपने ग्राहक को जानिए संबंधी मानदंडों को सरल बनाना और एकल प्रचालित डीमैट खाते, जैसी व्यवस्थाओं से वित्तीय बचत को प्रोत्साहन मिलेगा। रीयल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स यानी भूमि-भवन निवेश न्यास जैसी लिखतों में निवेश के अवसरों से परिवारों को इक्विटी बाज़ार में वापस लाने में मदद मिलेगी, क्योंकि वे कर से मुक्त होंगे, और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए घरेलू खुदरा निवेश का मार्ग प्रशस्त करेंगे। बैंकों को दीर्घावधि की ढांचागत परियोजनाओं के लिए वित्त व्यवस्था करना आसान होगा क्योंकि सांविधिक चलनिधि अनुपात और आरक्षित नक़दी निधि अनुपात की न्यूनतम अपेक्षाएं कम किए जाने से बैंकों को दीर्घावधि के लिए निधियां जुटाने की अनुमति मिल जाएगी।

वेतनभोगी वर्ग, जो सबसे अधिक कर का बोझ सहन करता है, को कुछ रियायतें दी गई हैं। कुछ चुने हुए उद्योगों को उत्पाद शुल्क संबंधी रियायतें दी गई हैं। इन उपायों के जरिये मुद्रास्फीति से कर की सीमाओं को होने वाले क्षरण की क्षतिपूर्ति के अलावा, उद्योग के लिए मांग में बढ़ोतरी होगी। निवेश और बचत कर क्रेडिट की पुन: भरपायी अधिक कर वसूली द्वारा हो सकेगी क्योंकि वे अधिक वृद्धि को प्रेरित करेंगे।

खाद्य वस्तुओं की महंगाई कम करने के लिए ठोस कार्रवाई अनाज की अनिवार्य बिक्री के वादे तक सीमित है। परंतु, बजट में इस बात का महत्व अवश्य स्वीकार किया गया है कि एपीएमसी अधिनियम में संशोधन के लिए राज्यों के साथ मिल कर काम करने की आवश्यकता है, और कृषि विपणन में सुधार के अन्य उपाय करने का भी वादा किया गया है। इनमें गोदाम व्यवस्था में सुधार और भारतीय खाद्य निगम का नवीनीकरण शामिल है। कृषि उपायों में बुनियादी ढांचा सुधार पर सही ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसके अंतर्गत सिंचाई, जल संभर विकास, विद्युत में फीडर पृथक्करण, सड़कें और आवास शामिल है। मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) के लिए आवंटन बनाए रखे जाएंगे लेकिन इस कार्यक्रम को परिसंपत्तियों के निर्माण के साथ जोड़ा जाएगा। खेती के लिए ऋण का प्रवाह बनाए रखा जाएगा। ग्रामीण उद्यमों के लिए एक कोष की स्थापना से खाद्य भंडारण और प्रसंस्करण की जरूरतें पूरी की जा सकती हैं।

खाद्य वस्तुओं की महंगाई कम करने के लिए ठोस कार्रवाई अनाज की अनिवार्य बिक्री के वादे तक सीमित है। परंतु, बजट में इस बात का महत्व अवश्य स्वीकार किया गया है कि एपीएमसी अधिनियम में संशोधन के लिए राज्यों के साथ मिल कर काम करने की आवश्यकता है, और कृषि विपणन में सुधार के अन्य उपाय करने का भी वादा किया गया है। इनमें गोदाम व्यवस्था में सुधार और भारतीय खाद्य निगम का नवीनीकरण शामिल है।

पिछले वर्ष किए गए उपायों से चालू खाता घाटा कम करने और रुपये को मजबूत बनाने में

मदद मिली थी, परंतु, भुगतान संतुलन में स्थायित्व के लिए घरेलू वित्तीय बचतों में वृद्धि और घरेलू बाजारों को सघन बनाना महत्वपूर्ण दीर्घावधि उपाय हैं। घरेलू वित्तीय बाज़ारों को सघन बनाते समय यह अच्छी बात है कि वित्त मंत्री ने विदेशी ऋण के प्रवाह को और अधिक उदारीकृत नहीं किया। ऐसा तभी किया जाना चाहिए जब घरेलू आपूर्ति संबंधी बाधाएं दूर कर दी जाएं। घरेलू व्यापार वातावरण में सुधार आने से निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा। एक निर्यात संवर्द्धन मिशन कायम किया जाएगा और विशेष आर्थिक क्षेत्रों को बढ़ावा दिया जाएगा।

रुकावटें दूर करना

पिछले बजटों में राजकोषीय व्यय के संघटन से विभिन्न खाद्य वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई, जबकि खेती में बाधाओं के कारण मांग के समान आपूर्ति में रुकावटें आईं। खपत के लिए व्यापक सरकारी अंतरण से महंगाई में बढ़ोतरी हुई। इससे यह सबक मिला कि अर्थव्यवस्था की रुकावटें दूर करने पर किए जाने वाले सरकारी खर्च और आपूर्ति से प्रतिबंध हटाना कारग़र उपाय हो सकता है। इस प्रकार खर्च कम करने मात्र से राजकोषीय समेकन अधिक महत्वपूर्ण समझा गया है। दूसरे, अंतरणों के साथ क्षमता में विस्तार भी होना चाहिए।

दो घटक ऐसे हैं जो सार्वजनिक निवेश को सीमित करते हैं। पहला, कारग़र ढंग से खर्च करने के लिए प्रशासन को तैयार करने में समय लगता है, विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि खर्च की दिशा में परिवर्तन किया जाना हो। दूसरा, धन की बाधाएं सार्वजनिक निवेश में वृद्धि के मार्ग में रुकावटें डालती हैं, जब तक कि अन्य सरकारी खर्चों में कमी न की जाये। सरकारी खर्च के संघटन में बदलाव लाने के बजट के प्रयासों का प्रभाव सीमित रहेगा क्योंकि राजस्व व्यय में मितव्ययता के लिए अधिक कुछ नहीं किया गया है, कुछ कर रियायतें हैं और राजकोषीय घाटे का लक्ष्य पूरा किया गया है। (तालिका 1)

सब्सिडियों को युक्तिसंगत बनाने के बारे में एक व्यय प्रबंधन आयोग की रिपोर्ट के लंबित रहने के बावजूद उर्वरक सब्सिडी में वृद्धि के कारण कुल सब्सिडियों में वास्तव में वृद्धि हो गई है (तालिका 1)। कुल सब्सिडी जीडीपी के 2 प्रतिशत तक सीमित की गई है, परंतु अभी भी लगता है कि उनके लिए धन की पूरी व्यवस्था नहीं हो पाई है। बजट अनुमान के अनुसार राजकोषीय घाटे के लक्ष्य हासिल करने के लिए अंतरिम बजट में कुछ व्यय सीमित किए गए थे, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों को अधिक लाभांश देने के लिए मज़बूर किया गया था और पूंजी खर्चों में तेजी से कटौती की गई थी। अल्पावधि में कम महत्वाकांक्षी लक्ष्यों से बाज़ार भी खुश हो सकते हैं, जो ऐसे युक्ति प्रबंधन की आवश्यकता को दूर करते हैं। परंतु, दीर्घावधि के राजकोषीय समेकन के प्रति वचनबद्धता, अत्यन्त सकारात्मक है, विशेषकर भारतीय संदर्भ में जहां हम बेतहाशा सरकारी खर्च से दुष्प्रेरित बाहरी दुर्बलता से उभर रहे हैं। परंतु अल्पावधि के अनुपालन से संघटन में सुधार का अवसर गंवाना पड़ सकता है। ऐसे में राजकोषीय समेकन की गुणवत्ता और प्रतिबद्धता अधिक महत्वपूर्ण है। आपूर्ति विषयक घटक अधिकतर मुद्रास्फीति को बढ़ाते हैं, लेकिन हमारे यहां विश्व में सबसे अधिक युवा बेरोजगार हैं, जिनके लिए हमें जोर-शोर से कुछ करने की आवश्यकता है, जैसा कि अनेक पश्चिमी देश कर रहे हैं, ताकि विकास की प्रक्रिया तेजी से शुरू की जा सके।

पूर्ववर्ती समावेशी विकास के मंत्र की तुलना में अब नया मंत्र अधिक उत्पादकता और अधिक रोजगार के माध्यम से 'सक्रिय समावेशन' का होना चाहिए, जिसमें प्रत्यक्ष अंतरण (या कारग़र कार्यक्रम) केवल सतत निर्धनों के लिए सशर्त रूप में पोषण और शिक्षा के लिए होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, बेहतर स्वच्छता और जलापूर्ति, जो अभी तक गरीबी को रोकने वाले और पोषण समर्थक कार्यक्रम होते थे, उन्हें अब उत्पादकता में वृद्धि वाला होना चाहिए।

वास्तव में, विकास की स्थिति जोखिमपूर्ण है। किंतु, घरेलू स्तर पर आशावाद और अंतर्राष्ट्रीय वृद्धि बहाल होने के कारण अब विकास का आधार बेहतर हो गया है। तेल के दाम नरम होने और रुपया मजबूत होने तथा डीजल के दामों में स्वत: वृद्धि व्यवस्था से सब्सिडी का बोझ निश्चित रूप से कम होगा। शेयर बाजार में तेजी को देखते हुए विनिवेश से भी अधिक संसाधन जुटाए जा सकते हैं। राजस्व प्राप्तियों से संबंधित अंतरिम बजट के आशावादी अनुमान बरकरार रखे गए हैं, परंतु वे संभाव्य हैं क्योंकि वे 2013-14 के संशोधित अनुमान 17.1 की तुलना में थोड़ा कम करके 15.6 पर रखे गए हैं, जो 2012-13 में वास्तविक मूल्यों में बढ़ोतरी के कारण संशोधित अनुमान (तालिका 1) में बढ़ाकर रखे गए थे। इस तरह के अनुमान अधिक अनुकूल लगते हैं, परन्तु इसमें पुरानी अनुत्पादक नीतियों, जैसे लक्ष्य पूरे करने के लिए निवेश में कटौती, के कारण बढ़ोतरी रुक सकती है और मुद्रास्फीति बढ़ सकती है।

दूसरा मुद्दा क्षमता में अंतरणों को सीमित करने से संबद्ध है। इसे हासिल करने के लिए अंतरणों का पुन:-निर्धारण करना होगा ताकि वे क्षमता निर्माण में सहायक हो सकें, और यहां तक कि वे अवसर की समानता बढ़ाने वाले हों। एक स्थिर सरकार को अपने कार्यकाल के प्रारंभ में इस बात की अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है कि वह लोक लुभावन की बजाय उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में अधिक तेजी से काम करे। यथास्थिति से अलग हटने का जोखिम लेने की अनिच्छा चुनाव के जनादेश से भटकने का खतरा पैदा कर सकती है।

सक्रिय समावेशन

मतदाता बेहतर सार्वजनिक सेवाएं चाहते हैं जैसे ऐसा बुनियादी ढांचा, जो पानी, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएं प्रदान कर सके और उनसे कार्य को सुचारू बनाने में मदद की जा सके। राजनीतिक प्रणालियों के विद्वानों के अनुसार ऐसी सेवाओं की व्यापक उपलब्धता सुनिश्चित करके ही लोकतंत्र खुशहाली पैदा कर सकता है। भारतीय विषमता और वोट बैंक की राजनीति ने एक दुष्चक्र पैदा किया है जो अब अपना मार्ग पूरा कर चुका है।

सोशल मीडिया द्वारा पैदा की गई जागरूकता से 'वास्तविक' मध्यम वर्ग का उदय हुआ है। ग्रामीण उप-नगरीय प्रवास से एक नए मध्य वर्ग का सृजन हुआ है, और देश के जनसांख्यिकीय स्वरूप में युवाओं का अनुपात बढ़ा है। इन सभी वर्गों को बेहतर कार्य वातावरण से खैरात की तुलना में बहुत अधिक लाभ हुआ है। यहां तक कि निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए भी उच्च श्रेणी के रोजगार उपलब्ध हुए हैं।

पूर्ववर्ती समावेशी विकास के मंत्र की तुलना में अब नया मंत्र अधिक उत्पादकता

तालिका 2: केन्द्रीय योजना और क्षेत्रगत आवंटन (प्रतिशत वृद्धि)

	नवीनीकरण	संभावित प्रभाव: ब.अ.	संभावित प्रभाव: अं.ब.अ.	संभाव्यता
	अं.ब.अ. की अपेक्षा ब.अ.	गत की अपेक्षा ब.अ.		वृद्धि*
	1	2	3	4
केन्द्रीय योजना परिव्यय	4.22	-21.10	-24.29	23.20
बाहरी बजट	-0.09	-3.76	-3.67	32.98
बजट सहायता	9.15	-33.63	-39.20	16.98
क्षेत्र				
कृषि	15.46	-34.32	-43.12	3.09
ग्रामीण विकास	6.20	-93.91	-94.27	13.94
सिंचाई	24.45	287.28	211.21	5.69
ऊर्जा	1.74	.6.99	-8.58	35.29
उद्योग एवं खनिज	4.16	11.18	6.74	8.93
परिवहन	4.66	6.58	1.84	20.45
संचार	-0.08	39.39	39.50	48.40
विज्ञान प्रौद्योगिकी और पर्यावरण	7.88	38.43	28.32	12.67
मंत्रालय				
सामाजिक सेवा	5.73	-51.69	-54.31	20.49
स्वास्थ्य	9.06	-67.58	-70.27	11.71
पेयजल और स्वच्छता	0.00	-98.08	-98.08	.7.43
स्वास्थ्य व परिवार कल्याण	9.06	-67.58	-70.27	11.71
आवास और शहरी गरीबी उन्मूलन	0.00	77.63	77.63	33.29
मानव संसाधन विकास	5.33	-71.43	-72.88	11.40
• स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग	7.02	-93.70	-94.11	10.13
• उच्चतर शिक्षा विभाग	5.00	-0.02	-4.78	15.67
श्रम एवं रोजगार	22.87	-53.22	-61.93	-0.23
जल संसाधन	85.43	363.57	150.00	36.45
महिला एवं बाल विकास	11.25	-94.57	-95.12	7.36

** 2012-13 के वास्तविक की तुलना में संशोधित अनुमान में वृद्धि* ***स्रोत:*** *indiabudget.nic.in*

और अधिक रोजगार के माध्यम से 'सक्रिय समावेशन' का होना चाहिए, जिसमें प्रत्यक्ष अंतरण (या कारगर कार्यक्रम) केवल सतत निर्धनों के लिए सशर्त रूप में पोषण और शिक्षा के लिए होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, बेहतर स्वच्छता और जलापूर्ति, जो अभी तक गरीबी को रोकने वाले और पोषण समर्थक कार्यक्रम होते थे, उन्हें अब उत्पादकता में वृद्धि वाले होना चाहिए।

बुनियादी ढांचा, आवास, जल आदि महत्वपूर्ण घटकों पर बल दिया गया है, जिनका अभाव दूर करने से औसत नागरिक का जीवन अधिक आसान बनाया जा सकता है। तालिका 2 के कॉलम 1 और 2 में आवास और सिंचाई के लिए खर्च में व्यापक बढ़ोतरी दर्शाई गई है।

क्षेत्र

2012 में योजना में लिखे लेख में मैंने विकास को बढ़ावा देते हुए खर्च में किफायत बरतने का एक समाधान सुझाया था, जिसमें उन्होंने सरकारी कार्यक्रमों के नवीनीकरण की बात कही ताकि उनमें मानव क्षमता सहित क्षमता की व्यापक परिभाषा तय की जा सके। दूसरे, व्यय को ध्यानपूर्वक लक्षित करने की आवश्यकता बताई गई ताकि वृद्धि और रोजगार के मार्ग की रुकावटें दूर की जा सकें और खर्च किए जाने वाले प्रत्येक रुपये का अधिकतम प्रभाव पैदा किया जा सके। इसके लिए क्षेत्रवार व्यय का पुन: आवंटन आवश्यक है।

ऐसे संकेत मिलते हैं कि ढांचागत क्षेत्रों में आवंटन बढ़ाने और सामाजिक क्षेत्रों एवं मंत्रालयों को आवंटन कम करने का रुख रहा है (तालिका 2), परन्तु अंतरिम बजट में ऐसा पहले से ही किया गया था और इन बदलावों को वर्तमान बजट में जारी रखा गया। संभवत: पिछली सरकार को यह अहसास हो गया था कि उसके आवंटन अर्थव्यवस्था में रुकावट बन रहे हैं या उन्हें कम करना आसान है या फिर संबद्ध मंत्रालयों में खर्च की क्षमता का अभाव है। परंतु कॉलम 4 में दर्शाया गया है कि मंत्रालयों ने अतीत में भारी धनराशि खर्च की है।

नौकरशाहीपूर्ण विरासत में शीघ्र व्यापक बदलाव लाना कठिन कार्य है। परंतु वर्तमान सरकार वास्तव में पूंजी निर्माण के लिए अनुदानों में उच्चतर वृद्धि के जरिए सामाजिक क्षेत्र के लिए आवंटन बढ़ा रही है, जो राजस्व व्यय (तालिका-1), के अंतर्गत आता है, और श्रमबहुल क्षेत्रों जैसे टेक्सटाइल, पर्यटन और निर्माण के लिए आवंटन बढ़ा रही है।

कार्यान्वयन भी महत्वपूर्ण है और उम्मीद की जाती है कि यही वर्तमान सरकार की विशिष्टता होगी लेकिन यह पहले से मान कर नहीं चला जा सकता। योजनाबद्ध केंद्रीय योजना आवंटनों के उपयोग में अंतर के गुणांक पर आधारित एक सूचकांक, जिसका इस्तेमाल सुधार परवर्ती सरकारों का रैंक निर्धारित करने के लिए किया जाता है, से पता चलता है कि कांग्रेस का निष्पादन उत्कृष्ट (-0.6) रहा है, इसके बाद यूपीए-1 (-3) का स्थान है।

एनडीए सरकार केवल तीसरे स्थान (-7.0) पर आती है, हालांकि यूपीए-2 का प्रदर्शन (-9.97) बहुत खराब रहा। सरकार को प्रयास करने होंगे कि वह अतीत से सबक ले और अपने वादों को अमली जामा पहनाए।

प्रणालीगत प्रोत्साहनों में सुधार

तेजी से निर्णय करने के लिए ऐसी प्रणालियों की आवश्यकता है जो ऐसी प्रक्रियाओं को सक्षम बना सकें। अप्रचलित प्रशासनिक ढांचा देरी का कारण बनता है। 2009 में यह बात उस समय स्पष्ट हो गई थी जब ढांचागत परियोजनाओं में देरी के कारण बैंकों के अनुत्पादक ऋणों की हिस्सेदारी बढ़ गई थी। ढांचागत परियोजनाओं में भारी भ्रष्टाचार घोटाले उद्घाटित हुए जिनकी शुरुआत सीएजी रिपोर्ट से हुई और जो 2010 में राष्ट्रमंडल खेलों में स्पष्ट रूप से उजागर हुए। इस तरह भ्रष्टाचार और सीबीआई जांच का भय देरी का कारण तो बनता है लेकिन वे सरकारी अकर्मण्यता का प्रमुख कारण नहीं हो सकते। लेकिन बजट में इस मुद्दे का कोई समाधान नहीं किया गया है।

वर्तमान सरकार में मंत्रियों की संख्या पिछली सरकार की तुलना में अवश्य कम की गई है लेकिन आवंटन 49 मंत्रालयों के लिए किए गए हैं जो यूपीए सरकार में 50 मंत्रालयों के लिए किए गए थे। लागत में बचत करने के लिए कार्यक्रमों और मंत्रालयों के बीच समाभिरूपता का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया है। बल्कि शुरुआती अल्प पूंजी के साथ कई नए कार्यक्रम घोषित किए गए हैं। परंतु, वित्त मंत्री ने प्रारंभिक आवंटनों को नियंत्रित करने के लिए प्रभावकारी ढंग से खर्च न करने की सरकार की अक्षमता का उपयोग किया है। यदि सक्षम तरीके से उपयोग करने वालों को अधिक आवंटित किया गया है तो यह प्रोत्साहनों में सुधार लाता है लेकिन कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए समर्थक संस्थागत परिवर्तनों की आवश्यकता है। शासन में सुधार के लिए नई प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करना होगा।

पथभ्रष्ट प्रोत्साहनों से भारतीय लोक सेवाओं की गुणवत्ता को धक्का पहुंचता है। उदाहरण के लिए, सब्सिडियों की राशि से कहीं अधिक राशि उनके वितरण की पद्धति पर खर्च होती है जिससे समस्याएं पैदा होती हैं। अत: सब्सिडियों का मूल्य चुकाना पड़ता है और इससे आवंटन का क्षय होता है। अनाज पर केंद्रित न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और सब्सिडियां मांग के अनुरूप उत्पादन में रुकावट डालती हैं, क्योंकि मांग सब्जियों और प्रोटीन की तरफ बदल रही है। इसी तरह ईंधन तेल सब्सिडियां ऊर्जा की बचत के विकल्प अपनाने में रुकावट बनती हैं। ईंधन में एक से अधिक पदार्थों के लिए सब्सिडी, जैसे डीज़ल और केरोसिन दोनों में सब्सिडी से प्रदूषण और भ्रष्टाचार फैलने की आशंका ज्यादा होती है, जिसके गंभीर दीर्घावधि सामाजिक परिणाम सामने आते हैं। इसका एक जीता जागता उदाहरण पंजाब में कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी है। सब्सिडियों को युक्तिसंगत बनाने के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरणों का अधिकाधिक इस्तेमाल करने की आवश्यकता है।

उच्च कारोबार लागत और अनुत्पादक विवाचन की आशंका में कमी लाने के उपाय, विशेषकर कर ढांचे और प्रबंधन के क्षेत्र में किए गए हैं। शिकायतों को दूर करने में पारदर्शिता, सरलीकरण, सुनवाई और समाधान के प्रति वचनबद्धता व्यक्त की गई है। कर संबंधी मुकदमेबाजी, अनिश्चितता, विवेकाधिकार में कमी लाने और तत्संबंधी पहुंच आसान बनाने के लिए कानूनी और प्रशासनिक बदलाव किए गए हैं। *निवासी* करदाता अग्रिम कर व्यवस्था का भी लाभ उठा सकते हैं। उद्योग के साथ नियमित रूप से संवाद के लिए एक उच्च स्तरीय समिति गठित की जाएगी और उठाए गए मुद्दों का समाधान किया जाएगा। म्युचुअल फंड से होने वाली आय पूंजी लाभ समझी जाएगी और इस पर आय कर नहीं लगेगा। निधि स्थानांतरण और विभिन्न निधियों के बीच ऋणपत्र क्रय-विक्रय प्रोत्साहन हटाए गए हैं।

योजनाबद्ध केंद्रीय योजना आवंटनों के उपयोग में अंतर के गुणांक पर आधारित एक सूचकांक, जिसका इस्तेमाल सुधार परवर्ती सरकारों का रैंक निर्धारित करने के लिए किया जाता है, से पता चलता है कि कांग्रेस का निष्पादन उत्कृष्ट (-0.6) रहा है, इसके बाद यूपीए-1 (-3) का स्थान है। एनडीए सरकार केवल तीसरे स्थान (-7.0) पर आती है, हालांकि यूपीए-2 का प्रदर्शन (-9.97) बहुत खराब रहा।

कर राजस्व में प्रमुख वृद्धि सेवाओं के लिए कर का आधार व्यापक बनाने के जरिए की जाएगी, जो जीएसटी में संभावित संशोधन के अनुरूप होगी। दरें कम रखने और आधार व्यापक बनाने की नीति भारत की विशाल आबादी के अनुरूप होगी और वह निष्पक्षता का मानदंड पूरा करेगी, हालांकि भारतीय अरबपतियों का बढ़ता वर्ग देश के विकास में अधिक योगदान करने में सक्षम है। संपत्ति पर अस्थाई प्रभार जारी रखने के लिए उच्चतर सीमा निर्धारित की जा सकती है और इसे स्थायी किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी, टीआईएन डाटाबेस में जानकारी, और जीएसटी के माध्यम से एक निरंतर उपभोग कर लागू करना, ये सभी उपाय मिल कर भारत के लघु कर आधार को व्यापक बना सकते हैं। भारत में मात्र तीन प्रतिशत लोग कर अदा करते है जबकि चीन में 20 प्रतिशत लोग करदाता है। अत: विस्तार की संभावनाएं अत्यंत व्यापक हैं। बजट में इस दिशा में मात्र एक छोटा कदम उठाया गया है।

निष्कर्ष

समग्र युक्तियां हालांकि कार्यनीति के अनुरूप हैं, लेकिन समानुरूपता कम लगती है क्योंकि विभिन्न घटक एकीकृत नहीं हैं जो यह बता सकें कि वे किस तरह एकजुट और सामंजस्यपूर्ण कार्य करेंगे। यह दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि विभिन्न प्रकार के निवेश जुटाने के उपाय, और उनकी वित्त व्यवस्था में सुधार के उपाय एक दूसरे को मजबूत करेंगे ताकि वृद्धि दर में बढ़ोतरी हो और रोजगार के अवसर पैदा हो सकें। बजट में रोजगार बहुल क्षेत्रों, बुनियादी ढांचा, आवास, कृषि विपणन और कृषि संबंधी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रणालियों, प्रोत्साहनों, सरकारी व्यय और सार्वजनिक सेवाओं के संघटन को बेहतर बनाने की दिशा में लघु शुरुआत भी की गई है। ये सभी उपाय विकास में योगदान के अलावा क्षमता निर्माण के जरिए समानता की स्थिति में सुधार लाने में मदद करेंगे ताकि अर्थव्यवस्था के मार्ग में रुकावटें न आएं। खपत की ओर उन्मुख सरकारी खर्च से अतीत में मुद्रास्फीति बढ़ी है।

परंतु बजट भाषण साफतौर पर यह संदेश नहीं देता, बल्कि पुराने के साथ निरंतरता बनाए रखने को वरीयता देते हुए सभी के लिए कुछ न कुछ करने का प्रयास करता है। स्पष्ट संदेश देने में विफलता की परिणति समझने में विफलता के रूप में हो सकती है। यह खतरनाक है क्योंकि राजनीति आमतौर पर परिवर्तन के वास्तविक अवसर को व्यर्थ कर देती है। सजग प्रक्रिया बेहतर ढंग से कार्यान्वित की जाती है। ❑

VAID'S
Since 1985
The IAS Lifeline

THEY CLAIM RESULTS (MANY IN 100s)
ON THE BASIS OF INERVIEW/PRELIMS
(EVEN FAKE), BUT SEEK ADMISSIONS TO
MAINS-CUM-PRELIMS BATCHES.
Yet, They Teach Ethics.

We at VAID'S Have Never Done It

Our Toppers of IAS '13

Abhishek
AIR : 75

Hemant
AIR :159

Abhishek
AIR : 229

Danish
AIR : 335

Ashish
AIR : 697

Ehtesham
AIR : 710

Saurabh
AIR : 895

Arpit
AIR : 922

Sushant
AIR : 1008

A.N. VAID'S ICS, DELHI
25/10, Basement, Old Rajender Nagar
For Essay, CSAT, GS & Anthro
GS Batches : Starting Aug 30
(for Main '14, 3 Months)
Anthro Batches : Starting Aug 30
(Only 40 Seats, Join Early)
POSTAL COURSE FOR ANTHRO AVAILABLE
TEST SERIES STARTING SEPT 6

Wise People Always Make Right Choice

LUCKNOW CHAPTER:
VAIDS ICS, LUCKNOW
B-36, Sector C, Aliganj
Same Quality as Delhi
Cheaper Cost of Living
{For IAS, PCS & PCS(J)}
For G. S., C-SAT, Socio,
History, Geography,
Law & Pub. Admn.
LAW: PCS(J)/APO & UGC-NET
Fresh Batches Starting Shortly

For Details Contact Personally
Ph: 0-9311337737, 0-9999946748 | Ph: 0522-2326249, 0-9415011893

YH - 121/2014

विशिष्ट सक्रिय राजकोषीय नीति की अनिवार्यता

कमल नयन काबरा

आम तौर पर हर बजट से दो प्रमुख उम्मीदें रहती हैं। एक, करों में छूट की और दूसरी सामाजिक क्षेत्रकों पर खर्च बढ़ाने की। दोनों में थोड़ा विरोधाभास है। इस बार के बजट में सरकार ने इन दोनों दिशाओं में थोड़ी उम्मीद जगायी है लेकिन केवल इतने से काम चलने वाला नहीं है। समाज के आखिरी पायदान पर टिके तबकों के कल्याण के लिए सामाजिक क्षेत्रकों पर राजकोषीय खर्च हर हाल में बढ़ाना ही होगा। अधिक कराधान एक तरह से सरकार पर या सार्वजनिक क्षेत्र पर सामाजिक क्षेत्रक की बेहतर सुध लेने की नैतिक जिम्मेदारी भी डालता है क्योंकि कर नीति का लक्ष्य केवल खर्च के पैसे जुटाना भर नहीं है

अरसे बाद स्पष्ट बहुमत प्राप्त राज्य व्यवस्था के प्रति जनमानस में उत्साह और आशा का संचार स्वाभाविक है। पिछले दशकों से आम भारतीय की विकास प्रक्रिया और उसके सुफलों में भागीदारी कमजोर बनी हुई है। हमारे सामाजिक आर्थिक जीवन में विसंगतियां और असंतुलन बढ़े हैं। सच है कि तात्कालिक संदर्भ से हटकर देखें तो हमारा राष्ट्रीय उत्पादन अपने आप में और तुलनात्मक स्थिति में विशेष मंद नहीं माना जा सकता है। किंतु इसकी क्षेत्रक संरचना, प्रादेशिक वितरण, विदेशी संबंध, श्रम के उत्पादक और पर्याप्त आजीविका प्रदायक उपयोग, बेमानी पर्यावरण अनुकूलता, तकनीकों की उपयुक्तता, आम उपभोग की सामान्य चीजों, वस्त्रों का विलासिता तथा धनी तबकों की पंसद की चीजों के मुकाबले में अनुपात और कीमत-स्तर सारे उत्पादन में गरीब लोगों की जरूरतों के अनुकूल साजो सामान का अनुपात आदि कुछ ऐसे मसले हैं, जो आज भी अधिकांश भारतीयों को संतोष की सांस नहीं लेने देते हैं। सच है कि अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा संपन्न लोगों के स्तर पर राष्ट्रीय आय की कुल औसत तथा सालाना परिवर्तन दर के आधार पर सत्तासीन लोग बहुत आसानी से अपनी पीठ ठोक लेते हैं। यह भी सच है कि यदि देश न केवल औसत अपितु सबसे नीचे पायदान पर टिके अधिकांश लोगों को भी मानवीय जरूरतों के लिए पर्याप्त और गरिमा तथा जीवन जीने के अवसर मुहैया कराता है तो हमें बचत, निवेश, उत्पादन, सार्वजनिक सेवाओं, तकनीकों आदि को आगे बढ़ाना होगा। जाहिर है बिना तेज संतुलित, व्यापक भागीदारी-मय राष्ट्रीय उत्पादन वृद्धि के हम अपने एजेंडा को पूरा नहीं कर सकते। बस सोच समझ कर इस बिंदु पर आकर हमारा लक्ष्यगत नीतिगत तथा कर्यान्वनकारी नजरिया एक भ्रमजाल में उलझ जाता है। स्पष्ट है कि हर किसी प्रकार का, उत्पादन का ढांचा, चरित्र अथवा उसमें विभिन्न वस्तुओं का अनुपात, तकनीक, स्थानिक चरित्र, रोजगार, ऊर्जा, उपयोग चरित्र, उनके दामों का आम आदमी के बजट में तुलनात्मक स्थान आदि इन वस्तुओं और सेवाओं के उपयोग की क्षमता तय करते हैं। स्पष्ट है एक ओर मांग अथवा आवश्यकता पक्ष तथा दूसरी ओर आपूर्ति पक्ष के गुणात्मक और उनके मात्रात्मक पक्षों में तालमेल जरूरी है। हमारी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक नीतियों का स्पष्ट रूप से परिभाषित लक्ष्य ऐसा बहुपक्षीय संतुलन प्राप्त करना है।

पिछले कुछ दशकों में इस तरह के संतुलित-व्यवस्थित विकास की जगह एकांगी आर्थिक प्रसार पर जोर दिया गया है। हमारे नीतिगत लक्ष्यों की ऐसी एकांगी व्यवस्था के समर्थन में बहुत मजबूत आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक ताकतें खड़ी हैं। एक अजीब विरोधाभास है। इस सत्य को, इस सिद्धांत को न तो नकारा या ठुकराया जाता है और न ही इसे मंजूर करके इसे लागू किया जाता है।

पिछली नीतियों और उनके नतीजों की आलोचना इन चुनावों के अभियान के दौरान काफी जमकर की गई। लोगों को भरोसा हुआ कि इस गलत सोच और लचर व्यवहार के दिन लदेंगे ताकि देश के सबसे पिछड़े लोगों के दिन फिरें और अच्छे दिनों का आगाज हो।

कम से कम जब दस जुलाई को जन-जन ने सन् 2014-15 के बजट प्रस्तावों को सुना

लेखक वरिष्ठ अर्थशास्त्री और इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सांइसेज, नयी दिल्ली में माल्कम आदिशेषैय्या चेयर में प्रोफेसर हैं। प्रकाशित पुस्तकें : भारतीय सार्वजनिक वितरण व्यवस्था, इकोनॉमिक क्राइसिस इन इंडिया, एन अल्टरनेटिव पर्सपेक्टिव, भारत में राष्ट्रीयकरण, नीतिगत विकल्पों का राजनीतिक अर्थशास्त्र, आदि। ईमेल : kamalnkabra@yahoo.co.in

तो उन्हें एक नई शुरुआत की उम्मीद थी। आयकर तथा अनेक चीजों पर लगे करों में कमी ने एक सकारात्मक ध्वनि-तरंग प्रसारित की। सिगरेट, गुटखा, तम्बाखू हानिकारक शीतल पेयों आदि पर बढ़े करों का स्वागत भी अधिकांश लोगों द्वारा कर छूटों की माफिक ही किया गया लगता है। कच्चे मालों, मशीनरी आदि पर टैक्स घटाने से देश का आंतरिक उत्पादन और बाजार बढ़ेंगे।

आम जन के स्तर पर शेयर बाजार, बड़ी पूंजी, मोटे निवेशकों, आयातकों, निर्यातकों आदि की तरह की चिंताएं विद्यमान नहीं होती हैं। राजकोषीय घाटा कितना रखा गया है। इससे ज्यादा अहम सवाल है कितनी सरकारी, गैर-सरकारी नौकरियां निकलेंगी, कितने अस्पताल, स्कूल, नए डाक्टर, अध्यापक, अन्य सामाजिक सेवाएं प्रदान आदि प्रदान करने वाले उपलब्ध होंगे। क्या सही दामों पर गारन्टी के साथ सस्ता राशन मिल पाएगा। क्या कीमतों की निरंतर बढ़ती प्रवृत्ति पर लगाम लगेगी।

राजकोषीय घाटा कितना रखा गया है इससे ज्यादा अहम सवाल है कितनी सरकारी, गैर-सरकारी नौकरियां निकलेंगी, कितने अस्पताल, स्कूल, नए डाक्टर, अध्यापक, अन्य सामाजिक सेवाएं प्रदान आदि प्रदान करने वाले उपलब्ध होंगे। क्या सही दामों पर गारन्टी के साथ सस्ता राशन मिल पाएगा? क्या कीमतों की निरंतर बढ़ती प्रवृति पर लगाम लगेगी?

सही है कि इन सवालों पर जारी नीतियों की गहरी छाप बना रहना चिंता का मामला है। कई बड़ी परियोजनाएं शुरू की गई हैं। हर बार की तरह उनके उपयोगकर्ता न केवल धनी और शहरी होते हैं बल्कि उनके संचालन-निष्पादन से भी साधन सम्पन्न लोगों की जेबें भरती हैं। विदेशी व्यापार में कराधान, देसी उत्पादन पर कराधान आदि का असर भी बहुत व्यापक किंतु काफी बिखरा, आम आदमी के जेहन में सीधे से नहीं आने वाला होता है। जहां तक दर्जनों नए कार्यक्रमों का सवाल है उनकी घोषणाएं हर बजट के साथ सुनते आए हैं। जब तक इनके नतीजे नजर आते हैं बाजार की सामान्य प्रक्रियाओं का असर अधिकांश राजकीय योजनाओं को बेअसर कर देता है। अत: हम इस बजट की जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का एक-एक कर खाका दो-तीन मोटे बिंदुओं के आधार पर खीचेंगे।

सच है हमारी कंपनियां मोटी वित्तीय राशियों के स्वामी, आयातक, निर्यातक, बड़े-बड़े तकनीकी विशेषज्ञ हमारे आर्थिक विकास में बड़ी भूमिका निभाते हैं। उन्हे प्रेरित करने तथा अच्छी दरों से नवाजा जाना जरूरी तथा एक सीमा तक तर्क और न्यायसंगत है। किंतु क्या देश के इन दो ध्रुवों पर स्थिति अल्पजन तथा बहुजन के बीच राजकोषीय नीति द्वारा बख्शे लाभों, उत्तरदायित्वों, देनदारियों आदि के बीच किसी प्रकार के न्यायपूर्ण आबंटन की कसौटी को नहीं लागू करना चाहिए। लोकतंत्र में कागज पर समान अधिकार संपन्न लोगों के बीच एक मोटे तौर पर, मात्र सरकारी तौर पर भी क्या किसी ऐसी कसौटी को लागू करके बजट की सारगभिता और उसके औचित्य को नहीं परखा जाना चाहिए।

स्पष्ट है हमारी राष्ट्रीय आय के 13 प्रतिशत से ज्यादा आगे के खर्च और उसे उगाहने के इस सालाना होने वाले कानूनी और नीतिगत काम का जायजा ले सकना बहुत दुष्कर काम है। किसी एक साल के बजट निर्णय मुख्य रूप से रुटीन यानी चले आ रहे ढर्रे को ही आगे बढ़ाते हैं। सन् 1990 जैसे लीक से हटने वाले बजट भी नीतियों के मामले में दूरगामी बदलावों का प्रणेता था किंतु विभिन्न विभागीय और मदों में रुटीन से विशेष नहीं हट पाया था। देश में आम आदमी की सार्वजनिक तथा अर्ध सार्वजनिक आवश्यकताओं की पूर्ति गरीबों और अमीरों तथा शहरी और ग्रामीण ही पूर्ति में अब तक आम तौर पर आमजन के विरुद्ध पक्षपात होता आया है। गरीबों की जरूरतें बड़ी हैं उनकी संख्या बड़ी है किंतु उनकी अपनी आय उन्हें पूरा करने तथा राज्य को विवश कर पूरा कर सकने की ताकत या क्षमता अपेक्षाकृत कमजोर है। अरसे से शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, पानी आम जन को उत्पादन के लिए सक्षम करने के लिए उत्पादन, आधारभूत संरचना (ग्रामीण सड़कों, सिंचाई, बिजली, जल-निकास तथा बाढ़-नियंत्रण संरचना, वाटरशेड, वन-संरक्षण तथा उन्नत औजारों की उपलब्धता तथा उनके इस्तेमाल तथा मरम्मत का प्रशिक्षण आदि दर्जनों सुविधाएं और संरजाम) आदि के बारे में कई कार्यक्रम चल रहे हैं। किंतु ये प्राय सांकेतिक तथा प्रभावी परिपूर्णता-विहीन हैं। आवश्यकताओं के अनुपात में ऊंट के मुंह में जीरा। दूसरी ओर हमारे सार्वजनिक निवेशक, बैंक कर्ज आदि का बड़ा भाग कंपनी क्षेत्र, आधुनिक बड़े उद्योगों, शहरों, महानगरों आदि की जरूरतों पर लगाए जाते हैं। आम गृहस्थ की बचत भी कम्पनियां निवेशित करती हैं। भारत की जरूरत सबके लिये आवश्यक सेवाओं-सुविधाओं की ताजबीज है। किंतु उन्हे सापेक्षित संख्या, जरूरत और क्षमता के अनुपात के अनुसार आवंटित करने की जरूरत है। इन मसलों पर तदर्थ निर्णयों की जगह स्पष्ट जनपक्षीय कसौटियों की दरकार है। यह करना तभी संभव है जब हम राजकीय खर्च को महज 20 प्रतिशत कर राष्ट्रीय अनुपात तथा 5 प्रतिशत राजकोषीय घाटे तक बांधे रखने की सीमा से आगे बढ़कर सार्वजनिक खर्च को सचमुच राष्ट्र-निर्णय, उसकी न्यायपूर्ण पुनर्रचना तथा स्वरूप के अनरूप मात्रा में तय करें। हमारी राजकोषीय नीति अपनी पुरानी लीक पर तदर्थ तथा तात्कालिक राजनीतिक जोड़-तोड़ द्वारा दशकों से तय की जा रही है। अब इन खामियों का बोझ ढोते रहना असहज और भारी लागत वाला सौदा हो चुका है। इस साल के बजट में शुरूआतें तो बहुत की गई हैं किंतु उनका वस्तुगत आधार और उनकी सामाजिक-आर्थिक तर्क पर अब तक निर्धारण नहीं होना एक व्यवस्थित सोच की जरूरत बनता है। शायद सार्वजनिक व्यय आयोग इस काम को अंजाम दे।

राष्ट्रीय आय के 13 प्रतिशत से ज्यादा खर्च और उसे उगाहने के इस सालाना होने वाले कानूनी और नीतिगत काम का जायजा ले सकना बहुत दुष्कर काम है। किसी एक साल के बजट निर्णय मुख्य रूप से रुटीन यानी चले आ रहे ढर्रे को ही आगे बढ़ाते हैं। सन् 1990 जैसे लीक से हटने वाले बजट भी नीतियों के मामले में दूरगामी बदलावों का प्रणेता था किंतु विभिन्न विभागीय और मदों में रुटीन से विशेष नहीं हट पाया था।

यह सब जानते हैं कि राज्य, समाज, अर्थव्यवस्था और लोकतंत्र के संबधों में निरंतर परिवर्तन होते देखे गये हैं। ये परिवर्तन इन चारों स्तंभों के घनिष्ठ संबंधों, वैचारिक मत-मतांतरों, वैश्विक प्रभावों आदि से प्रभावित होते हैं। भारत में सालाना केंद्रीय सरकारी बजट इस

प्रकार के परिवर्तनों को प्रकट करने, उनकी दिशा-दशा को दर्शाने वाले अवसर के रूप में देखा जाने वाला एक खास अवसर बन गया है। भारत में राज्य राष्ट्रीय खर्च का सबसे बड़ा भाग खर्च करने वाली संस्था है। अकेले केंद्रीय सरकार ही राष्ट्रीय आय का 13 प्रतिशत से कुछ ज्यादा खर्च करती है। ध्यान देने की बात है कि हमारी केंद्रीय सरकार देश की सबसे बड़ी खर्च करने वाली एकल राष्ट्रीय आर्थिक संस्था है। इसमें सार्वजनिक उद्यमों तथा राज्य सरकारों के द्वारा किए गए खर्च को भी जोड़ दें तो राजकीय क्षेत्र देश की राष्ट्रीय आय के 23 प्रतिशत के करीब हिस्से के बारे में निर्णय लेने वाली सबसे विशाल आर्थिक-राजनीतिक संस्था दिखाई देगी। जाहिर है केंद्र का बजट हमारी गतिविधियों के सालाना कलेंडर में एक खासमखास परिघटना मानी जाती है। इसलिए भी इस मौके का इस्तेमाल बड़े आर्थिक तथा नीति नियमक निर्णयों की घोषणा के लिए भी किया जाने लगा है।

आजकल बजट घाटे को नियंत्रित या सीमित रखने पर भारत की राजकोषीय नीति सबसे ज्यादा जोर दे रही है। इस मामले में राज्य ने अपने ऊपर कुछ कानूनी बाध्यताएं ओढ़ ली हैं। इसका एक मकसद राज्य के खर्च और उसकी आर्थिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष भूमिका पर अकुंश लगाए रहना है। इस कारण एक तो बाजार में निजी कंपनी क्षेत्र के लिए पूंजी प्रचुरता से इस क्षेत्र में उपलब्धता रहती है। दूसरे, ब्याज की दर भी काबू में रहती है।

केंद्र द्वारा राष्ट्रीय आय के 13 प्रतिशत से ज्यादा राशि के खर्च के स्रोतों पर ध्यान दें तो बजट के फलितार्थ काफी ज्यादा स्पष्ट हो जाएंगे। इस खर्च का आधे के करीब यानी राष्ट्रीय आय का 50 प्रतिशत प्रत्यक्ष (आय तथा संपत्ति पर) करों द्वारा तथा 4.4 प्रतिशत अप्रत्यक्ष यानी वस्तुओं और सेवाओं पर करों द्वारा उगाहा जाता है। टैक्स के अलावा राज्य द्वारा अन्य तरीकों से (मुनाफा, ब्याज आदि) टैक्स राशि के चौथाई से भी कम खर्च की भरपाई की जाती है। आजकल सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के शेयर बेच कर भी बजट खर्च की कुछ राशि जुटाई जा रही है। शेष राशि सरकार विभिन्न स्रोतों से कर्ज लेकर अर्थात राजकोषीय घाटे की पूर्ति के रूप में हस्तगत करती है। आजकल बजट घाटे को नियंत्रित या सीमित रखने पर भारत की राजकोषीय नीति सबसे ज्यादा जोर दे रही है। इस मामले में राज्य ने अपने ऊपर कुछ कानूनी बाध्यताएं ओढ़ ली हैं। इसका एक मकसद राज्य के खर्च और उसकी आर्थिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष भूमिका पर अकुंश लगाए रहना है। इस कारण एक तो बाजार में निजी कंपनी क्षेत्र के लिए पूंजी प्रचुरता से इस क्षेत्र में उपलब्धता रहती है। दूसरे, ब्याज की दर भी काबू में रहती है। जब से नवउदारवादी नीतियों का दामन थामा गया है, देसी और विदेशी पूंजी की सीधी आर्थिक भूमिका विस्तारित रखने का इरादा प्रमुख होता जा रहा है।

सच है सबको कुछ न कुछ देने के सर्वसंग्रहवाद के तहत पहले की तरह ही कमोबेश सभी को कुछ न कुछ दिया गया है। *सबका साथ सबका विकास* मनपसंद नारा जो है एक तरह से सन 2014-15 के बजट में विद्यमान प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाया गया है। शायद बदलाव की खोज में खर्च के बारे में एक विशेषज्ञ समिति की सलाह प्राप्त करने का इरादा जरूर रखा गया है। यहां बजट के एक अपेक्षाकृत उपेक्षित पहलू और उसके महत्व को सामने लाना चाहेंगे। कर-नीति का मकसद केवल खर्च के पैसे जुटाना भर नहीं होता है। करों द्वारा खर्च का अधिकार या जिम्मेदारी निजी से सार्वजनिक हाथों में चली जाती है। जाहिर है, इस तरह के खर्च के आवंटन प्रभावों तथा चरित्र में एक बड़ा बदलाव आ जाता है। किंतु अनेक राजनीतिक-आर्थिक कारणों से कुछ करों में रियायत या छूट दे दी जाती है। वास्तव में बजट की ये घोषित मदें एक अपवाद एक तरह की अप्रत्यक्ष सबसिडी होती है। इन्हें कर राशि खर्च भी कहा जाता है। जो व्यवहारिक स्तर पर टैक्स कानून में राजस्व उगाहने से समाहित खर्च के कार्यक्रम होते हैं। इनका अर्थ यह होता है कि वास्तविक या प्रभावी कर-वसूली घोषित या औपचारिक कर-दर से या कुछ कर-देयता से कानूनन कुछ कम हो जाती है। इस मद का कर-चोरी या वंचना से घालमेल नहीं करना चाहिए क्योंकि कर-चोरी अवैध तथा आपराधिक व्यवहार है। कर-छूट की व्यवस्था कानून करता है। जब हम सारे कर-भार की पड़ताल करते हैं तो करों के रूप में चुकाई गई राशि तथा करों में छूट के रूप में गैर-वसूली या माफ की गई राशि दोनों पर तुलनात्मक नजर रखनी चाहिए।

कर-नीति का मकसद केवल खर्च के पैसे जुटाना भर नहीं होता है। करों द्वारा खर्च का अधिकार या जिम्मेदारी निजी से सार्वजनिक हाथों में चली जाती है। इस तरह के खर्च के आवंटन प्रभावों तथा चरित्र में एक बड़ा बदलाव आ जाता है। राजनीतिक-आर्थिक कारणों से कुछ करों में छूट दे दी जाती है।

इस काफी पुरानी व्यवस्था से हमारी कर-व्यवस्था पर कितना बोझ पड़ता है, सन् 2006-07 से वित्त मंत्रालय में स्वयं इसके अपने अनुमान और आकलन से साझा कर रही है। इस विषय के तथ्य इस खर्च की मद के भारी महत्व को रेखांकित करते हैं। साथ की तालिका में हम पिछले दो वर्षों के कर-राशि खर्च के सरकारी आंकड़े पेश कर रहे हैं।

स्पष्ट है सन् 2011-12 में 6.8 लाख करोड़ के लगभग तक 2012-13 में 6.1 लाख करोड़ से ज्यादा राशि कंपनियों, फर्मों, ऐसोसियेशंस तथा आयकर दाताओं को कानून

तालिका 1: कर-खर्च या अप्रत्यक्ष सब्सिडी

(करोड़ रुपये में)

	कंपनियों को दी गई छूट	फर्म एसोसिएशन आदि को दी गई छूट	आयकर पर	एक्साइज पर	सीमा शुल्क पर
2012-13	68720	5908.9	27626.8	209948	299066
2011-12	61675.3	7145.4	32230	195590	285638
कुल छूट राशि	2011-12	2012-13			
	61281.7	682278.7			

स्रोतः *रिसीट बजट 2012-13 तथा 2013-14*

की स्थापित कर-दर से विशेष मकसदों और मदों में रियायत आदि देकर प्रत्यक्ष तथ अप्रत्यक्ष दोनों में मिलाकर छोड़े या माफ किए गए कुल राशि इन दो सालों में क्रमशः ₹ 495458 तथा ₹ 564344 थी। स्पष्ट है इन छूटों रियायतों की राशि क्रमशः 2011-12 में ₹ 101050 तथा 2012-13 में ₹ 10255 थी। अर्थात करीब 20 प्रतिशत तथा 18 प्रतिशत थी। इनके कारण कंपनियों से वसूली वास्तविक कर-दर में काफी कमी आई। कानूनी 33 प्रतिशत की जगह व्यवस्था में 22 या 23 प्रतिशत कर दर की वसूली हुई। सरकार की अनेक पंसदीदा कमिटियों ने इस कर-खर्च को समाप्त करने की सिफारिश की है।

अभी तक किसी ने यह न दावा किया है और न ही साबित भी कि हमारे उद्योगों के उत्पादन तथा कंपनियों व्यक्तियों आदि का सामाजिक आर्थिक योगदान इन छूटों से प्रेरित होकर हुआ है। यह तो मुनाफों का प्रकार है। यह बताने की दरकार नहीं है। कि इन छूटों को पाने वाले ये तबके देश के सबसे संपन्न और प्रभावशाली तबके हैं। इस हस्तांतरण का भारतीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक स्थिति और संतुलन पर निश्चित रूप से एक गहरा नकारात्मक प्रभाव डालता है वितरण की विसमता बढ़ाने के साथ-साथ यह सामाजिक संसाधनों की प्रभावी मांग को अपनी ओर खींचने वाली और घटाने वाली विशालतम एकल राशि है। करोड़ो लोगों की गहन संरचना इस प्रकार के दूषित संसाधन वितरण का निश्चित प्रभाव होता है। हम केवल तार्किक आधार पर डिडक्टिव निगमन तक की बात कर रहे हैं। निश्चित रूप से सारी अर्थव्यवस्था के एक समष्टिगत माडल में इस प्रश्न की गहन और गंभीर जांच की जरूरत है। किंतु अनाज, खाद, किरोसिन आदि पर आम आदमी को दी जाने वाली करीब 2 लाख करोड़ रुपयों कर सबसिडी के मुकाबले धनी लोगों को दी जाने वाली ये रियायतें बहुत ज्यादा और पूरी तरह औचित्यहीन हैं।

हमारे देश में अपेक्षाकृत कमजोर तबकों को बजट के सामाजिक आर्थिक आंबटन में आम तौर पर अपेक्षाकृत कमतर हिस्सा मिल पा रहा है। अमल के स्तर पर इसमें और व्यवधान पड़ जाते हैं। सन 2014-15 के बजट में कुछ नई शुरूआतों के संकेत दिख रहे हैं। जनाकांक्षाओं का अंबार राज्य के सामने ताल ठोक रहा है। सक्रिय, सकारात्मक राजकोषीय भूमिका के निर्वहन के लिए। संसाधन अभावजन्य खामियों को दुरुस्त करना हमारी अपरिहार्य राष्ट्रीय आवश्यकता है

अब जब विषमताएं न केवल रोजगार तथा समानता पर ग्रहण लगा रही हैं और मंहगाई आदि इस प्रक्रिया की आग में घी डाल रही है। बजट का यह पहलू विशेष ध्यान और प्रभावी उपचार मांगता है। हमारे देश में अपेक्षाकृत कमजोर तबकों को बजट के सामाजिक आर्थिक आंबटन में आम तौर पर अपेक्षाकृत कमतर हिस्सा मिल पा रहा है। अमल के स्तर पर इसमें और व्यवधान पड़ जाते हैं। सन 2014-15 के बजट में कुछ नई शुरूआतों के संकेत दिख रहे हैं। जनाकाक्षाओं का अंबार राज्य के सामने ताल ठोक रहा है। संसाधन अभावजन्य खामियों को दुरुस्त करना हमारी अपरिहार्य राष्ट्रीय आवश्यकता है सक्रिय, सकारात्मक राजकोषीय भूमिका के निर्वहन के लिए।

सक्रिय राजकोषीय हस्तक्षेप किसी भी समाज की तरक्की, लोगों की खुशहाली, और समाज में संतुलन की प्राथमिक शर्तों में एक है। अभी हाल में थॉमस पिकेरी ने बीसवीं सदी में पूंजी विषय पर एक तहलका मचा देने वाली किताब लिखी है। आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्थाओं की इसे जन्म-कुंडली माना जा सकता है। इसका एक अहम निष्कर्ष यह है कि उच्च आय, जीवन स्तर और विश्व में अच्छी साख वाली अर्थव्यवस्थाओं में बाजार और निजी पूंजी के अद्वितीय महत्व के बावजूद वहां राष्ट्रीय आय के 40 से 60 प्रतिशत तक के भाग का खर्च और नियंत्रण राजकीय या सार्वजनिक होता है। बिना ऐसी महती राजकीय भूमिका के राज्य अपने अपरिहार्य दायित्व पूरा कर ही नहीं सकता है। यह निष्कर्ष भारत की बजट नीतियों का ककहरा माना जा सकता है। ❑

योजना

आगामी अंक

सितंबर 2014

शहरी नियोजन

अक्टूबर 2014

असंगठित क्षेत्र

बदलते आर्थिक परिदृश्य में लक्ष्यों व प्राथमिकताओं पर विचार

रवीन्द्र ढोलकिया

वित्त वर्ष की पहली तिमाही बीत जाने के बाद नयी सरकार को शेष आठ माह के लिए बजट तैयार करना था और हाथ में थे केवल 45 दिन। इतना ही नहीं पिछली सरकार के अविचारित अनुत्पादक कदमों का बोझ एक ओर राह में रोड़े पैदा कर रहा था तो दूसरी ओर, डगमगायी हुई अर्थव्यवस्था और बाजार का खोया हुआ विश्वास अलग ही दबाव डाल रहे थे। ऐसे में वित्त मंत्री क्या करें? नये प्रयोगों के विकल्प बहुत नहीं थे। शायद इसी वजह से वित्त मंत्री ने आलंब तो आर्थिक सर्वेक्षण का लिया लेकिन जिस अंदाज में बजट में थोड़े-बहुत कदम उठाए गए हैं, उन्हें साहसिक माना ही जाना चाहिए

यह बजट मुख्य रूप से चालू वित्त वर्ष के अगले आठ महीनों के लिए है। फ़रवरी 2014 में प्रस्तुत अंतरिम बजट में क्रांतिकारी परिवर्तन और उसमें पर्याप्त बदलाव की गुंजाइश सीमित है। यद्यपि, वर्तमान सरकार के पहले बजट से आम जनता की उम्मीदें बहुत ऊंची थीं, तथापि अर्थशास्त्रियों और वित्त विशेषज्ञों ने माना कि पिछली सरकार द्वारा की गई आर्थिक प्रतिबद्धताओं के संदर्भ में वित्त मंत्री को बाधाओं का सामना करना पड़ रहा था। साथ ही पिछली सरकार ने शिक्षा, रोजगार और खाद्य सुरक्षा के अधिकार लोगों को देने के लिए कई अधिनियम पारित किए थे, इस कारण वित्त मंत्री के पास ऐसे कानूनों के प्रावधानों में महत्वपूर्ण बदलाव करने की आजादी बहुत कम थी, जब तक कि इन कानूनों के स्वरूप और जारी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में पूरी तरह से संशोधन नहीं कर दिया जाता। हमारी संसदीय और न्यायिक व्यवस्थाओं की क्षमता को देखते हुए ऐसा करना इतना जल्दी संभव नहीं होगा, कि ये संशोधन मौजूदा बजट में शामिल किए जा पाते। कुल मिलाकर सुविचारित और दूरगामी प्रभाव वाले संशोधनों और सुधारों को लागू करने के लिए 45 दिन का समय बहुत कम है। कोई भी ऐसे मामलों में अंवाछित जोखिम लेने के बजाए सावधानीपूर्वक चलना चाहेगा।

मौजूदा सरकार को जो पांच बजट पेश करने के लिए जनादेश मिला है उनमें यह पहला बजट है। मौजूदा बजट को इसी संदर्भ में देखा और उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इस बजट का दूसरा मानक मौजूदा और परिवर्तनशील आर्थिक वातावरण है, जिसमें यह पेश किया गया है, क्योंकि वातावरण लक्ष्यों तथा तय की जाने वाली प्राथमिकताओं को निर्धारित और प्रभावित करता है।

आर्थिक वातावरण और बजट प्राथमिकताएं

पिछले दो वर्षों में अर्थव्यवस्था के बारे में बहुत कुछ चर्चा की गई है और जिक्र किया गया है, इस दौरान कुल विकास दर गिर कर 4.5 और 4.7 प्रतिशत रह गई। हालांकि, इन वर्षों में कृषि विकास दर 3 प्रतिशत रही जो बुरी नहीं है। खनन क्षेत्र में नकारात्मक वृद्धि देखी गई, विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र व्यवहारिक तौर पर शिथिल हो गए और व्यापार तथा परिवहन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण ह्रास देखा गया। उपभोक्ता मूल्यों के हिसाब से महंगाई अपने हठी रवैये के साथ अस्वीकार्य उच्च स्तर पर बनी रही जिसके कारण लोग ऐसा सोचने लगे कि अर्थव्यवस्था शिथिलता और महंगाई के दोहरे जाल में फंस चुकी है। भुगतान के शेष में चालू वित्तीय घाटा (सीएडी) सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 3 प्रतिशत के सुरक्षित स्तर को पार कर गया और अस्थिर रूप से ऊंची दरों पर बना रहा, बाद में चलकर पिछले वर्ष आयात घटने और निर्यात शिथिल होने की कीमत पर यह घटकर 1.7 प्रतिशत हुआ।

विकास दर में महत्वपूर्ण गिरावट तथा निर्यात समेत अर्थव्यवस्था के ज्यादातर उत्पादनशील क्षेत्रकों में शिथिलता के कारण कुशल एवं अकुशल के कामगारों के रोज़गार में बड़ी गिरावट पैदा होगी। अनुमान लगाया जाता है कि इसके परिणाम स्वरूप विकास में एक प्रतिशत की कमी से रोजगार

लेखक भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं। वे छठे केंद्रीय वेतन आयोग की बचत और निवेश तथा भारत में लोक व्यय प्रबंधन के लिए बनी उच्च स्तरीय समिति के सदस्य थे। प्रो. ढोलकिया ने कई पुस्तकें लिखी है और प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनके मोनोग्राफ तथा शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कई राष्ट्रीय-अंतराराष्ट्रीय संगठनों के लिए परामर्शदाता के में रूप में कार्य किया है। ईमेल: rdholakiya@iimahd.ernet.in

में 0.18 प्रतिशत की कमी और गरीबी में जीने वाले लोगों की संख्या में 0.19 प्रतिशत की वृद्धि होगी। इसका मतलब है कि विकास में एक प्रतिशत अंक की कमी से लगभग 22 लाख लोग अपना रोज़गार खो सकते हैं और इतने ही लोग गरीबी रेखा के नीचे जा सकते हैं। उपभोक्ता मुद्रास्फीति में वृद्धि स्थिति को गरीबों के लिए और भी मुश्किल बना देगी।

खर्चों में बढ़ोतरी जारी रखने के कारण सरकार के पास गरीबी कम करने और विकास दर बढ़ाने के लिए कोई मौद्रिक विकल्प भी नहीं है, क्योंकि मौद्रिक अपव्यय और लोकलुभावन अनुत्पादक कदमों के कारण गंभीर मौद्रिक घाटा हो रहा है। वास्तव में वित्त मंत्री के पास इस बात के अलावा कोई विकल्प नहीं है कि वह अपने पूर्ववर्ती द्वारा फरवरी 2014 में स्थापित वित्तीय सुदृढ़ीकरण के लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ें।

हालांकि, धीमे विकास के कारण बेरोज़गारी और गरीबी के रूप में समाज द्वारा चुकाई जा रही भारी कीमत को देखते हुए वित्त मंत्री को एक ही समय में मौद्रिक अनुशासन बनाए रखने के साथ मुद्रास्फीति कम करने के उपाय कर आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहन देने के कदम को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी ही थी। यह लक्ष्य केवल भारतीय अर्थव्यवस्था में निवेशकों का विश्वास जगाकर तथा घरेलू इकाइयों, कॉरपोरेट, जगत और सार्वजनिक क्षेत्र में बचत को प्रोत्साहित करके ही हासिल किया जा सकता है।

बजट से अपेक्षाएं

वर्तमान सरकार के पहले बजट से व्यापारियों, निवेशकों और अंतरराष्ट्रीय साख निर्धारण एंजेंसियों को उम्मीद रही होगी कि भावी सुधारों के लिए व्यापक दिशा तय हो, आर्थिक वृद्धि और मुद्रास्फीति नियंत्रण के लिए स्पष्ट उपाय हों, नीतिगत ढांचे में स्थायित्व बनाए रखने की प्रतिबद्धता हो और सरकारी प्रशासन में पारदर्शिता तथा कार्यक्षमता बढ़े। वहीं, सरकार को सबसे ज्यादा कर राजस्व देने वाला मध्यम वर्ग कुछ राहत की उम्मीद लगा रहा था।

यद्यपि बजट 2012-13 के आर्थिक सर्वेक्षण से कहीं अलग नहीं है, तथापि सामान्य तौर पर इसे किसी भी वित मंत्री द्वारा पेशेवर रुख के साथ बजट तैयार करने के लिए दिग्दर्शक दस्तावेज माना जाता है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की मज़बूती, कमजोरी, चुनौतियों व उसके अवसरों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है और नीतियों, संस्थानों तथा प्रक्रियाओं में सुधार लाने के लिए रणनीति व रूपरेखा का सुझाव भी देता है। आर्थिक सर्वेक्षण ने वास्तव में यह सब इनपुट दिए हैं और इनके साथ यह स्पष्ट समझ भी बना दी है कि सबकुछ पहले बजट में ही समाधान नहीं किया जा सकता है। वास्तव में इसने सरकार के लिए आगामी पांच वर्षों में किए जाने वाले सुधारों व प्रगति के लिए पथ प्रशस्त किया है। वित्त मंत्री शायद सभी अवांछित आलोचनाओं से बच पाते यदि उन्होंने अपने दो घंटे लंबे भाषण में दो-तीन पंक्तियां और जोड़ी होतीं जिनमें वह बता पाते कि उनकी सरकार आर्थिक सर्वेक्षण से प्राप्त दिशा के अनुरूप प्रशस्त मार्ग को अपनाने के प्रति पूर्णत: प्रतिबद्ध और सहमत है।

धीमे विकास के कारण बेरोज़गारी और गरीबी के रूप में समाज द्वारा चुकाई जा रही भारी कीमत को देखते हुए वित्त मंत्री को एक ही समय में मौद्रिक अनुशासन बनाए रखने के साथ मुद्रास्फीति कम करने के उपाय कर आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहन देने के कदम को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी ही थी। यह लक्ष्य केवल भारतीय अर्थव्यवस्था में निवेशकों का विश्वास जगाकर तथा घरेलू इकाइयों, कॉरपोरेट, जगत और सार्वजनिक क्षेत्र में बचत को प्रोत्साहित करके ही हासिल किया जा सकता है।

हालांकि, वित्त मंत्री ने सर्वेक्षण में वर्णित कुछ सुझावों को बिना उनका स्पष्ट वर्णन किए स्वीकृति दे दी। यदि इसका अर्थ यह लिया जाए कि सर्वेक्षण में सुझाए गए अन्य सुझावों को भी सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकृति दे दी है तो, माना जाना चाहिए कि सरकार भावी सुधारों की व्यापक दिशा के प्रति स्पष्ट है। सर्वेक्षण में स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि बाजार की विफलताओं को ठीक करने के लिए विधियों, संस्थाओं और प्रक्रियाओं को योजनागत दर्शन से प्राप्त उनके विरासती स्वरूप जिसमें *स्वीकृति के बिना गतिविधियां प्रतिबंधित हैं*, उस स्थिति से निकलकर उदार बाजार आधारित स्थिति में बदलना होगा जहां *गतिविधियां तब तक स्वीकृत रहेंगी जब वो प्रतिबंधित नहीं हों।* यह विषय और आर्थिक प्रशासन में आवश्यक बदलाव पर इसके तार्किक प्रभाव का बहुत अच्छा विवरण सर्वेक्षण में दिया गया है।

वित्त मंत्री ने नीतिगत ढांचों में खास कर, कराधान नीति में स्थायित्व बनाए रखने और बीती हुई तारीख से किसी नीतिगत परिवर्तन को लागू नहीं करने का स्पष्ट वादा अपने बजट भाषण में किया है। इसी तरह मौजूदा सरकार ने नीतिगत एकपक्षीयता को खत्म करने और बजट के बाहर की लंबे समय से विचाराधीन परियोजनाओं को स्वीकृति देने के प्रभावी निर्णय की दिशा में तेज कदम बढाया है। वित्त मंत्री ने बजट में कुछ ऐसे प्रावधान भी किए जिनसे आर्थिक वृद्धि फिर से पटरी पर लाने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता झलकती है।

आर्थिक वृद्धि सुधारने के प्रावधान

किसी वर्ष में आर्थिक वृद्धि उस वर्ष में जमा की गई निवेश बचतों को अतिरिक्त पूंजी के प्रभावी और कार्यक्षम उपयोग द्वारा उससे इनक्रिमेंट हासिल करने का परिणाम होता है। अतिरिक्त पूंजी की उत्पादकता को आईसीओआर या इनक्रिमेंटल पूंजी परिणाम अनुपात के आधार पर मापा जाता है जो व्यवस्था में आवश्यक अतिरिक्त परिणाम इकाइयों को पैदा करने के लिए आवश्यक निवेश राशि के बारे में संकेत देता है। हमारी निवेश दर 2009 से 2011 के बीच 36.7 प्रतिशत थी और इसी दौरान विकास दर औसतन 9 प्रतिशत रही। इससे पहले के वर्षों में जब विकास दर 8 से 9 प्रतिशत रही थी आईसीओआर 4 से 4.1 प्रतिशत के लगभग रही। हालांकि पिछले तीन वर्षों में जब हमने नीतिगत एकपक्षीयता को महसूस करना शुरू किया तब हमारी आईसीओआर में जबरदस्त वृद्धि हुई और यह वृद्धि क्षमताओं के जरूरत से कम उपयोग के कारण देखी गई। परिणाम स्वरूप हमारी निवेश दर 34-35 प्रतिशत के ऊंचे स्तर पर रही लेकिन फिर भी हमारी विकास दर घटकर 4.5 से 6 प्रतिशत रह गई।

तीव्र और ठोस कदमों से निवेश दर स्थिर रहने के बावजूद आईसीओआर में कमी तथा विकास दर में तेज वृद्धि लाई जा सकती है। बजट भिन्न स्थितियों में ऐसा पहले ही हो रहा है। हालांकि, बजट में स्पष्ट कर राहत के जरिए न केवल व्यक्तिगत क्षेत्र बल्कि कुछ खास प्रोत्साहन के जरिए कॉरपोरेट जगत को भी कुछ राहत देकर अर्थव्यवस्था में बचत को प्रोत्साहन के तौर पर विकास दर में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण उपाय

किए हैं। बेहतर मौद्रिक अनुशासन, बेहतर व्यापारिक वातावरण और रियायतें कम करने के कुछ कठोर फैसलों के परिणामस्वरूप अपने उपक्रमों में कम डिफॉल्ट तथा ज्यादा राजस्व के रूप में सरकारी क्षेत्र बड़ी बचतें भी देख सकेंगे।

उच्च बचत दर निवेश योग्य निधि की आपूर्ति बढ़ाएगी और इस तरह ब्याज दर से दबाव कम होगा। चूंकि बजट कठोर एवं चुनौतीपूर्ण मौद्रिक घाटा लक्ष्यों की ओर जा रहा है, निजी क्षेत्र के द्वारा उत्पादक निवेशों के लिए अधिक निवेशीय संसाधन उपलब्ध होंगे इससे अर्थव्यवस्था में देशी और विदेशी दोनों तरह के निवेशों को प्रोत्साहन मिलेगा। यह प्रोत्साहन स्थायी नीतिगत ढांचा के आश्वासन तथा बीती हुई तारीख से प्रभावी नीतियां नहीं लागू करने की प्रतिबद्धता के कारण भी आ सकता है जिससे निवेशकों की नीति संबंधी जोखिम चिंताए कम होंगी।

वहीं दूसरी ओर, खर्च के मोर्चे पर कुछ ऐसी घोषणाएं हैं जो आर्थिक वृद्धि की गति को तुंरत बढ़ाएंगी। 8500 किमी. सड़क निर्माण, विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्वीकृति, कोयला आपूर्ति में बढ़ोतरी, 100 नए स्मार्ट शहरों का निर्माण, कपड़ा, रियल स्टेट, भंडारण, लघु एवं मध्यम उद्योग, जहाजरानी, विमानपत्तन, नवीकरणीय ऊर्जा समेत सभी तरह की ऊर्जा, पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस, बैंकिंग, रक्षा उत्पादन और पर्यटन क्षेत्रकों को इनसेंटिव से आर्थिक गतिविधियों को वास्तविक छलांग मिलेगी और इसका असर आर्थिक वृद्धि पर भी होगा।

मुद्रास्फीति अपेक्षाओं पर नियंत्रण

चूंकि यह भारत में पूरी तरह स्थापित तथ्य है कि उपभोक्ता मुद्रास्फीति बहुत हद तक आपूर्ति पक्ष खास कर, खाद्य क्षेत्रक के कारण घटित होने वाली घटना है, बजट में खास कोशिशें की गई हैं कि फलों, सब्जियों व खाद्य सामग्रियों की बर्बादी रोकने के लिए भंडारण क्षमता बढ़ाने हेतु आवंटन के प्रावधान हों, साथ ही किसानों को अधिक आजादी देने के लिए कृषि उत्पादन बाजार समितियों की व्यवस्थाओं को सुधारने के वादे भी किए गए हैं। यह सब आर्थिक सर्वेक्षण से मिले सुझावों के अनुरूप है। इस बजट में माना गया है कि इसके सभी बजटीय और बजट भिन्न प्रावधान एक बार अमल में आ जाने पर आर्थिक वृद्धि दर 4.7 प्रतिशत के वर्तमान स्तर से उठकर 6 प्रतिशत के वास्तविक स्तर के नजदीक पहुंच जाएगी। यह रूढ़ीवादी हो सकता है लेकिन चालू वित्त वर्ष में केवल आठ महीने ही हाथ में होने को देखते हुए यह प्रशंसनीय अधिक है। वृद्धि दर कम से कम एक तिमाही के आधार पर बढ़ती है, यह धीरे-धीरे आपूर्ति बाधाओं को खत्म कर मूल्यों पर से दबाव कम करेगी।

इस स्थिति में यह सकल मांग के नियंत्रण का विषय हो जाएगा जो भारत में सुविधाजनक तौर पर, लेकिन गलत रूप में, भारतीय रिज़र्व बैंक की अकेली जिम्मेदारी मान ली जाती है और रिज़र्व बैंक इस पर उत्सुक होकर स्थिति को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरें बढ़ा देता है। सही स्थिति यह है कि सरकार की मौद्रिक नीति ज्यादा सामर्थ्य के साथ अर्थव्यवस्था में सकल मांग को प्रभावित कर सकती है। सरकार के सकल खर्च को जीडीपी के 14 प्रतिशत से घटाकर 13.7 प्रतिशत तक सीमित कर इस बजट में निजी क्षेत्र का खर्च बढ़ाने के लिए जगह बनाई है। टैक्स में राहत से निजी बचत के साथ ही उपभोग और निवेश दोनों के रूप में निजी खर्च में बढ़ोतरी होगी। चूंकि वित्तीय घाटा जीडीपी के 4.6 प्रतिशत से घटाकर 4.1 प्रतिशत कर दिया गया है, गतिशील सकल मांग पर इसका प्रभाव अधोमुखी न कि उन्मुखी विचलन के रूप में होगा। यह निश्चित रूप से अनुमानित मुद्रास्फीति में कमी लाएगा जिससे वास्तविक मुद्रास्फीति भी नीचे आएगी।

सरकार की मौद्रिक नीति ज्यादा सामर्थ्य के साथ अर्थव्यवस्था में सकल मांग को प्रभावित कर सकती है। सरकार के सकल खर्च को जीडीपी के 14 प्रतिशत से घटाकर 13.7 प्रतिशत तक सीमित कर इस बजट में निजी क्षेत्र का खर्च बढ़ाने के लिए जगह बनाई है। टैक्स में राहत से निजी बचत के साथ ही उपभोग और निवेश दोनों के रूप में निजी खर्च में बढ़ोतरी होगी। चूंकि वित्तीय घाटा जीडीपी के 4.6 प्रतिशत से घटाकर 4.1 प्रतिशत कर दिया गया है, गतिशील सकल मांग पर इसका प्रभाव अधोमुखी, न कि उन्मुखी विचलन के रूप में होगा।

मौद्रिक अनुशासन

यह किसी भी बजट का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है और मौजूदा बजट के साथ भी यही स्थिति है। साख निर्धारण एजेंसियों और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों की नजर में इस सरकार में विश्वसनीयता और स्थूल आर्थिक कुव्यवस्था से उबारने की इसकी क्षमता का स्पष्ट प्रभाव इस बजट के मौद्रिक अनुशासन पर दिखता है। यह महत्वपूर्ण है कि *'वित्त मंत्री वित्तीय दायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम'* के पुनरीक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आर्थिक सुदृढ़ीकरण के रास्ते पर चल रहे हैं। यह कुल वित्तीय खर्चों का अनुमान लगाने और उन लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध होने के लिए तीन वर्षीय योजना लागू करने की तैयारी का मौका देता है। यह रास्ता फरवरी 2014 के अंतरिम बजट में बड़े व्यापक मौद्रिक मानकों के साथ बनाया गया था। हालांकि, निर्धारित लक्ष्यों द्वारा कठोर मौद्रिक अनुशासन के संकेत मिलने के बावजूद इस पूरी कवायद में वास्तविक कारणों से विश्वसनीयता का अभाव रहा। इस कारण इस नई सरकार के लिए इन स्थितियों ने वास्तविक चुनौतियां पेश कीं। वित्त मंत्री ने बड़े ही साहसपूर्ण रूप से इन चुनौतियों को स्वीकार किया है।

तीन वर्षीय मौद्रिक लक्ष्यों का अर्थ है कि सरकार कुछ नीतिगत निर्णय लेगी जो व्यापार और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशक समुदाय को इस देश में समय के साथ अपने लिए अवसरों के मूल्याकंन में मदद देगी। (देखें. तालिका 1)

वित्त मंत्री ने अपनी पार्टी के व्यापक राजनीतिक दर्शन को ध्यान में रखते हुए मौद्रिक चुनौतियों को स्वीकार किया है जो छोटी सरकार लेकिन अधिक और प्रभावी शासन में विश्वास रखती है। किसी सरकार के आकार को मापने के लिए मानक सरकार के कुल खर्च और जीडीपी का अनुपात है। तालिका एक से स्पष्ट है कि यह खर्च आने वाले वर्षों में धीरे धीरे घटने का अनुमान है। इस वित्त वर्ष में यह 14 प्रतिशत से घटकर 13.7 प्रतिशत हो गया है और 2014-17 तक इसे घटाकर 12.5 प्रतिशत पर लाना है। जरूरी नहीं कि सरकारी खर्च में कमी सेवाओं में कमी को भी दर्शाए क्योंकि सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) परियोजनाओं के माध्यम से निजी क्षेत्र को भी खर्च में शामिल करने का प्रस्ताव किया गया है। इस प्रकार सरकार ने अनावश्यक रूप से खर्च न करने और निजी क्षेत्र के खर्च के लिए जगह बनाने का अपना इरादा स्पष्ट कर दिया है।

तालिका 1: वर्तमान बाजार मूल्यों के आधार पर सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय आय-व्यय का योग

मद	2013-14 (संशोधित अनुमान)	2014-15 (बजट अनुमान)	2015-16 (लक्ष्य)	2016-17 (लक्ष्य)
सकल कर राजस्व	10.2	10.6	10.9	11.2
शुद्ध कर राजस्व	7.4	7.6	7.4	7.6
कर भिन्न राजस्व	1.7	1.4	1.4	1.2
कुल व्यय	14.0	13.7	13.1	12.5
रियायतें	2.3	2.0	1.7	1.6
राजस्व घाटा	3.3	2.9	2.2	1.6
पूंजी परिसंपत्तियों के लिए अनुदान	1.3	1.3	2.2	1.6
प्रभावी राजस्व घाटा	2.0	1.6	2.2	1.6
विनिवेश और वसूली	0.3	0.6	0.7	0.7
वित्तीय घाटा	4.6	4.1	3.6	3.0
ऋण/जीडीपी	46.0	45.4	43.6	41.5

स्रोत: *'मध्यावधि मौद्रिक नीति दस्तावेज' तथा 'बजट एक नजर में' के आधार पर परिकलित*

एक ओर जहां सकल का राजस्व जीडीपी के प्रतिशत के रूप में 2013-14 के 10.2 प्रतिशत से बढ़कर 2016 -17 में 11.2 प्रतिशत किया जाना है वही यह कर दरों को बढ़ाए बिना संभव नही होगा। इस बात की अधिक संभावना है कि सेवा कर और साइबर करों में कर आधार को विस्तृत कर तथा तंत्र को कराधान दर बढ़ाने के लिए पर्याप्त सक्षम बनाकर यह हासिल किया जा सकता है। यदि वित्त मंत्री की अपेक्षाओं से अधिक अर्जन करने में अर्थव्यवस्था सफल रहती है तो उस स्थिति में वित्त मंत्री ने अतिरिक्त संसाधनों पर कोई खर्च करने के बजाए मध्य वर्ग को और भी राहत देने का वादा किया है। वित्त मंत्री द्वारा कर राजस्व वृद्धि पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए प्रशंसनीय मालूम पड़ती है।

ऋण पर ब्याज भुगतान के बाद रियायत ही सबसे प्रासंगिक व्यय मद है। चूंकि मौद्रिक अनुशासन मौद्रिक घाटे में लगातार कमी सुनिश्चित करेगा, इससे घाटा और जीडीपी का अनुपात भी धीरे-धीरे गिरेगा ही। साथ ही जैसे ही मुद्रास्फीति अपेक्षाएं गिरेंगी, सरकार के लिए ऋण दर कम होती जाएगी। इस प्रकार कम ब्याज दर और निम्न घाटा जीडीपी अनुपात दोनों ही मोर्चे पर ब्याज भुगतान जीडीपी के प्रतिशत के रूप में समय के साथ गिरता जाएगा।

रियायतें मौद्रिक प्रबंधन के लिए बड़ी चुनौतियां पेश करती रही हैं। खाद्य, उर्वरक और पेट्रोलियम पर रियायतें जो कुल मिलाकर 2.5 खरब रुपये होती है, इनमें से पेट्रोलियम रियायत के रूप में 2013-14 के 0.85480 खरब की राशि घट-कर 2014-15 में 0. 63427 खरब रुपये रह जाएगी। अन्य दो रियायतें थोड़ी बढ़ सकती है ताकि इस वित्त वर्ष में रियायतों पर कुल वृद्धि पिछले वर्ष के 1.5 प्रतिशत के स्तर तक ही रह सके। अगले वर्ष रियायतों में निश्चित रूप से 4 प्रतिशत और उसके बाद 5 प्रतिशत की कमी आएगी। इससे रियायतों पर खर्च 2013-14 के जीडीपी के 2.3 प्रतिशत से घट कर 2016-17 में जीडीपी का 1.6 प्रतिशत रह जाएगा। इसके लिए वर्तमान बजट में सार्वजनिक व्यय प्रबंधन आयोग के गठन का प्रस्ताव है जो विभिन्न रियायतों का समुचित लक्ष्य करके उनकी खामियों को दूर करने और उनके स्वरूप में जरूरी बदलाव के माध्यम से इन्हें ठीक करने का प्रयास करेगा।

कार्य योजना की अन्य बड़ी उपलब्धि आगामी वित्त वर्ष यानी 2015-16 से शून्य प्रभावी राजस्व घाटा हासिल करने का लक्ष्य है। प्रभावी बजट घाटे के तौर पर *'वित्तीय दायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम'* के पुनरीक्षित लक्ष्य जिन्हें केंद्र से अनुदान की कमी के रूप में प्राप्त किया जाना है, इनका उद्देश्य पूंजी संपदा का निर्माण करना है। पूंजी संपदा बनाने के उद्देश्य के साथ अनुदान के बजट लक्ष्य अगले वर्ष तेज बढ़ोतरी के साथ जीडीपी का 2.2 प्रतिशत होने का अनुमान है जो इस वित्त वर्ष में 1.3 प्रतिशत है। जैसा कि वित्त मंत्री ने कहा है कि यह लक्ष्य मनरेगा जैसे कुछ अनुदान कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए उत्पादक पूंजी संपदा पर ध्यान केंद्रित कर किया जाएगा न कि उपभोग संस्कृति को बढ़ावा देकर।

निष्कर्ष

यह बजट एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, न केवल इसलिए कि इसे 45 दिन में तैयार किया जाना था बल्कि इसलिए भी कि इसे अर्थव्यवस्था में मौजूद मौद्रिक और स्थूल आर्थिक अव्यवस्था को भी निपटाना था। वर्तमान वातावरण में अर्थव्यवस्था की जरूरतों के आधार पर वित्त मंत्री द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए इस बजट में कुछ प्रासंगिक और महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी है लेकिन दुर्भाग्य से वित्त मंत्री पहली बजट प्रस्तुति में प्रस्तावों और प्रस्तुतियों की ठीक ठीक पैकेजिंग नहीं कर पाए। उन्हें इस सरकार की नीतियों और भावी दिशा के लिए रोड मैप के तौर पर आर्थिक सर्वेक्षण का स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए था लेकिन उन्होनें ऐसा नहीं किया। यही कारण है कि उन पर भावी दिशा को लेकर स्पष्टता और दृष्टि के अभाव के आरोप लगे। इसके उलट, वास्तव में उन्होंने सर्वेक्षण में दिए गए कुछ सुझावों को बिना उनका उल्लेख किए ही स्वीकार कर लिया।

जरूरी नहीं कि सरकारी खर्च में कमी सेवाओं में कमी को भी दर्शाए क्योंकि सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) परियोजनाओं के माध्यम से निजी क्षेत्र को भी खर्च में शामिल करने का प्रस्ताव किया गया है। इस प्रकार सरकार ने अनावश्यक रूप से खर्च न करने और निजी क्षेत्र के खर्च के लिए जगह बनाने का अपना इरादा स्पष्ट कर दिया है।

आर्थिक सुदृढ़ीकरण के लिए कार्य योजना और बजट का प्रभाव कुल मिलाकर निवेश भावनाओं, व्यापार वातावरण, आर्थिक वृद्धि की पुनरूप्ति तथा मुद्रास्फीति अपेक्षाओं पर लगाम आदि पर बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अंतरराष्ट्रीय साख निर्धारणों निवेश माहौल के हिसाब से इस बजट को बेहद सकारात्मक मानना चाहिए जबकि दूसरी तरफ यदि अर्थव्यवस्था ठीक होती है, जैसे कि उम्मीद है, तो साख बेहतर होने की अच्छी संभावनाएं हैं। ❑

केंद्रीय बजट 2014-15: एक मूल्यांकन

अश्विनी महाजन

नया जनादेश और नयी सरकार के बाद बजट में नयेपन की अपार आकांक्षाएं जनमानस के बीच हिलारें ले रही थीं लेकिन बजट पेश होने के बाद प्रतिक्रियाएं उतनी मजबूत नहीं दिखीं। कई मोर्चों पर थोड़ा बहुत फेरबदल हुआ है लेकिन यह पिछली सरकार के अंतरिम बजट से बहुत अलग नहीं है। इसके पीछे सरकार की अपनी मजबूरियां रही होंगी लेकिन जनता हमेशा अपने पक्ष में ज्यादा राहतों की उम्मीद करेगी और सामाजिक क्षेत्रकों पर ज्यादा व्यय की भी

महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, रुपये की बदहाली, गरीबी का दंश झेल रहे राष्ट्र ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक नई सरकार को जनादेश देकर इन सभी समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी सौंपी है। सरकार ने प्रारंभ से ही यह कहा है कि पिछली सरकार की आर्थिक नीतियों के फलस्वरूप देश के समक्ष खड़ी चुनौतियों के मद्देनजर उन्हें कम से कम दो साल का समय देश को पटरी पर लाने के लिए चाहिए और उसके बाद तीन साल में विकास की संभावनाएं बनेंगी। यह सही भी है कि देश में जिस प्रकार से महंगाई, बेरोजगारी, औद्योगिक उत्पादन में कमी, विदेशी भुगतान संकट और उसके कारण रुपये की बदहाली व्याप्त है, अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए बड़े फैसले करने होंगे। 10 जुलाई 2014 को संसद में पेश बजट वास्तव में इस सरकार का पहला नीति घोषणा का दस्तावेज है, इसलिए इसकी समीक्षा उसी संदर्भ में की जानी चाहिए। यह सही है कि इस बजट में संसाधनों के अभाव के कारण वित्त मंत्री शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सामाजिक सेवाओं के लिए अधिक आवंटन नहीं कर पाए होंगे, लेकिन यह कमी इस बजट की आलोचना का आधार नहीं बन सकती।

यूपीए सरकार के 10 साल के लंबे शासनकाल के बाद नरेंद्र मोदी सरकार के पहले बजट से आम आदमी खासी उम्मीदें लगाकर बैठा था। नौकरी पेशा ही नहीं, अन्य लोग भी 5 लाख रुपये तक आय कर में छूट की और मंहगाई से राहत की उम्मीद, लघु उद्यमी एक्साईज ड्यूटी में छूट की उम्मीद, युवा रोजगार की उम्मीद, उद्योग जगत अर्थव्यवस्था में उठाव की उम्मीद, सहित देश में हर वर्ग बजट से कुछ प्राप्ति की आस लगाए बैठा था। आखिर क्यों न हो, नरेंद्र मोदी ने उन्हें 'अच्छे दिन' लाने का वायदा जो किया था।

बजट से एक दिन पहले आर्थिक सर्वेक्षण ने हालांकि चालू वर्ष में 5.4 फीसदी से 5.9 फीसदी वृद्धि की आस जगाई। सर्वेक्षण में यह भी कहा गया कि पिछले दो वर्षों में विकास में आई मंदी व्यापक आधार वाली थी, लेकिन उसका सर्वाधिक प्रभाव औद्योगिक क्षेत्र पर पड़ा है। खाद्य मुद्रा स्फीति के चलते कुल मुद्रा स्फीति में विशेष कमी नहीं हो पाई। एक सकारात्मक उपलब्धि यह रही कि भुगतान शेष का चालू घाटा दो वर्षों के बेहद चिंतनीय स्तर के बाद 2013-14 में नियंत्रणीय स्तर पर आ पहुंचा। यह भी कहा गया था कि अर्थव्यवस्था के हालात बहुत अच्छे नहीं हैं। हालांकि मंहगाई की दर कुछ घटी जरूर है, लेकिन विनिर्माण अभी भी मुश्किल दौर से गुजर रहा है। मानसून की कमी का कहर भी कृषि को उठाना पड़ सकता है।

2014-15 के बजट का सार

वर्ष 2014-15 के बजट में 5,75,000 करोड़ रुपये के योजना व्यय का प्रावधान रखा गया है। यह 2013-14 के संशोधित अनुमान 4,75,532 करोड़ रुपये के योजना व्यय से 20.9 प्रतिशत अधिक है। बजट 2014-15 में 12,19,892 करोड़ रुपये के गैर योजना व्यय का प्रावधान हैं जो वर्ष 2013-15 के संशोधित अनुमानों 11,14,902 से 9.4 प्रतिशत अधिक है। बजट

लेखक पीजीडीएवी कालेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) के अर्थशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। पुस्तकें:- इकोनोमेट्रिक्स, एग्रीकल्चर इकोनोमिक्स, इन्वायरमेंटल इकोनोमिक्स, एनसाइक्लोपीडीया ऑफ वर्ल्ड इकोनोमिक क्रिसिस (दो भागों में), दत्त एवं सुंदरम: इंडियन इकोनॉमी, इत्यादि। सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आर्थिक विषयों पर लेखन के साथ ही वह जर्नल ऑफ कंटेम्परी इंडियन पालिटी एंड इकोनॉमी के मुख्य संपादक भी हैं। ईमेल: ahwanimahajan@rediffmail.com ब्लॉग: www.ashwanimahajan.blog.co.uk

2014-15 में कुल राजस्व व्यय (योजना तथा गैर योजना) हेतु 15,68,111 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। कुल राजस्व प्राप्तियां 11,89,763 करोड़ रहने का अनुमान है। इस प्रकार राजस्व घाटा 3,78,348 करोड़ रुपये रहेगा जो सकल घरेलू उत्पाद का 2.9 प्रतिशत है। 2014-15 के लिए कुल राजकोषीय घाटा 5,31,177 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो सकल घरेलू उत्पाद का 4.1 प्रतिशत है। ध्यान रहे कि राजकोषीय दायित्व बजट प्रबंधन कानून के अनुसार राजस्व घाटा 2011-12 तक समाप्त होना चाहिए था और राजकोषीय घाटे को 2.5 प्रतिशत तक लाना आपेक्षित था। ऐसा लगता है कि इस उद्देश्य की पूर्ति में अभी कुछ समय और लगेगा।

केंद्र सरकार के गैर योजना व्यय के सूक्ष्म विश्लेषण से पता चलता है कि चार मदों जैसे ब्याज का भुगतान, प्रतिरक्षा, आर्थिक सहायता और सामान्य प्रशासन (जिसमें पुलिस और पेंशन

बजट 2014-15 में कुल राजस्व व्यय (योजना तथा गैर योजना) हेतु 15,68,111 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। कुल राजस्व प्राप्तियां 11,89,763 करोड़ रहने का अनुमान है। इस प्रकार राजस्व घाटा 3,78,348 करोड़ रुपये रहेगा जो सकल घरेलू उत्पाद का 2.9 प्रतिशत है। 2014-15 के लिए कुल राजकोषीय घाटा 5,31,177 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो सकल घरेलू उत्पाद का 4.1 प्रतिशत है।

शामिल हैं), पर 2013-14 के संशोधित अनुमानों के अनुसार कुल 8,77,606 करोड़ रुपये के खर्च का अनुमान है। यह वर्ष 2013-14 में कुल 10,29,252 करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्तियों का 85.3 प्रतिशत है। वर्ष 2014-15 के बजट अनुमानों के अनुसार इन मदों पर कुल 9,50,454 करोड़ रूपए खर्च करने का प्रावधान है, जो वर्ष 2014-15 के अनुमानित राजस्व प्राप्तियों 11,89,763 करोड़ रुपये का 80.0 प्रतिशत है।

यह ध्यान देने योग्य है कि वर्ष 2013-14 के संशोधित अनुमानों के अनुसार ब्याज की अदायगी कुल राजस्व प्राप्तियों का 36.9 प्रतिशत था जो वर्ष 2014-15 के बजट अनुमानों के अनुसार 35.9 प्रतिशत होगा। बाकी 3 प्रमुख मदों जैसे प्रतिरक्षा, आर्थिक सहायता और सामान्य प्रशासन पर वर्ष 2014-15 में 2013-14 के संशोधित अनुमानों से अधिक खर्च होने का अनुमान है।

कितना अलग है यह बजट

यूपीए सरकार के अंतरिम बजट या यों कहें तो 'वोट ऑन एकाउंट' को ही आगे बढ़ाते हुए, नवगठित एनडीए सरकार के वित्त मंत्री अरुण जेटली ने वर्ष 2014-15 के लिए बजट पेश किया है। बढ़ती महंगाई, धीमी अर्थव्यवस्था और राजस्व बढ़ाने के सीमित अवसरों के फलस्वरूप अरुण जेटली के पास बजट में खर्च बढ़ाने की विशेष संभावनाएं मौजूद नहीं थी। अरुण जेटली के बजट के आलोचकों का यह कहना है कि थोड़े फेर-बदल के साथ यह बजट पी. चिदम्बरम् का ही बजट है। बजट में यदि प्राप्तियों का हिस्सा देखा जाए, तो मध्यम वर्ग को आयकर में रियायत देने के कारण आयकर प्राप्ति में 7.2 प्रतिशत का नुकसान है, हालांकि डिवीडेंड वितरण कर को बढ़ाया गया है। कुल मिलाकर देखा जाए तो चिदम्बरम् के बजट से लगभग 22,632 करोड़ रुपये ज्यादा राजस्व प्राप्ति दिखाई गई है लेकिन यह राजस्व प्राप्ति करों से नहीं, बल्कि कर भिन्न राजस्व से प्राप्त होने वाली है, जिसमें लाभांश और लाभ तो हैं ही, अन्य कर भिन्न राजस्व भी लगभग 19,000 करोड़ रुपये अधिक दिखाए गए हैं। गौरतलब है कि चिदम्बरम् के विनिवेश के लक्ष्य 51,925 करोड़ रुपये को आगे बढ़ाते हुए, जेटली ने 58,425 करोड़ रुपये के विनिवेश का लक्ष्य रखा है, इसमें सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के 43,425 करोड़ रुपये के विनिवेश के साथ-साथ पुरानी सरकारी कंपनियों, जिनका प्रबंधन पहले ही निजी हाथों में जा चुका है, के बाकी बचे शेयरों को बेच कर 15,000 करोड़ रुपये वसूलने का भी लक्ष्य है। यह सही है कि सीमाओं के चलते अरुण जेटली बहुत बदलावों के साथ बजट पेश नहीं कर पाए, लेकिन फिर भी हम देखते हैं कि अंतरिम बजट के कुल खर्च 17,63,214 करोड़ रुपये को बढ़ाकर बजट में 17,94,892 करोड़ रुपये के खर्च का प्रावधान किया गया है, यानी अंतरिम बजट की तुलना में कुल खर्च में 1.8 प्रतिशत की वृद्धि की गई है लेकिन सभी प्रकार के खर्चों पर इसका असर एक जैसा नहीं है। प्रतिशत के तौर पर खर्चे में सबसे ज्यादा वृद्धि पर्यटन में हुई है (44 प्रतिशत), उससे कम सड़क यातायात और राजमार्गों (10 प्रतिशत) और कृषि (3.7 प्रतिशत) में हुई है। कुछ-कुछ वृद्धि शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और सब्सिडी में देखने को मिल रही हैं। विशेषतौर पर इस बजट में पर्यावरण और वन क्षेत्र में कमी देखने को मिली है।

कैसा हो बजट?

गरीब अपनी हालत सुधरने का स्वप्न संजो रहा है, तो बेरोजगार रोजगार के अवसर पाने की अपेक्षा रखता है। मध्यम वर्ग समेत सभी महंगाई से निजात पाना चाहते हैं, तो देश का उद्योग जगत चाहता है कि जल्दी से अर्थव्यवस्था में सुस्ती कम हो और देश ऊंची वृद्धि प्राप्त कर पाए। बजट की यदि समीक्षा करनी हो तो जाहिर है कि उसे लोगों की आकांक्षाओं के संदर्भ में ही करना होगा।

रोजगार

जनगणना 2011 के अनुसार आज 25 से 34 वर्ष की आयु के हमारे 4.7 करोड़ युवा

यह सही है कि सीमाओं के चलते अरुण जेटली बहुत बदलावों के साथ बजट पेश नहीं कर पाए, लेकिन फिर भी हम देखते हैं कि अंतरिम बजट के कुल खर्च 17,63,214 करोड़ रुपये को बढ़ाकर बजट में 17,94,892 करोड़ रुपये के खर्च का प्रावधान किया गया है, यानी अंतरिम बजट की तुलना में कुल खर्च में 1.8 प्रतिशत की वृद्धि की गई है लेकिन सभी प्रकार के खर्चों पर इसका असर एक जैसा नहीं है।

बेरोजगार हैं। आदिवासी युवाओं में बेरोजगारी 22 प्रतिशत और दलित युवाओं में 21 प्रतिशत है। ये युवा आज की वृद्धि के फायदों से वंचित हैं। उन्हें रोजगार चाहिए।

ऐसे में बजट से यह अपेक्षा थी कि कुछ नवीन उपायों के माध्यम से रोज़गार पैदा करने वाले क्षेत्रों को बढ़ावा देने का प्रयास होगा। लघु और कुटीर उद्योगों के लिए कुछ प्रावधान इस बजट में अवश्य हैं, जैसे सरकारी खरीद, तकनीकी विकास इत्यादि। यदि इस बजट को पैमाना बनाया जाए तो ऐसा लगता है कि बड़ी मात्रा में रोज़गार निर्माण के बारे में इच्छाशक्ति का अभाव है।

विनिर्माण

पिछले लगभग दो दशकों की वृद्धि का अनुभव यह रहा है कि जीडीपी में कृषि का

हिस्सा तो 25 प्रतिशत से कम होकर 13.5 प्रतिशत रह गया है और सेवाओं का हिस्सा 60 प्रतिशत तक पहुंच गया है। विनिर्माण समेत औद्योगिक उत्पादन का हिस्सा अभी भी 27.5 प्रतिशत बना हुआ है। जिसमें विनिर्माण का हिस्सा 15 प्रतिशत ही है। सरकारी हलकों में बार-बार इसे 25 प्रतिशत तक ले जाने की बात कही जाती रही है।

विनिर्माण का हिस्सा जीडीपी में स्थिर रहने का मतलब यह है कि विनिर्माण में वृद्धि जीडीपी की वृद्धि के लगभग बराबर रही लेकिन पिछले 3 सालों में स्थिति बदली है। 2011-12 और 2012-13 में विनिर्माण की वृद्धि शून्य के नजदीक रही और पिछले साल 2013-14 में तो यह घटकर ऋणात्मक 0.7 प्रतिशत तक पहुंच गयी।

बजट से यह स्वभाविक अपेक्षा थी कि इससे विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा दिया जाएगा। यह सही है कि इस बजट में विशेष आर्थिक क्षेत्रों को बढ़ावा देने, 8 राष्ट्रीय निवेश एवं विनिर्माण जोन

विनिर्माण का हिस्सा जीडीपी में स्थिर रहने का मतलब यह है कि विनिर्माण में वृद्धि जीडीपी की वृद्धि के लगभग बराबर रही लेकिन पिछले 3 सालों में स्थिति बदली है। 2011-12 और 2012-13 में विनिर्माण की वृद्धि शून्य के नजदीक रही और पिछले साल 2013-14 में तो यह घटकर ऋणात्मक 0.7 प्रतिशत तक पहुंच गयी।

बनाने दिल्ली, मुंबई, इंडस्ट्रीयल कॉरीडोर समेत 4 इंडस्ट्रीयल कॉरीडोरों का निर्माण, मुख्य विनिर्माण उद्योगों में अतिरिक्त क्षमता के निर्माण समेत कई उपाय बताए गए हैं लेकिन विडम्बना का विषय यह है कि विनिर्माण में गिरावट के मुख्य कारणों की बात नहीं की गई है।

वास्तव में देश में विनिर्माण में गिरावट का मुख्य कारण ऊंची ब्याज दरें हैं। पिछले काफी समय से बढ़ती मंहगाई के चलते भारतीय रिजर्व बैंक लगातार रैपो रेट और रिवर्स रैपो रेट को बढ़ाता रहा है। ऊंची ब्याज दरों के कारण केवल नए निवेश ही नहीं रुके, बल्कि घरों, घरेलू साजोसामान और ऑटो मोबाईल सहित उत्पादों की मांग भी घटने लगी है। आज समस्या उत्पादन क्षमता की नहीं, बल्कि मांग की ज्यादा है। जरूरत इस बात की है कि मंहगाई को थामा जाए और उससे ब्याज दरों को कम किया जाए। यह सही है कि सरकारी खर्चों में ज्यादा वृद्धि इस बजट में नहीं की गई है और इस कारण से पी. चिदम्बरम के अंतरिम बजट के अनुरूप ही राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.1 प्रतिशत के स्तर पर रखने की चुनौती अरुण जेटली स्वीकार कर सके हैं।

विनिर्माण को प्रभावित करने वाला सबसे ज्यादा बड़ा कारण आयात होते हैं। यह मात्र संयोग नहीं है कि पिछले लगभग 3 साल से हमारे आयात द्रुत गति से बढ़ रहे हैं और विनिर्माण की वृद्धि शून्य पर आ गई है। स्वाभाविक ही है जब इलेक्ट्रॉनिक्स, अन्य उपभोक्ता उत्पाद, पॉवर प्लांट, मशीनरी और टेलीकॉम संयंत्र विदेशों से ज्यादा आयात होंगे, तो देश में विनिर्माण घटेगी ही। आज जरूरत इस बात की है कि आयात शुल्कों को बढ़ाया जाए, ताकि विदेशों से आने वाले साजोसामान का आयात हातोत्साहित हो। गौरतलब है कि अंतर्राष्ट्रीय समझौतों में हमने आयात शुल्कों को घटाना स्वीकार किया हुआ है लेकिन आयात शुल्क उससे भी ज्यादा कम रखे जाते रहे हैं। आज विनिर्माण को बचाने के लिए जरूरी है कि आयात शुल्कों को अधिक से अधिक रखा जाए। आज हमारा चीन के साथ व्यापार घाटा 40 अरब डॉलर से भी ज्यादा हो चुका है, उससे कम करने की जरूरत है।

आयातों को कम करते हुए हम न केवल विनिर्माण को बढ़ावा दे सकते हैं बल्कि रुपये को भी मजबूत कर सकते हैं क्योंकि आयात कम होने से डॉलर की मांग घटेगी। रुपया मजबूत होने से हमारी उद्योगों की लागत कम होगी, क्योंकि विदेशों से आने वाला कच्चा माल और उत्पादन में इस्तेमाल होने वाला अन्य साजोसामान सस्ता हो जाएगा। इसके अलावा कंपनियों ने जो विदेशों से ऋण उठा रखे हैं उनकी अदायगी भी घटेगी। गौरतलब है कि 2012-13 में हमारे आयात जीडीपी के 28-29 प्रतिशत के आसपास थे। यदि रुपया 10 प्रतिशत मजबूत होता है तो हमारी मंहगाई लगभग 3 प्रतिशत तक घट सकती है, जिससे उपभोक्ताओं को तो राहत मिलेगी ही, साथ ही विनिर्माण भी आगे बढ़ेगी।

बजट कोई अंतिम दस्तावेज नहीं होता। वित्तमंत्री चाहें तो इस वित्तीय वर्ष के दौरान भी सही कदम उठाते हुए आयातों को घटाकर रुपये को मजबूत करते हुए, मंहगाई को थामकर ब्याज दरें घटाते हुए विनिर्माण क्षेत्र को प्रगति की राह पर ले जा सकते हैं।

महंगाई

मंहगाई के मुद्दे पर बजट में एक अच्छी बात यह है कि नए कर लगाकर बोझ बढ़ाने का प्रयास नहीं हुआ और साथ ही साथ खर्चों को थामते हुए राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.1 प्रतिशत तक सीमित रखने का संकल्प लिया गया है। दीर्घकाल में सरकारी खर्चों को थामकर और सब्सिडी को युक्तिसंगत बनाकर ही मंहगाई को रोका जा सकता है लेकिन पूर्व की भांति कृषि को इस बार भी उपेक्षित रखा गया है। गौरतलब है कि कृषि पर बजट का एक प्रतिशत भी आवंटित नहीं किया गया। गौरतलब है कि कृषि में विकास से ही खाद्य पदार्थों का उत्पादन बढ़ सकता है, जिससे महंगाई पर काबू पाया जा सकता है।

बजट में सामाजिक क्षेत्रकों पर व्यय

हर बजट में सरकार सामाजिक क्षेत्रकों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, महिला एवं बाल विकास, जनजाति कल्याण इत्यादि के बारे में बड़ी-बड़ी

पिछले एक दशक में सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि पर आवंटन बढ़ाने का कभी कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया और इन क्षेत्रकों पर हर बजट में 10 प्रतिशत से भी कम आवंटित किया जाता रहा है। सरकार की सामाजिक सेवाओं की प्रति इस बेरुखी के कारण देश में मानव विकास की प्रक्रिया बाधित हो रही है।

बातें करती हैं लेकिन पिछले कई वर्षों से देखा जा रहा है कि सरकार इन सामाजिक सेवाओं पर कभी भी कुल बजट का 9.5 प्रतिशत से ज्यादा भाग खर्च नहीं करती।

पिछले एक दशक में सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि पर आवंटन बढ़ाने का कभी कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया और इन क्षेत्रकों पर हर बजट में 10 प्रतिशत से भी कम आवंटित किया जाता रहा है। सरकार की सामाजिक सेवाओं की प्रति इस बेरुखी के कारण देश में मानव विकास की प्रक्रिया बाधित हो रही है। यह हमारे विकास के सपने को धूमिल कर सकती है। तालिका में बजट में सामाजिक क्षेत्रकों पर किए जा रहे खर्च का एक आकलन किया गया है। जबकि वर्ष 2013-14 में 16.65 लाख करोड़ रुपये का बजट बनाया गया था

तालिका 1: बजट में सामाजिक क्षेत्रकों पर व्यय

	2012-12 वास्तविक	*2013-14 बजट अनुमान*	*2013-14 संशोधित अनुमान*	*2014-15 बजट अनुमान*
शिक्षा				
योजना	55,524	65,857	61,857	68,366
गैर योजना	10,530	13,594	12,764	14,043
कुल	**66,054**	**79,451**	**74,621**	**82,409**
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण				
योजना	21,488	30,234	23,915	33,028
गैर योजना	4,360	4,303	4,552	5,013
कुल	**25,848**	**34,537**	**28,467**	**38,041**
ग्रामीण जल आपूर्ति				
योजना	12,963	15,260	12,000	15,256
गैर योजना	5	6	6	7
कुल	**12,968**	**15,266**	**12,006**	**15,263**
महिला एवं बाल विकास				
योजना	16,953	20,350	18,200	20,807
गैर योजना	83	90	86	94
कुल	**17,036**	**20,440**	**18,286**	**20,901**
अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग का कल्याण				
योजना	4,398	5,412	4,612	6,156
गैर योजना	17	19	18	48
कुल	**4,415**	**5,431**	**4,630**	**6,204**
जनजातीय कल्याण				
योजना	3,056	4,279	3,879	4,479
गैर योजना	16	17	17	19
कुल	**3,072**	**4,296**	**3,896**	**4,498**
अल्पसंख्यक				
योजना	2,158	3,511	3,111	3,701
गैर योजना	16	20	20	23
कुल	**2,174**	**3,531**	**3,131**	**3,724**
विकलांगों का कल्याण				
योजना	204	473	383	565
गैर योजना	47	50	50	68
कुल	**251**	**523**	**433**	**633**
सामाजिक क्षेत्र का कुल व्यय				
योजना	1,16,744	145,376	1,27,957	1,52,358
गैर योजना	15,074	18,099	17,513	19,315
कुल	**1,31,818**	**16,3,475**	**1,45,470**	**1,71,673**
कुल योजना एवं गैर योजना व्यय				
योजना	4,13,625	5,55,322	4,75,532	5,75,000
गैर योजना	9,96,742	11,09,975	11,14,902	12,19,892
कुल	**14,10,367**	**16,65,297**	**15,90,434**	**17,94,892**
सामाजिक क्षेत्र के व्यय कुल व्यय के प्रतिशत में				
योजना	28.22	26.18	26.91	26.50
गैर योजना	1.51	1.63	1.57	1.58
कुल	9.35	9.82	9.15	9.56

स्रोतः *वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, व्यय बजट (2014-15), खंड I और खंड II से परिकलित*

और 2014-15 का बजट 17.95 लाख करोड़ का है। यानी 2014-15 में 7.8 प्रतिशत अतिरिक्त खर्च किया जाना अपेक्षित है। सामाजिक क्षेत्रकों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, पेयजल तथा स्वच्छता, महिला एवं बाल विकास, अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और विकलांगों के कल्याण हेतु 2013-14 के बजट में 163475 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे, 2014-15 के बजट में 1,71,673 करोड़ रुपये आवंटित हुए यानि मात्र 0.5 प्रतिशत की वृद्धि। गौरतलब है कि चिदम्बरम् ने अपने अंतरिम बजट में सामाजिक क्षेत्रकों पर पहले कम राशि आवंटित की थी। पिछला अनुभव यह बताता है कि वास्तव में इन क्षेत्रकों पर खर्च बजट प्रावधानों से भी कहीं कम हो पाता है। उदाहरण के लिए वर्ष 2013-14 के बजट में कुल बजट का 9.82 प्रतिशत सामाजिक क्षेत्रकों के लिए आवंटित किया गया था, लेकिन वर्ष 2013-14 के संशोधित अनुमान बता रहे है कि इन क्षेत्रकों पर 9.15 प्रतिशत ही खर्च हुआ।

शिक्षा और स्वास्थ्य हो अथवा महिला या बाल विकास, पेयजल उपलब्धता हो अथवा पिछड़े दलितों के उत्थान के लिए प्रयास, ये सभी सामाजिक क्षेत्र के खर्च हमेशा की भांति इस बजट में भी उपेक्षित रहे हैं। सामाजिक सेवाओं पर खर्च बढ़ाने की हर बार बात की जाती है, लेकिन विडम्बना का विषय यह है कि इन सभी प्रकार की मदों पर कुल मिलाकर खर्च 9 से 10 प्रतिशत के आस पास ही रहता है। इस साल भी वे 9.56 प्रतिशत रहे। पिछले 10 सालों में यह कभी भी 10 प्रतिशत से ऊपर नहीं जा सका। यदि हम अपनी युवा शक्ति का सही उपयोग करना चाहते हैं तो इन मदों पर खर्च बढ़ाने की जरूरत है।

विदेशी भुगतान संकट और कमजोर रुपया

पिछले काफी समय से हमारा विदेशी भुगतान का घाटा ज्यादा होने के कारण रुपये पर दबाव बनता रहा है। रुपये के कमजोर होने से देश में मंहगाई तो बढ़ती ही है, हमारे उद्योगों की लागतें भी बढ़ती है। रुपया मजबूत होने से हमारी उद्योगों की लागत कम होगी, क्योंकि विदेशों से आने वाला कच्चा माल और उत्पादन में इस्तेमाल होने वाला अन्य साजोसामान सस्ता हो जाएगा। इसके अलावा कंपनियों ने जो विदेशों से ऋण उठा रखे हैं उनकी अदायगी भी घटेगी। इसके लिए जरूरी है कि हम अपने आयातों को थामें। इसका एक अन्य लाभ यह भी होगा कि इससे हमारे देश में औद्योगिक उत्पादन बढ़ेगा।

यह सही है कि बढ़ते शहरीकरण के कारण देश को स्मार्ट शहर चाहिए, लेकिन शहर और गांव दोनों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को भी बढ़ाने की उतनी ही जरूरत है। यह भी जरूरी है कि हमारी 30 प्रतिशत जनसंख्या जो गरीबी रेखा से नीचे रहती है, उसको कमाने के पूरे अवसर मिलें। जनगणना के आंकड़े बताते है कि आज के भूमंडलीकरण के इस युग में गरीबों, वंचितों, दलितों और आदिवासियों की जमीनें छिन रही हैं। इस प्रवृत्ति को रोकने की जरूरत है, इसके लिए आज के विकास का मॉडल बदला जाए। एफडीआई और बड़े कॉरपोरेट घरानों पर आश्रित विकास, रोजगार विहीन विकास है, गरीबी को बढ़ाने वाला है और वंचितों को उनके बचे खुचे संसाधनों से भी च्युत करने वाला है। लेकिन दुर्भाग्य का विषय यह है कि यह बजट भी पूर्व बजटों की भांति उसी ढर्रे पर दिखाई देता है। ❑

संसद में बजट

संसद में हर वर्ष आम बजट प्रस्तुत किया जाता है। सामान्यत: आम बजट (आम बजट) लोकसभा में हर वर्ष 28 फरवरी को वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत करने की परंपरा है लेकिन अपरिहार्य परिस्थितियों में, जिनमें नई लोकसभा का गठन होने से पूर्व जब किसी लोकसभा का कार्यकाल समाप्त होने को होता है तब तीन महीने के लिए अनुदान मांगें प्रस्तुत की जाती हैं। नई लोकसभा का गठन होने के बाद संसद का बजट सत्र प्रारंभ होता है जिसमें रेल बजट और सामान्य बजट नई सरकार प्रस्तुत करती है।

प्रत्येक वित्तीय वर्ष के संबंध में भारत सरकार का वार्षिक वित्तीय विवरण या प्राक्कलित आय और व्यय का विवरण (जिसे इसके पश्चात् 'आय-व्ययक' कहा गया है सभा में राष्ट्रपति के निर्देश पर निर्धारित तिथि को रखा जाता है। यह लोकसभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियम 204 के अंतर्गत होता है।

जिस दिन आय-व्ययक (आम बजट) प्रस्तुत किया जाता है उस दिन उस पर कोई चर्चा नहीं होती।

नियम 206 में अनुदानों की मांगों के बारे में प्रावधान किया गया है। नियम 207 के अनुसार आय-व्ययक (आम बजट) पर चर्चा उसके प्रस्तुत किए जाने के बाद अध्यक्ष द्वारा नियत किए जाने वाले दिन और समय पर होती है। चर्चा के अंत में उसका उत्तर देने का वित्तमंत्री को सामान्य अधिकार होता है।

नियम 208 के अंतर्गत लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के नेता (सदन के नेता) की सलाह से अनुदानों की मांगों पर चर्चा और मतदान के लिए उतने दिन नियत करते हैं जो लोकहित से सुसंगत हो। किसी मांग को कम करने के लिए भी प्रस्ताव रखे जा सकते हैं किंतु किसी अनुदान की मांग को कम करने के प्रस्तावों में संशोधन की अनुमति नहीं दी जाती है। एक ही अनुदान की मांग से संबंधित कई प्रस्ताव दिए जाने पर उन पर उस क्रमानुसार चर्चा की जाती है जिसमें कि उनसे संबंधित शीर्ष आय-व्ययक में दिए हों। नियम 209 के अनुसार किसी मांग की राशि कम करने के लिए निर्धारित तरीकों से कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत किए जा सकते हैं लेकिन नियम 210 के अनुसार कटौती प्रस्तावों की ग्राह्यता के लिए निर्धारित शर्तें पूरी होनी चाहिए। नियम 211 के अनुसार लोकसभा अध्यक्ष कटौती प्रस्तावों की ग्राह्यता के बारे में निर्णय करता है।

नियम 213 से 217 के अंतर्गत आय व्ययक का भागों में प्रस्तुतिकरण, लेखानुदान आदि अनुदान तथा प्रत्ययानुमान, अनुपूरक अनदानों पर वाद-विवाद तथा सांकेतिक अनुदान की प्रक्रिया को पूरा किया जाता है।

विनियोग विधेयक के बारे में नियम 218 के अंतर्गत प्रक्रिया निर्धारित है। जबकि वित्त विधेयक के बारे में नियम 219 में प्रावधान किए गए हैं।

- देवेन्द्र उपाध्याय

GS ACADEMY

हिन्दी माध्यम

चुने उन्हें जिनकी प्रमाणिकता निर्विवाद है।

प्रमाणिक, विश्वसनीय एवं सारगर्भित

कक्षा कार्यक्रम

- नवीन, परिवर्द्धित, परिष्कृत एवं सारगर्भित पाठ्यक्रमानुसार पाठ्य सामग्री।
- साप्ताहिक परीक्षण कार्य, मूल्यांकन एवं प्रश्न विश्लेषण विशेष शिक्षक समूह द्वारा।
- प्रत्येक खण्डों की पाठ्य सामग्री अभ्यास पुस्तिका (Practice Booklet) सहित।
- कक्षा संबंधी संदेह (Doubt) निराकरण हेतु विशिष्ट टीम।

ज्ञान, अनुभव एवं परिश्रम के त्रिकोण से निर्मित अतिविशिष्ट टीम

आलोक रंजन
DIGMANI EDUCATION
भूगोल, पर्यावरण, आपदा प्रबंधन

राजेश मिश्रा
SARASWATI IAS
राजव्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय संबंध

रजनीश राज
SIHANTA IAS
इतिहास एवं संस्कृति

धर्मेन्द्र कुमार
PATANJALI IAS
नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिरूचि

उपलब्ध कक्षाएँ

- सामान्य अध्ययन (मुख्य+प्रारंभिक परीक्षा)
- सी-सैट
- निबंध लेखन
- साक्षात्कार

B-17, 1st Floor Dr. Mukherjee Nagar

011-45098365, 8376963001, 8376845001

Email-gsacademy.edu@gmail.com www.gsacademyedu.in

YH - 131/2014

संतुलित और विकासोन्मुखी रेल बजट

अरविंद कुमार सिंह

लगातार बढ़ते वित्तीय घाटे और खस्ताहाल संसाधनों के बीच जूझते रेलवे को उबारकर इसका चेहरा बदलने की बात तो अर्से से विद्वानों के बीच चर्चा का विषय बन रही थी लेकिन इसके लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत थी जिसका अब तक अभाव देखा गया। नयी सरकार अपने बजट ऐसे साहसिक कदम उठाती दिखाई दे रही है। फिर भी रेलवे की अर्थव्यवस्था को पटरी पर वापस लाने में फिलहाल वर्षों लगेंगे। हालांकि इस बजट के बाद बेहतर यात्री सुविधाओं और अत्याधुनिक रेलवे का सपना साकार होने की उम्मीद तो जगी ही है

संसद में रेल मंत्री डी.वी.सदानंद गौड़ा ने जो अपना पहला रेल बजट पेश किया है वह मौजूदा हालात में एक बेहतर और विकासोन्मुखी रेल बजट माना जा सकता है। रेलवे कठिन चुनौतियों से जूझ रही है तथा सुरक्षा और संरक्षा के साथ संसाधनों की तंगी ने इस विशाल संस्था के सामने कई सवाल खड़े किए हैं लेकिन इन सारी चुनौतियों को सामने रख कर रेल मंत्री ने ठोस प्राथमिकता तय की है। इसी नाते रेल बजट में सुरक्षा व संरक्षा से लेकर तेज रफ्तार, यात्री सुविधाओं और पारदर्शिता के प्रति उत्साह दिखता है। इसमें कई ठोस और व्यावहारिक पहल की गई हैं, जिससे भविष्य में रेलवे की सेहत तो ठीक होगी ही, यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकेंगी। विश्व की सबसे बड़ी प्रणालियों में एक भारतीय रेल आज रोज ढाई करोड़ मुसाफिरों को गंतव्य तक पहुंचा रही है। दो साल पहले ही यह 1007 मिलियन माल ढोते हुए चीन, अमेरिका और रूस के एक बिलियन टन के क्लब का हिस्सा बन चुकी है और तमाम नए कीर्तिमान बना रही है। देश की लाइफ लाइन कही जाने वाली भारतीय रेल में पहली बार जोर देकर गति विस्तार की बात कही गई है। 9 रूटों दिल्ली-आगरा, दिल्ली-चण्डीगढ़, दिल्ली-कानपुर, कानपुर-नागपुर, मैसूर-बैंगलुरु-चेन्नई रूट पर हाईस्पीड ट्रेनें चलाने की घोषणा की गई है। इनकी गति 160 से 200 किमी प्रति घंटा होगी। हाल में दिल्ली-आगरा के बीच गति 160 किमी की गई है। इसी तरह अहमदाबाद से मुंबई के बीच बुलेट ट्रेन चलाने का भी ऐलान हुआ है जिसके लिए 60 हजार करोड़ चाहिए। पहले ही इसके सारे अध्ययन पूरे हो चुके हैं। रेल मंत्री ने हाई स्पीड ट्रेनें चलाना प्राथमिकता बताया है। साथ ही संसाधनों को जुटाने के लिए तमाम विकल्पों में पीपीपी मॉडल पर खास जोर दिया गया है। हाई स्पीड ट्रेनें भी इसी मॉडल के तहत साकार होंगी।

रेल मंत्री ने बजट में वित्तीय अनुशासन पर खास जोर दिया है। इसी नाते नई रेल परियोजनाएं घोषित करने के बजाय चालू परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर धन देते हुए जल्दी पूरा करने पर जोर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेल बजट की सराहना करते हुए कहा कि पहली बार सही मायने में भारतीय रेल बनने जा रही है जिसमें पूरे देश को समान भाव से देखा गया है। और इसमें विजन, रफ्तार और सोच भी है। वास्तव में रेल बजट में सात प्रमुख क्षेत्रों पर फोकस किया गया है। वे हैं सुरक्षाएं परियोजना क्रियान्वयन, यात्री सुविधाएं और खान पान सेवा, वित्तीय अनुशासन, संसाधन प्रबंधन, आईटी पहल और पारदर्शिता के साथ रेल प्रणाली में सुधार। इनको साकार करने के लिए एक ठोस रोड मैप भी बनाया गया है। रेलवे की 2014-15 की वार्षिक योजना 65,445 करोड़ रुपये की है। इसमें आंतरिक संसाधन से 15,350 करोड़ रुपये और बजटीय समर्थन 30,100 करोड़ रुपये है। रेल बजट प्रस्तुत करते हुए रेल मंत्री ने स्वीकार किया है कि आज केवल चालू परियोजनाओं के लिए रेलवे को पांच लाख करोड़ रुपये की जरूरत है। इसमें से रेल लाइन से संबंधित 347 लंबित रेल परियोजनाओं को

लेखक राज्य सभा टीवी में ब्यूरो चीफ हैं। वह परिवहन व संचार विषय के विशेषज्ञ है तथा रेल मंत्रालय में रेलवे बोर्ड के परामर्शदाता रह चुके हैं। इससे पहले चौथी दुनिया, अमर उजाला, जनसत्ता एक्सप्रेस तथा इंडियन एक्सप्रेस में काम किया। आकाशवाणी, दूरदर्शन लोकसभा टीवी व कई अन्य चैनलों से भी जुड़े रहे। 'भारतीय डाक: सदियों का सफरनामा' पुस्तक हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू तथा कई अन्य भाषाओं में प्रकाशित। ईमेल: arvindksingh.rstv@gmail.com

पूरा करने के लिए 1.82 लाख करोड़ रुपये की भी राशि चाहिए। अतीत का यही अनुभव रहा है कि संसाधनों का इंतजाम किए बिना ही हर रेल बजट में नई परियोजनाएं शामिल करने की परंपरा सी बन गई थी। 2013-14 के रेल बजट में ही 25,000 करोड़ से अधिक लागत की 23 नई रेल परियोजनाएं शामिल कर ली गई थीं। यही नहीं 2014-15 के अंतरिम रेल बजट में ही 71 नई रेलगाड़ियों की घोषणा कर दी गयी थी। आज रेलवे कई तरह के दबाव और वित्तीय तनावों से गुजर रही है। खास तौर पर बढ़ता संचालन व्यय बेलगाम होता जा रहा है। 2013-14 में कुल कमाई 1.30 लाख करोड़ रुपये थी और संचालन व्यय रहा 1.30 लाख करोड़ रुपये। रेलवे की सकल प्राप्तियों से ही ईंधन, वेतन, पेंशन और तमाम दूसरे जरूरी काम संचालित होते हैं। इस समय 40 फीसदी रेलवे नेटवर्क दयनीय दशा में है, दबाव में है जिस पर लगभग 80 फीसदी यातायात चल रहा है। यह हाई डेंसिटी नेटवर्क (एचडीएन) अतिसंतृप्त हो चुका है लिहाजा अनुरक्षण के लिए समय देने, बेहतर उत्पादकता एवं संरक्षा के लिए इन्हें अपग्रेड किए जाने और इनकी क्षमता का विस्तार किए जाने की अत्यंत आवश्यकता है। फिर भी रेल पथ के दबाव की दशा देखे बिना नई रेलगाड़ियों की घोषणा होती रहती है। यात्री गाड़ियों की संख्या 2001-02 में 8897 थी जिनकी संख्या बढ़ कर आज 12,335 हो गई है।

2013-14 में रेलवे की कुल आमद 1.30 लाख करोड़ रुपये थी और संचालन व्यय रहा 1.30 लाख करोड़ रुपये। रेलवे की सकल प्राप्तियों से ही ईंधन, वेतन, पेंशन और तमाम दूसरे जरूरी काम संचालित होते हैं। इस समय 40 फीसदी रेलवे नेटवर्क दयनीय दशा में है, दबाव में है, जिस पर लगभग 80 फीसदी यातायात चल रहा है। यह हाई डेंसिटी नेटवर्क (एचडीएन) अतिसंतृप्त हो चुका है लिहाजा अनुरक्षण के लिए समय देने, बेहतर उत्पादकता एवं संरक्षा के लिए इन्हें अपग्रेड किए जाने और इनकी क्षमता का विस्तार किए जाने की अत्यंत आवश्यकता है।

रेलवे यात्री सेवाओं का विस्तार करता जा रहा है लेकिन इन सेवाओं पर रेलवे का घाटा काफी चिंताजनक गति से बढ़ता जा रहा है। 2001-02 में यात्री सेवाओं पर जो घाटा 4955 करोड़ रुपये था वह अब 26,000 से 30,000 करोड़ रुपये के बीच तक पहुंच गया है। रेलवे में यात्री गाड़ियां कुल गाड़ियों का 70 फीसदी के करीब हैं पर राजस्व में उनका योगदान 28 फीसदी से भी कम है। वहीं 30 फीसदी मालगाड़ियां कुल राजस्व में 65 प्रतिशत का योगदान दे रही हैं। जाहिर सी बात है कि मौजूदा दशा को बदले बिना रेलवे की आमदनी और विकास परियोजनाओं के संतुलन को नही बिठाया जा सकता है।

आज भारतीय रेल को रेलगाड़ियों की गति को बढ़ाने, यात्री और माल टर्मिनलों का आधुनिकीकरण करने, आधुनिक चल स्टॉक को सेवा में लगाने और ग्राहक केंद्रित सेवाएं उपलब्ध कराने की जरूरत है। उसे सबसे अधिक जोर संरक्षा, सुरक्षा और आधुनिकीकरण पर देने की दरकार भी है लेकिन सीमित संसाधन हैं फिर भी भारतीय रेल को आधुनिकीकरण के लिए अगले पांच साल में 5.60 लाख करोड़ रुपये चाहिए और अगर 160 से 200 किमी की रफ्तार से गाड़ियां चलानी हैं तो 2000 से 12,000 हार्सपावर के बिजली इंजनों और 5500 हार्स पावर के डीजल इंजन भी चाहिए। यानी संसाधन सीमित हैं और इसी नाते जोर पीपीपी पर दिया गया है। सार्वजनिक परिवहन का साधन होने के नाते रेलवे के पास अपने विकास और विस्तार के लिए दो ही रास्ते बचे हैं। पहला यह कि सरकार मदद करे या पीपीपी, एफडीआई लाये और दूसरा, किराया और भाड़ा बढ़ाया जाये। एफडीआई पर राजनीतिक सहमति अभी बननी है, जबकि पीपीपी के महत्व को स्वीकारा गया है लेकिन रेलवे में इसका अनुभव अतीत में ठीक नहीं रहा हैं।

पीपीपी और अतिरिक्त धन अर्जन की योजनाएं रेलवे को अपेक्षित सफलता नहीं दे सकीं है। उदारीकरण के बाद 1992 में रेलवे ने *बोल्ट* और *ओन योर वैगन* स्कीम शुरू करते समय सालाना 500 करोड़ रुपये निवेश की उम्मीद की थी, लेकिन हासिल हुआ 40 करोड़ रुपये से भी कम। फिर नए माडल बने लेकिन वे कारगर नही रहे। कुछ सरकारी इच्छाशीलता की कमी से धराशायी हो गए तो कुछेक कानूनी पचड़ों के नाते। निजी निवेश के लिए तमाम प्रयासों के बाद भी रेलवे के खाते में 2002 से 2010 के दौरान महज 4428 करोड़ रुपये का राजस्व आ सका जो इतने विशाल संगठन के लिए ऊंट के मुह में जीरा से अधिक नहीं माना जा सकता है लेकिन रेलवे को बंदरगाह कनेक्टिविटी परियोजनाओं में पीपीपी से लाभ मिला। हालांकि पीपीपी से बनी देश की पहली एयरपोर्ट मेट्रो लाइन की विफलता ने कई सवाल खड़े किए हैं लेकिन रेलवे ने अतीत की इन विफलताओं से सबक लेते हुए पीपीपी के क्षेत्र में जरूरी बदलावों की पहल की है ताकि निजी क्षेत्र को अपने निवेश पर लाभ का भरोसा हो सके और वे रेलवे की ओर आकर्षित हो सकें। रेल बजट के पहले संसद के समक्ष अपने अभिभाषण में राष्ट्रपति ने कहा था कि रेलवे के आधुनिकीकरण और नवीकरण के काम को सबसे ऊपर रखते हुए सरकार हाई स्पीड ट्रेनों की हीरक चतुर्भुज परियोजना सहित कई कामों पर जोर देगी। इसी तरह जल्दी खराब हो जाने वाले कृषि उत्पादों के परिवहन के लिए देश में विशेष कृषि नेटवर्क वाले माल ढुलाई गलियारे होंगे और नई वित्तीय पद्धतियों से रेलों में निवेश में वृद्धि लाई जाएगी तथा पहाड़ी राज्यों और देश के उत्तर पूर्वी राज्यों में रेलवे के विस्तार के साथ रेल संरक्षा प्रणाली के आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। रेल बजट इस दिशा में आगे बढ़ता दिख रहा है। रेलगाड़ियों की गति बढ़ाने की दिशा में की गई पहल काफी अहम कही जा सकती है क्योंकि इस मसले को लेकर राजनीतिक इच्छाशीलता का अभाव रहा है, भारतीय रेल दुनिया की हालत

पीपीपी से बनी देश की पहली एयरपोर्ट मेट्रो लाइन की विफलता ने कई सवाल खड़े किए हैं लेकिन रेलवे ने अतीत की इन विफलताओं से सबक लेते हुए पीपीपी के क्षेत्र में जरूरी बदलावों की पहल की है ताकि निजी क्षेत्र को अपने निवेश पर लाभ का भरोसा हो सके और वे रेलवे की ओर आकर्षित हो सकें। रेल बजट के पहले संसद के समक्ष अपने अभिभाषण में राष्ट्रपति ने कहा था कि रेलवे के आधुनिकीकरण और नवीकरण के काम को सबसे ऊपर रखते हुए सरकार हाई स्पीड ट्रेनों की हीरक चतुर्भुज परियोजना सहित कई कामों पर जोर देगी।

को देखते हुए रफ्तार में अभी भी बहुत धीमी है। कई देशों में 350 किमी रफ्तार की गाड़ियां चल रही हैं लेकिन भारत में सबसे तेज रफ्तार केवल 160 किमी है और वह भी दिल्ली. आगरा खंड पर। इसकी एक बड़ी वजह ज्यादातर रेल खंडों पर यातायात का भारी दबाव है। ऐसा माना जा रहा है कि जल्दी साकार होने जा रहे समर्पित माल ढुलाई गलियारे से इस दशा में बदलाव आएगा। सरकार पहले ही 2012 में राष्ट्रीय हाई स्पीड अथारिटी बना चुकी है और समर्पित माल ढुलाई गलियारे 2017 से 2019 के बीच आकार ले लेगा लेकिन दूसरा पक्ष यह है कि रेलवे को आधुनिकीकरण के लिए भारी राशि चाहिए। आधुनिकीकरण के लिए बनी उच्च स्तरीय समिति ने पांच सालों में 19000 किमी रेल लाइनों के नवीनीकरण और 11,250 पुलों को आधुनिक बनाने की सिफारिश की थी ताकि रफ्तार के साथ अधिक यात्री और माल ढुलाई हो सके। साथ ही सिगनलिंग प्रणाली को अत्याधुनिक बनाने और नई पीढ़ी के ताकतवर रेल इंजनों को सेवा में लाने जैसी सिफारिशें भी की गईं। वहीं उच्च स्तरीय संरक्षा समीक्षा समिति ने संरक्षा को चाकचौबंद करने को एक लाख करोड़ रुपये निवेश की जरूरत बताई। हालांकि बीते सालों में किए गए प्रयासों से सुरक्षा और संरक्षा मद में भारी सुधार आया है। रेल दुर्घटनाएं जो 2002 में 0.44 प्रति मिलियन किमी थीं वे घटकर अब करीब 0.13 हो गई है लेकिन अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है और तमाम मोरचों पर और चौकस रहने की भी क्योंकि हाल की कुछ रेल दुर्घटनाओं ने जमीनी हकीकत से रेलवे को रूबरू करा दिया है।

रेल बजट में ए-1 और ए श्रेणी के रेलवे स्टेशनों पर वाई-फ़ाई की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रावधान करने का ऐलान भी किया गया है। इंटरनेट के जरिए प्लेटफ़ार्म टिकट और अनारक्षित टिकट लेने की सुविधा शुरू होने से भी तमाम मुसाफिरों को सुविधा होगी। इसके लिए अभी तक लंबी लाइनें लगती हैं। इसी तरह रेलवे में सफर करने वाले कामकाजी तबकों के लिए पहली बार रेलगाड़ी में वर्क स्टेशन की सुविधा देने की घोषणा भी की गई है। हालांकि इसके लिए यात्रियों से शुल्क लिया जाएगा, लेकिन इससे उनको बहुत सुविधा होगी। जल्दी ही इसका पायलट प्रोजक्ट शुरू किया जाएगा। इसी प्रकार रेलवे के सभी विश्रामालयों की अब ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा शुरु हो सकेगी। पहले यह बहुत कठिन काम था और मुसाफिरों को इसके लिए कई जगहों पर भटकना पड़ता था।

भारतीय रेल ने सुरक्षा और संरक्षा की दिशा में कुछ कदम उठाए हैं। इसमें टक्कर रोधी उपकरणों की स्थापना, ट्रेन प्रोटेक्शन वार्निंग सिस्टम, ट्रेन मैनेजमेंट सिस्टम, सिगनलिंग प्रणाली का आधुनिकीकरण, संचार प्रणाली में सुधार प्रमुख हैं लेकिन ये छोटे-छोटे खंडों तक सीमित हैं, जबकि जरूरत पूरी प्रणाली की ओवरहालिंग की है। आज भी 14 हजार से अधिक मानव रहित समपार या लेबल क्रासिंग सबसे बड़ी समस्या बने हुए हैं। अगर इनको पांच साल में खत्म करना है तो इस पर 50,000 करोड़ रुपये का भारी-भरकम खर्च आएगा। वहीं रेलवे में दो लाख 85 हजार कर्मचारियों के पद खाली पड़े हैं जिसमें से डेढ़ लाख से अधिक पद तो संरक्षा कोटि के हैं। खास तौर पर महिला रेल यात्रियों की सुरक्षा की चुनौती बढ़ती जा रही है और चलती रेलों में चोरी और डकैतियां भी हो रही हैं। पिछले पांच वर्षों में यात्रियों के ख़िलाफ़ आपराधिक घटनाओं में 15 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। रेल मंत्री ने बजट में 17,000 आरपीएफ सिपाहियों की भर्ती के साथ खास तौर पर महिला मुसाफिरों की सुरक्षा के लिए 4,000 आरपीएफ महिला सिपाहियों की भर्ती करने और कई दूसरे कदम उठाने की घोषणा भी की है। इसी तरह आरपीएफ टीम को गाड़ियों में मोबाइल से भी लैस किया जाएगा।

आज भी पूर्वोत्तर में केवल असम में रेलवे को लाइफ लाइन कहा जा सकता है। मेघालय में रेल लाइन की आहट सुनायी दे रही है, लेकिन नगालैंड में अभी आठ किमी से अधिक रेल लाइन नहीं है। त्रिपुरा में भी महज 158 किमी रेल लाइन है। इस इलाके में रेल विद्युतीकरण भी नहीं हुआ है। फिर भी सिक्किम को छोड़ कर रेल सेवाओं से वंचित पूर्वोत्तर की पांच राजधानियों को 2017 तक रेल लाइन से जोड़ने के काम को गति देने का संकल्प लिया गया है। इसी तरह कश्मीर की रेल लाइन को भी पूरा करके कश्मीर को देश से जोड़ने की दिशा में कई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

रेल बजट में देश के पूर्वोत्तर राज्यों और अन्य पहाड़ी राज्यों में रेल सुविधाओं के विस्तार की मज़बूत पहल की गई है। हाल में पहली बार अरुणाचल प्रदेश रेल की मुख्यधारा में शामिल हुआ। अब गुवाहाटी और अगरतला के बाद रेलवे मानचित्र पर शामिल होने वाली इटानगर पूर्वोत्तर की तीसरी राजधानी बन गया है लेकिन इम्फाल, शिलांग, गंगटोक और कोहिमा जैसी राजधानियां अभी भी रेलवे की सीटी सुनने का इंतजार कर रही हैं। आजादी के बाद पूर्वोत्तर में तीन हजार किमी से भी कम रेल लाइनें बन पाईं। इसमें भी खास प्रगति यहां की रेल परियोजनाओं को राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने के बाद शुरू हुईं। आज भी पूर्वोत्तर में केवल असम में रेलवे को लाइफ लाइन कहा जा सकता है। मेघालय में रेल लाइन की आहट सुनायी दे रही है, लेकिन नगालैंड में अभी आठ किमी से अधिक रेल लाइन नहीं है। त्रिपुरा में भी महज 158 किमी रेल लाइन है। इस इलाके में रेल विद्युतीकरण भी नहीं हुआ है। फिर भी सिक्किम को छोड़ कर रेल सेवाओं से वंचित पांच राजधानियों को 2017 तक रेल लाइन से जोड़ने के काम को गति देने का संकल्प लिया गया है। इसी तरह कश्मीर की रेल लाइन को भी पूरा करके कश्मीर को देश से जोड़ने की दिशा में कई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। रेल बजट की खूबी यह भी है कि इसे तैयार करते समय रेल मंत्री ने स्टाफ, विशेषज्ञों और आम जनता से व्यापक विचार. विमर्श किया। पहली बार रेलवे के क्षेत्र अधिकारियों का सम्मेलन करके जमीनी हकीकत से रूबरू होते हुए ठोस रणनीति बनायी गई। रेल बजट के पहले रेलवे की सेहत को ठीक करने के इरादे से ही किराए और भाड़े में वृद्धि की गई। हालांकि इसकी आलोचना हुई लेकिन रेलवे को सलीके से चलाने के लिए ऐसा करना जरूरी था। क्योंकि रेलवे बहुत कठिन दौर से जूझ रही है। बीते एक दशक में ईंधन की कीमतों में पचास फीसदी की बढोत्तरी हुई। इस कारण सड़क यातायात किराए कई गुना बढ़ गए और बड़ी संख्या में सड़क यात्रियों का हिस्सा रेलवे पर आ गया। इन सारे पक्षों को देखते हुए इसे एक बेहतर, प्रगतिशील और विकासोन्मुखी रेल बजट माना जा सकता है। ❑

IAS / PCS

M. D
नीरज सिंह

GS World

Committed to Excellence

अखण्ड एवं सशक्त टीम, एकीकृत दृष्टिकोण व सटीक मार्गदर्शन

पिछले सत्र में GS world ने पाठ्यक्रम पूरा करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त किया है।

DELHI
Foundation Batch Begins

Our GS Team

राजू सिंह
अर्थव्यवस्था पोलिटी (PT) C-Aff.

सुजीत सिंह
इतिहास, कला व संस्कृति

दीपक कुमार
नीतिशास्त्र व राजव्यवस्था

संजीव शर्मा
भूगोल, पर्यावरण व आपदा प्रबंधन

एस. एस. राय
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

Our CSAT Team

S.S. Bharti, सचिन के. सिन्हा, बडोनी सर
दीपक कुमार, मधुकर कोटवे, कुलदीप मिश्रा,
दिनेश सर, शकील अहमद

निःशुल्क परिचर्चा के साथ नया बैच 1 सितम्बर से प्रारम्भ

IAS Mains Test series 7 September

ALLAHABAD Centre Ph.: 7054199894/95

निःशुल्क परिचर्चा के साथ नया बैच 28 अगस्त से प्रारम्भ

वैकल्पिक विषय

GS World Distance Learning Progm
Co-cordinator: Divyasen (9654349902)

भूगोल
संजीव शर्मा

दर्शनशास्त्र
दीपक कुमार

लोकप्रशासन
राजू सिंह

इतिहास
सुजीत सिंह

Corp. Office : 632, 1st Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-9

Visit us at: www.gsworld.co.in # 011-47053974, 9868365322 Email: gsworldias@gmail.com

YH - 122/2014

आर्थिक सुदृढ़ीकरण का व्यावहारिक रुख

चरण सिंह
शारदा शिम्पी

आम बजट को छह हफ्तों में एक कूटनीतिक विचारक और अनुभवी राजनेता द्वारा कुशलता से तैयार किया गया है जिसमें अधिकतम सहयोग और न्यूनतम बाधा के दृष्टिकोण की प्रक्रिया को ध्यान में रखा गया है और यह इस मुश्किल आर्थिक स्थिति में सबसे सही नीति है फिर चाहे बात घरेलू स्तर पर हो या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर। नई सरकार का आम बजट पिछली सरकार के बजट को आगे बढ़ाने जैसा लग सकता है, लेकिन इसका विश्लेषण करने पर मालूम चलता है कि इसके खाते से काफी ज्यादा मिल सकता है

भूमिका

जुलाई 2014 का आम बजट मुश्किल आर्थिक हालात की पृष्ठभूमि में बनाया गया बजट था। वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास में वृद्धि हो रही थी और बाजार भी स्थिर नहीं थे।

ईसीबी (यूरोपियन सेंट्रल बैंक) ने हाल ही में ऋणात्मक ब्याज दरों की घोषणा की जबकि अमेरिका ने कटौती की योजना पर अभी कोई अंतिम फैसला नहीं लिया है। ब्रिक्स देशों में अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर स्थिर नहीं है साथ ही तमाम उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भी हालात काफी निराशाजनक हैं। भारत उन कुछ देशों में शामिल है जिन्हें वैश्विक आर्थिक मंदी के शुरुआती दौर पर अपेक्षाकृत रूप से ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा, लेकिन अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 2012-13 और 2013-14 में 5 प्रतिशत तक कम हो गई। अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में यह गिरावट खेती, उद्योग और अन्य सेवाओं समेत सभी क्षेत्रों में देखी गई। वृद्धि के इस निराशाजनक दौर के साथ, महंगाई लगातार बढ़ती गई। हालांकि औसतन महंगाई दर थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) द्वारा मापी जाती है जिसमें कि साल में 2013-14 में 6 प्रतिशत की गिरावट हुई, यह अब भी सामान्य स्तर से काफी ज्यादा है। खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतें भी पिछले काफी समय से चिंता का विषय बनी हुई हैं। हालांकि नीति-नियमों पर अमल से सोने के आयात पर रोक लगाई गई है, भारतीय रुपये के मूल्य में कमी ने 2013-14 में भारत में निर्यात को बढ़ावा दिया। नतीजतन, चालू खाता घाटा 2012-13 में जीडीपी के 4.7 से 2013-14 में 1.7 प्रतिशत पर आ गया।

राजकोषीय संकेतक

नई सरकार की नीतियों का मूलभूत उद्देश्य 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' साल

रेखाचित्र 1: चालू खाता घाटा (जीडीपी का प्रतिशत)

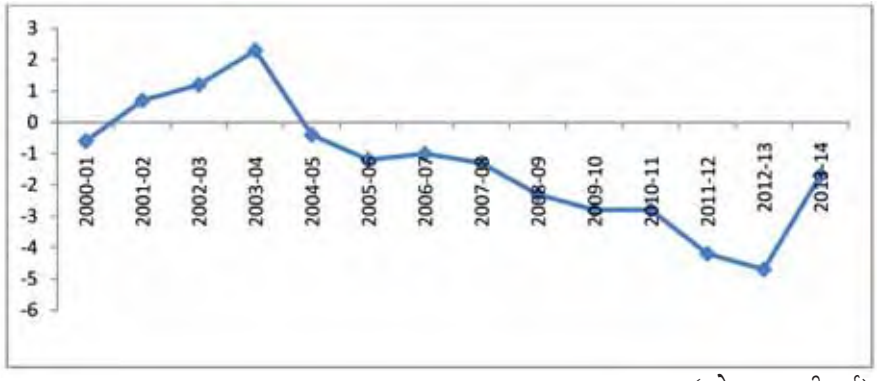

(*स्रोतः आरबीआई*)

चरण सिंह भारतीय प्रबंधन संस्थान, बंगलुरु में आरबीआई चेयर प्रोफेसर हैं। इससे पूर्व में वे वाशिंगटन डीसी स्थित आईएमएफ के लिए वरिष्ठ अर्थशास्त्री के रूप में तथा आरबीआई मुंबई में निदेशक (शोध) के पद पर कार्य कर चुके हैं। ईमेल: charansingh@iimb.ernet.in
शारदा शिम्पी आईआईएम बंगलुरु में रिसर्च एसोसिएट हैं। उन्होंने निजी क्षेत्र में रेटिंग एजेंसी के लिए काफी कार्य किया है। ईमेल: shardash@iimb.ernet.in

2014-15 के आम बजट में भी नजर आया। उपर्युक्त पृष्ठभूमि के संदर्भ में जुलाई 2014 के आम बजट में किए गए आय में कमी और उच्च ऋण को न लेने जैसे प्रयास सच में ही सराहनीय हैं (तालिका-1)। बजट का लक्ष्य आने वाले 3-4 सालों में चालू खाता घाटे का सही प्रबंधन, राजस्व घाटे में कमी और महंगाई दर कम करने के साथ ही 7-8 प्रतिशत की निरंतर वृद्धि दर हासिल करना है। राजस्व एकत्र करने के लिए निर्धारित योजना का उद्देश्य राजकोषीय घाटे को 2015-16 में 3.6 प्रतिशत पर लाना और साल 2016-17 में 3 प्रतिशत तक पहुंचाना है।

अर्थव्यवस्था में आई सामान्य मंदी ने 2013-14 में करों से होने वाले राजस्व को प्रभावित किया, लेकिन बहाली की प्रक्रिया जारी होने के कारण चालू वर्ष में कुछ सकारात्मक वृद्धि की उम्मीद की जा सकती

तालिका 1: जीडीपी के प्रतिशत पर घाटा

वर्ष	आरडी	जीएफडी	पीडी
1980-81	1.4	5.7	3.9
1990-91	3.3	7.8	4.1
2000-01	4.1	5.7	0.9
2010-11	3.3	4.9	1.8
2012-13	3.6	4.9	1.8
2013-14 (स.अ.)	3.3	4.6	1.3
2014-15 (ब.अ.)	3.0	4.1	0.8

स्रोत: आरबीआई और आम बजट, भारत सरकार

है (तालिका-2)। खर्च पर, हालांकि रक्षा पर खर्च स्थिर है और ब्याज राशि जीडीपी के प्रतिशत के आधार पर कम करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जो कि सब्सिडी पर बढ़ेगा खासतौर पर खाद्य पदार्थों पर दी जाने वाली सब्सिडी पर। (तालिका-3)

तालिका 2: जीडीपी के प्रतिशत पर राजकोषीय संकेतक

साल	कर	ब्याज राशि	छूट	रक्षा
1980-81	9.1	1.8	1.4	2.5
1990-91	10.1	3.8	2.1	2.7
2000-01	9.0	4.7	1.3	2.3
2010-11	10.3	3.1	2.3	2.0
2012-13	10.6	3.3	2.0	1.8
2013-14 (स.अ.)	10.2	3.3	2.2	1.8
2014-15 (ब.अ.)	10.4	3.1	2.6	1.8

स्रोत: आरबीई और आम बजट, भारत सरकार

तालिका 3: मुख्य छूट

(रुपये करोड़ में)

मद	2012-13	2013-14 (सं.अ.)	2014-15 (ब.अ.)
मुख्य छूट	247493	245452	251397
उर्वरक	65613	67972	72970
खाद्य पदार्थ	85000	92000	115000
पेट्रोलियम	96880	85480	63427
ब्याज पर छूट	7270	8175	8313
अन्य छूट	2316	1890	947
कुल छूट	**257079**	**255516**	**260658**

स्रोत: आरबीआई और आम बजट, भारत सरकार

मुख्य नीतिगत घोषणाएं

आम बजट मुख्यतौर पर कृषि, ढांचागत सुविधाओं को बेहतर बनाने के दृढ़ संकल्प, विभिन्न माध्यमों द्वारा रोजगार पैदा करने और संपूर्ण आर्थिक वृद्धि पर जोर देता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि भारत की ज्यादातर जनसंख्या अपनी जीविका के लिए कृषि और संबंधित कार्यों पर निर्भर करती है, खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में, बजट में कृषि को एक प्रतियोगी और लाभदायक गतिविधि बनाने के लिए जरूरी कदम उठाने की बात पर जोर दिया गया है। किसान टेलीविजन, भंडारण अवसंरचना निधि मूल्य, मूल्य स्थिरीकरण निधि, किसान विकास पत्र और एनएबीएआरडी में दीर्घकालिक ग्रामीण साख निधि और उच्च उत्पादकता पर ध्यान केंद्रित करती दूसरी हरित क्रांति का स्वागत करने की इच्छा साफ तौर पर अर्थव्यवस्था में कृषि को बढ़ावा देने के प्रयासों के सूचक हैं।

आवास निर्माण और रियल एस्टेट अर्थव्यवस्था की वृद्धि के कुछ अहम क्षेत्र हैं। इन उद्योगों में रोजगार पैदा करने, मांग बढ़ाने और अन्य संबंधित क्षेत्रों पर सकारात्मक प्रभाव डालने की क्षमता है। निवेश योजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर फंड लाने के उद्देश्य से वित्त मंत्री ने रियल इस्टेट इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (आरईआईटीएस) और इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट को जरूरी प्रोत्साहन देने की इच्छा व्यक्त की गई है।

अवसंरचना परियोजनाओं का गर्भ काल और संसाधनों की जरूरत काफी लंबी होती है, आरईआईटीएस और इन्वाइटस इसके लिए जरूरी पूंजी ला सकता है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय पूंजी भी शामिल है ताकि मूलभूत ढांचे में तेजी से वृद्धि हो सके।

भारत आवासीय सुविधाओं की कमी से जूझ रहा है, अनुमान के अनुसार भारत में 2012 में लगभग 1 करोड़ 90 लाख शहरी आवास इकाइयां हैं। आवास एंव शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय के लिए केंद्रीय योजना के खर्च को दोगुना कर दिया गया है और वित्त मंत्री ने कम कीमत वाले घरों का निर्माण करने की योजना का सुझाव दिया है, इसे राष्ट्रीय आवासीय बैंक योजना के तहत लागू किया जाना है।

अर्थव्यवस्था में वृद्धि और विकास का एक फायदा जीवनस्तर में सुधार और बेहतर अवसरों की इच्छा भी है। सौ स्मार्ट शहरों का विकास और नतीजतन होने वाली आधुनिक गतिविधियां सकारात्मक रूप से रियल एस्टेट और संपूर्ण ढांचे पर सकारात्मक प्रभाव डालेंगी।

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में शामिल किए जाने वाले उत्पादों में लचीलेपन की घोषणा से यह साफ होता है कि इसका क्रियान्वयन काफी तेजी से और सहजता से होगा। दरों में समानता और जीएसटी की जांच-परख में आसानी केंद्र और राज्यों के लिए एक लुभावनी स्थिति होगी।

इससे आधुनिक संचार में भी उच्च निवेश होगा और इस प्रक्रिया में टेलीकॉम सेक्टर और सूचना प्रौद्योगिकी का ढांचा भी बेहतर बनेगा।

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में शामिल किए जाने वाले उत्पादों में लचीलेपन की घोषणा से यह साफ होता है कि इसका क्रियान्वयन काफी तेजी से और सहजता से होगा। दरों में समानता और जीएसटी की जांच-परख में आसानी केंद्र और राज्यों के लिए एक लुभावनी स्थिति होगी। जमा निगम ऋण दायित्व सुविधा न सिर्फ इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्टस और नगरपालिकाओं के लिए आर्थिक रास्तों को बड़ा करेगा बल्कि स्थानीय निकायों को मजबूत बनाने में भी अहम भूमिका अदा करेगा। स्वच्छ भारत अभियान का भारतीयों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक असर होगा और खासतौर पर बाल मृत्युदर को कम करेगा क्योंकि यह हैजे और मलेरिया

जैसी बीमारियों को नियंत्रित करने में सीधे मदद करेगा।

अंततः कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा के लिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं की घोषणा की गई जो उन्हें आदर और सम्मान देने के साथ बेटी के जन्म की स्वीकार्यता को बढ़ाएगी और इसके साथ ही उनकी पढ़ाई, करियर और अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को बढ़ावा देगी। इससे देश की आधी आबादी को पूरे आत्मविश्वास के साथ वृद्धि प्रक्रिया में भाग लेने का प्रोत्साहन मिलेगा।

बजट का आर्थिक प्रभाव

आम बजट के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए, उन कुछ मुख्य आर्थिक मुद्दों पर गौर करिए जो अर्थव्यवस्था के लिए घातक सिद्ध होते हैं और जिन पर चुनाव के समय काफी चर्चा और विवाद किया गया था- आर्थिक वृद्धि दर, रोजगार और महंगाई। बजट में इन तीन मुद्दों पर काफी गंभीरता से विचार किया गया।

आवास और निर्माण क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए शुरू की गई रियल एस्टेट और इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट, आवास कर में छूट और राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा कम कीमत में घरों की ज्यादा से ज्यादा उपलब्धता, स्मार्ट शहर बसाने और टियर-1 तथा टियर-2 शहरों में नए एयरपोर्ट बनाने जैसी योजनाओं से देश के विकास को भी गति मिलेगी। आवास के 269 उद्योगों से अंतर्संबंधित होने के कारण, औद्योगिक निर्माण विकास वृद्धि में भूमिका अदा करेगा। वृद्धि करने वाले ये कारक देश में रोजगार की स्थिति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगे। साथ ही पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम होटल, परिवहन, मनोरंजन और उड्डयन उद्योगों और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों में रोजगार पैदा करेंगे।

समाज के कमजोर तबकों, खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से 15 अगस्त 2014 को लॉन्च होने जा रहे वित्तीय समावेशी मिशन गरीबों के लिए वित्तीय सेवाओं के मार्ग प्रशस्त करने में मदद करेंगें। इन क्रियाकलापों के साथ ही तकनीक का इस्तेमाल करने का मतलब है देश के ग्रामीण इलाकों में सीधे तौर पर रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना। बैंकिंग सेक्टर में खाता खोलने, वित्तीय साक्षरता का विस्तार करने और वित्तीय सेवाओं को ज्यादा से ज्यादा उपलब्ध कराने तक काफी तरह के रोजगार उपलब्ध होने की संभावना है।

इसके साथ ही दो अन्य मानक हैं जो हालांकि कल्याण संबंधी हैं, लेकिन रोजगार बढ़ाने में भूमिका अदा करेंगे मसलन बीमा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश। बीते एक दशक में सरकार के असंख्य प्रयासों के बाद भी सकल घरेलू उत्पाद के बीमा प्रीमियम के संदर्भ में तय बीमा निवेश भारत में 4 प्रतिशत से कम है, इसमें निजी बीमा कंपनियों को भारत में कार्य करने की अनुमति देना भी शामिल है। जनसंख्या के 25 प्रतिशत से भी कम के स्तर से बीमा को बढ़ाना फिलहाल जीवन बीमा में शामिल हैं, जिसका सीधा संबंध भारत जैसे युवा जनसंख्या वाले देश में रोजगार बढ़ाने से है।

आवास और निर्माण क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए शुरू की गई रियल एस्टेट और इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट, आवास कर में छूट और राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा कम कीमत में घरों की ज्यादा से ज्यादा उपलब्धता, स्मार्ट शहर बसाने और टियर-1 तथा टियर-2 शहरों में नए एयरपोर्ट बनाने जैसी योजनाओं से देश के विकास को भी गति मिलेगी।

अतियुवा और क्षमतावान आबादी वाले देश को युद्ध स्मारकों और सटैच्यू आफ यूनिटी जैसे बेहद राष्ट्रवादी तेवर के साधारण फैसले देखने को मिले हैं। इन्हें राष्ट्रीय स्मारकों और वाणिज्य और रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए पर्यटन के स्थानों के रूप में विकसित किया जा सकता है। भारत में और विदेशों में युवा रोजगार के लिए हर राज्य में प्रमुख शिक्षा संस्थान होने के एक प्रशंसनीय दीर्घकालिक उद्देश्य के साथ नए आईआईटी, आईआईएम, एम्स, कृषि और बागवानी विश्वविद्यालयों की तत्काल स्थापना को बढ़ावा देना होगा।

पिछले कुछ महीनों में यह काफी स्पष्ट हो गया है कि भारत में महंगाई, विशेष रूप से खाद्य मुद्रास्फीति, एक आपूर्ति पक्ष घटना है, इसकी वजह लचर मौद्रिक नीति नहीं है। आपूर्ति पक्ष से होने वाले मामलों के समाधान के लिए कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों की गतिविधियों जैसे मालगोदाम आदि पर ध्यान दिया जाना चाहिए। गड़बड़ियों को ठीक करने के उद्देश्य से भारतीय खाद्य निगम और सार्वजनिक वितरण प्रणाली की कार्य प्रणाली में सुधार की घोषणा दामों को कम करने में मदद करेगी, जो कि बार-बार भारत में महंगाई बढ़ने की वजह बनते हैं।

नीतिगत मुद्दों पर सुझाव

यह एक अलग तरह का बजट है जिसने अर्थव्यवस्था में विकास की वृद्धि दर को पुनर्जीवित करने के लिए भागीदारी की भावना को बढ़ावा देने की कोशिश की है। इसलिए विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रक्रिया से जुड़े कुछ सुझाव यहां प्रस्तुत हैं -

1) खाद्य रियायत के संबंध में, खाद्य और पोषण से वंचित तबकों में खाद्य पदार्थों को पहुंचाने के लिए सही वितरण तंत्र विकसित करने के लिए स्थानीय अधिकारियों की भूमिका को बढ़ाने की जरूरत होगी। स्थानीय अधिकारियों की स्थानीय क्षेत्रों से जुड़ी जानकारी का लाभ लिया जाना चाहिए ताकि सही मायनों में जरूरतमंद की पहचान हो सके।
2) किसान विकास पत्र की पुनः प्रस्तुति पर सावधानी से विचार करने की जरूरत होगी क्योंकि पिछले किसान विकास पत्र काल के दौरान, भिन्न-किसान व्यक्तियों की भी बड़ी संख्या में भागीदारी के मामले सामने आए थे। इसलिए इसकी पुनः प्रस्तुति इस वित्तीय साधन की व्यवहारिकता और उपयोगिता पर कई तरह की चर्चाओं को आकर्षित कर सकती है।
3) प्रति परिवार दो बैंक खातों और कुछ राशि के प्रारंभिक ऋण के साथ वित्तीय समावेशन मिशन बैंकरहित लोगों को इसकी जानकारी देने में सफल हो सकता है और उनकी कमजोरियों को दूर किया जा सकता है। प्रत्येक भारतीय के लिए जारी यूनिक आइडेंटिटि नंबर यानी आधार कार्ड न होने की स्थिति में, खास ध्यान देने की जरूरत होगी ताकि इन नए खातों द्वारा बैंक रहित परिवारों को ऋण देने के लिए किए जा रहे प्रयासों में कोई गड़बड़ी न हो।

4) मौजूदा सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार के अंतर्गत सेहतमंद जीवन के लिए पांच लाख से ज्यादा उचित मूल्य की दुकानों से होने वाले नए उत्पादों जैसे बेहतर स्वच्छता के लिए साबुन और जरूरी दवाइयां और उपकरण जैसे मच्छरदानियों के वितरण को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

5) व्यवसायिक सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) के तहत किए गए व्यय को प्रभावी तरीके से रोजगार और वृद्धि के उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है हालांकि यह सामुदायिक विकास के लिए एक परोपकारी गतिविधि है। कंपनी एक्ट 2013 के अनुसार निर्दिष्ट कंपनियों को अपने कुल लाभ के 2 प्रतिशत को सीएसआर गतिविधियों में देने की जरूरत है। सीएसआर मानक उन कंपनियों पर लागू होते हैं जिनका एक वित्त वर्ष में न्यूनतम कारोबार 500 करोड़ या एक हजार करोड़ या कुल लाभ 5 करोड़ रुपये होता है।

सीएसआर के लिए की जाने वाली गतिविधियां कई तरह की हैं और उक्त कंपनी द्वारा सीएसआर गतिविधियां उनके खुद के द्वारा विभिन्न तरीकों से क्रियान्वित की जा सकती हैं या फिर इसके लिए गैर लाभकारी संस्थाओं की मदद ली जा सकती है। औद्योगिक स्रोतों के अनुसार, भारत में लगभग 6000 कंपनियों को सीएसआर के अंतर्गत लाने की जरूरत है साथ ही इसमें ऐसे लघु उद्योगों को भी शामिल किया जाना चाहिए जिनका कुल लाभ 5 करोड़ से ज्यादा हो गया है।

सीएसआर के तहत अनुमानित राशि 20,000 करोड़ रुपये से लेकर एक लाख करोड़ तक होती है। इसलिए राष्ट्र निर्माण में सीएसआर का प्रभावी उपयोग करने के लिए, सरकार को निर्दिष्ट क्षेत्रों में प्रत्यक्ष संसाधनों के लिए एक लेखा या नियामक प्राधिकरण पर भी विचार करना चाहिए।

गैर निष्पादित परिसंपत्तियों के बढ़ते जाने के संबंध में अतिरिक्त ऋण वसूली न्यायाधिकरण (DRTs), की घोषणाओं से पुनरुद्धार योजना बनाने में मदद मिलेगी और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उन्हें मजबूत करना चाहिए। साथ ही बैंकिग समुदाय में यह एक आम धारणा है कि डीआरटी उपभोक्ताओं के प्रति नरम है और बैंकिंग प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण वसूली करने में नाकाम रहे हैं।

नए संस्थान और विश्वविद्यालय तैयार करके युवाओं को शिक्षित बनाने का उद्देश्य मजबूत बनाया जा सकता था यदि विदेशी विश्वविद्यालयों को भी भारत में कार्य करने की अनुमति दे दी जाती क्योंकि भारत के युवा विदेश में जाकर बसने के कुछ दूसरे तरीके ढूंढ लेते हैं, लेकिन तब शिक्षा और प्रशिक्षण के अभाव में उन्हें कम आय पर नौकरी करनी पड़ती है। सरकार श्रमशक्ति के संदर्भ में विभिन्न देशों में युवाओं के विदेश प्रवास को आसान बनाने और विशिष्ट कौशल सृजन पर ध्यान दे सकती थी। इन देशों के विश्वविद्यालय जिनमें श्रमशक्ति की जरूरत है, को भारत में बुलाया जा सकता है ताकि वे युवाओं को सहज कौशल और जरूरी व्यवसायिक प्रशिक्षण दे सकें। इस तरह के सुप्रशिक्षित प्रवासी दो प्रकार के कार्य करने में मदद करेंगे एक तो देश के ब्रांड एंबेसडर के रूप में और दूसरे विप्रेषित राशि के स्रोत के रूप में।

सीधे तौर पर जुलाई 2014 के बजट में सोने के बारे में कोई जिक्र नहीं किया गया। इस मौके का लाभ वित्त मंत्री सोने पर सरकार की रणनीति स्पष्ट करने के लिए ले सकते थे। फिर इसमें जनसंख्या के आधार पर भी सिर्फ एक हिस्सा खास था, बुजुर्ग, जिन्हें सरकार की ज्यादातर नीतियों में अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। भारत में 11 करोड़ से भी ज्यादा बुजुर्ग हैं, जिनकी उम्र 60 साल से ऊपर है।

निष्कर्ष

आम बजट को छह हफ्तों में एक कूटनीतिक विचारक और अनुभवी राजनेता द्वारा कुशलता से तैयार किया गया है जिसमें अधिकतम सहयोग और न्यूनतम बाधा के दृष्टिकोण की प्रक्रिया को ध्यान में रखा गया है और यह इस मुश्किल आर्थिक स्थिति में सबसे सही नीति है फिर चाहे बात घरेलू स्तर पर हो या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर।

हाल के कुछ महीनों में सीएडी बढ़ने के कारण सोने के आयात पर प्रतिबंध काफी ज्यादा थे और नई सरकार से आयात शुल्क कम करने और सोने के बाजार में फिर से बहाली लाने को लेकर उम्मीदें भी थीं। हालांकि सीधे तौर पर जुलाई 2014 के बजट में सोने के बारे में कोई जिक्र नहीं किया गया। इस मौके का लाभ वित्त मंत्री सोने पर सरकार की रणनीति स्पष्ट करने के लिए ले सकते थे। फिर इसमें जनसंख्या के आधार पर भी सिर्फ एक हिस्सा खास था, बुजुर्ग, जिन्हें सरकार की ज्यादातर नीतियों में अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। भारत में 11 करोड़ से भी ज्यादा बुजुर्ग हैं, जिनकी उम्र 60 साल से ऊपर है।

सामान्यत: महिलाएं, जिन्हें कि देखभाल की सख्त और तुरंत जरूरत है क्योंकि इनमें से 90 प्रतिशत असंगठित क्षेत्रों से जुड़ी हैं और जिनके पास सामाजिक सुरक्षा का कोई जरिया नहीं है। जबकि लगभग 3 करोड़ बुजुर्ग जो कि बीपीएल वर्ग के अंतर्गत आते हैं उन्हें वृद्धावस्था पेंशन के तहत 500 रुपये मिलते हैं। बाकी 8 करोड़ बुजुर्गों को खुद ही अपना भरण-पोषण करना होता है। कमजोर और अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा तंत्र को देखते हुए किए गए शोध और अध्ययन बताते हैं कि बुजुर्ग वर्ग की इन स्वास्थ्य सेवाओं तक काफी सीमित पहुंच है।

कई यूरोपीय देशों से उलट जहां कि स्वास्थ्य पर किए जाने वाला आयु संबंधी व्यय सकल घरेलू उत्पाद का 8-10 प्रतिशत होता है, वहीं भारत में यह एक प्रतिशत से भी कम है। बुजुर्ग नागरिकों की मदद के लिए उठाए जाने वाले कुछ सरल शुरुआती कदम ये हो सकते हैं कि देश भर में एक समान रकम सभी बुजुर्ग नागरिकों को पेंशन के रूप में दी जाए। आयु के साथ पेंशन की राशि को बढ़ाया भी जा सकता है खासतौर पर महिलाओं के मामलों में। अंतत: बदलती भौगोलिक स्थितियों को देखते हुए भारत में दो चीजों पर बेहद ध्यान देने की जरूरत है।

पहली, बुजुर्ग नागरिकों और आयु संबंधी वित्तीय अर्थशास्त्र से जुड़ी समस्याओं के अध्ययन के लिए एक विचार समूह तैयार किया जाए। दूसरी, जराविज्ञान का विकास किया जाए, जो कि बढ़ती आयु के साथ होने वाली परेशानियों का अध्ययन करती है, यह वह क्षेत्र है जिसे भारत में पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया जाता है।

नई सरकार का आम बजट पिछली सरकार के बजट को आगे बढ़ाने जैसा लग सकता है,

(शेषांश पृष्ठ 50 पर)

यमुना सफाई: वर्तमान चुनौतियां और समाधान

दीपशिखा शर्मा

दिल्ली यमुना नदी के तट पर बसा सबसे बड़ा शहर है और दिल्ली खंड इस नदी का सबसे प्रदूषित खंड। यमुना की सफाई के लिए एक नहीं, दो नही, तीन-तीन चरण में यमुना एक्शन प्लान बना लेकिन न तो प्रदूषण स्तर घटा और न ही नदी पर बढ़ता दबाव। शहर से नदी में गिरते अपशिष्ट जल के उपचार के लिए दिल्ली में स्थापित संयत्रों की क्षमता का भी पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जा सका। ऐसे में साफ-सुथरी यमुना का प्रवाह देखना अब भी एक स्वप्न भर है

भूमिका

राइन (यूरोप), सिने (फ्रांस), मिनेसोता (अमेरिका), स्कैंडेनिवेयन देशों की नदियां, इत्यादि दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियों में शामिल हैं (गुर्जर एवं जाट, 2008)। गंगा और ब्रह्मपुत्र इत्यादि के प्रदूषण के रूप में नदियों के प्रदूषण ने भारत पर भी अपना प्रभाव छोड़ा है (सीपीसीबी 2006-07)। नदी प्रदूषण मुख्यत: मौजूद अवसंरचना एवं नीतिगत उपकरणों की विफलता से पैदा होता है। संयुक्त राष्ट्र विश्व जल मूल्यांकन कार्यक्रम (यूएनडब्ल्यूडब्ल्यूएपी, 2003) के अनुसार, बांधों और अन्य समरूप अवसंरचनाओं ने दुनिया भर की 227 सबसे बड़ी नदियों के जलप्रवाह को 60 प्रतिशत तक बाधित किया है। नीचे की ओर जाती नदियों का प्रवाह इससे कम होने लगता है, इससे गाद और पोषक तत्वों का परिवहन प्रभावित होता है, परिणामत: जल की गुणवत्ता कम होती है तथा पारिस्थितिकी तंत्र प्रतिकूलत: प्रभावित होता है। इसी तरह, भारत की राजधानी दिल्ली में प्रतिदिन तीन अरब लीटर दूषित जल पैदा होता है जिसमें से आधे का तो उपचार किया जाता है लेकिन आधा ऐसे ही यमुना नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है जो गंगा नदी की सहायक है।

भारत में नदियों की सफाई 1985 में गंगा एक्शन प्लान के साथ शुरू हुई जिसका लक्ष्य गंगा के जल की गुणवत्ता को पुनर्स्थापित करना था। सीपीसीबी का निष्कर्षों के आधार पर भारत सरकार के यमुना एक्शन प्लान चरण एक आरंभ हुआ (सीपीसीबी, 2007)। यह कार्यक्रम *अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए जापान बैंक* (जेबीआईसी) के सहयोग से शुरू किया गया। सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय नदी संरक्षण महानिदेशालय यमुना एक्शन प्लान के लिए निष्पादन एजेंसी है। उत्तर प्रदेश जल निगम, हरियाणा लोकस्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग (पीएचईडी), दिल्ली जल बोर्ड और दिल्ली नगर निगम इसकी परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियां हैं। यमुना एक्शन प्लान में तीन राज्य नामत: उत्तर प्रदेश, दिल्ली और हरियाणा आते हैं। (योजना आयोग, 2007)

यमुना एक्शन प्लान चरण-एक को अप्रैल, 2002 में पूरा होना था लेकिन निर्धारित परियोजना 2003 तक चलती रही। शुरूआत में 15 शहरों (जिनमें से छ: हरियाणा, आठ उत्तर प्रदेश और एक दिल्ली में हैं) में प्रदूषण घटाने का फार्मूला तैयार किया गया था जिसके लिए जेबीआईसी ने 17.77 करोड़ येन का आसान कर्ज प्रदान किया था। हरियाणा (6 अरब येन), उत्तर प्रदेश (8 अरब येन) और दिल्ली (3.7 अरब येन) पाकर लाभार्थी प्रदेश बने। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने अप्रैल 1996 में हरियाणा के 6 और शहरों को यमुना एक्शन प्लान के चरण एक में शामिल करने का आदेश दिया जिनके लिए वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की योजना निधि से धन उपलब्ध कराया गया। कुल मिलाकर 21 शहर यमुना एक्शन प्लान के दायरे में आए (योजना आयोग, 2007)। कुल 7530 लाख लीटर जल प्रतिदिन की प्रस्तावित उपचार क्षमता इस योजना के

लेखिका प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन की विशेषज्ञ हैं। जल, जल प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन उनके शोध और संचार के प्रमुख क्षेत्र हैं। उन्होने अंतराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान में जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के लिए बतौर संचार विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया है। वे लेयन, फ्रांस (2009) में बायोविजन-एनएक्सटी फैलो रही हैं। उन्होंने टेरी विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। ईमेल: deepshikha.k.sharma@gmail.com

तहत विकसित की गई और 2003 में इसे संपन्न घोषित किया गया। (http://envfor.nic.in/nrcd/NRCD/YAP.htm)

यमुना एक्शन प्लान चरण एक की स्वीकृत लागत 5.09 अरब येन थी। रुपये के मुकाबले येन की मजबूती के कारण जेबीआईसी सहायता पैकेज में 8 अरब येन उपलब्ध हो गया था। यह धन जेबीआईसी ने इन्हीं 15 शहरों के लिए जारी किया और बाद में यमुना एक्शन प्लान को फरवरी 2003 तक बढ़ा दिया गया। मई, 2001 में इस प्रस्ताव के विस्तारित चरण के लिए 2.22 अरब रुपये और स्वीकृत किए गए। इस राशि में से 228 लाख रुपये हरियाणा को, 1.22 अरब रुपये दिल्ली को और 2965 लाख रुपये उत्तर प्रदेश को जारी किए गए। इसके अतिरिक्त 405 लाख रुपये भारतीय-जापानी परामर्शदात्री कंसोर्टियम को देय शुल्क के रूप में उपलब्ध कराए गए। अतिरिक्त पैकेज को समाहित करते हुए यमुना एक्शन प्लान चरण एक की कुल लागत 7.32 अरब रुपये आई। इसका खर्च केंद्र और राज्य सरकार ने बराबर वहन किया। हालांकि 2001 में केंद्र की ओर से उसका खर्च दोगुना कर दिया गया जबकि राज्यों ने भी अपने खर्च में 30 प्रतिशत बढ़ोतरी की। (योजना आयोग, 2007)

यमुना एक्शन प्लान के चरण एक में विविध गतिविधियों के बावजूद नदी की गुणवत्ता वांछित मानकों तक नहीं लाई जा सकी (सीपीसीबी, 2007)। ऐसा पाया गया कि दिल्ली के मलवहन घटक को कम करके आंका गया और महानगर की सरकार द्वारा यमुना एक्शन प्लान के समानांतर तैयार किए गए मल उपचार संयंत्रों की क्षमता का अब भी पूरा उपयोग नहीं किया गया है। (सीपीसीबी, 2006-07) इसलिए, वांछित नदी मानकों को हासिल करने के लिए भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने दिसंबर 2004 में यमुना एक्शन प्लान का चरण दो शुरू किया। इसे सितंबर 2008 में पूरा किया जाना था। यमुना एक्शन प्लान चरण एक में पूरा किए गए कार्यों के आधार पर जेबीआईसी ने 31 मार्च 2003 को वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के साथ नए ऋण करार पर हस्ताक्षर किए और 13.33 अरब येन की राशि स्वीकृत की

तालिका-1: यमुना एक्शन प्लान चरण 1 और चरण दो के राज्यवार निवेश और योजनाओं का ब्यौरा

	चरण 1			चरण 2		
	दिल्ली	हरियाणा	उ. प्र.	दिल्ली	हरियाणा	उ. प्र.
स्वीकृत राशि (अरब रुपये)	1.81	2.42	2.82	4.69	6.34	1.15
केंद्र से जारी राशि (अरब रुपये)	1.77	1.78	2.40	1.21	0.48	0.58
स्वीकृत योजनाओं की संख्या	12	111	146	11	16	5
पूर्ण योजनाओं की संख्या	12	111	146	0	6	1

जो चरण दो के कुल खर्च का 85 प्रतिशत है। चरण दो के लिए स्वीकृत कुल बजट 6.24 अरब रुपये था जिसे दिल्ली (3.87 अरब), उत्तर प्रदेश (1.24 अरब), हरियाणा (63 करोड़), क्षमता निर्माण अभ्यास (50 करोड़) तथा पीएमसी-टीईसी कंसोर्टियम (आंकड़े अनुपलब्ध) के बीच बांटा गया। काम पूरा नहीं हो पाने के कारण इस चरण को मार्च 2011 तक बढ़ाया गया। मल उपचार संयंत्रों की कुल स्वीकृत क्षमता 1890 लाख लीटर प्रतिदिन थी। <http://envfor.nic.in/nrcd/NRCD/table.htm>. प्रस्तुत तालिका-1 में देखा जा सकता है कि यमुना एक्शन प्लान चरण दो के कार्य तीनों में से किसी राज्य में पूरे नहीं किए गए हैं जिसके कारण चरण दो को विस्तार देना पड़ा है।

देखा गया है कि काफी समय और धन खर्च किए जाने के बावजूद नदी पर प्रदूषण का दबाव बढ़ता ही गया है। यमुना में जैवरासायनिक आक्सीजन की मांग (बीओडी) 1980 में जहां 117 टन प्रतिदिन थी वहीं यह 2008 में बढ़कर 270 टन प्रतिदिन हो गई है। (सीएसई, 2008)

हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर 1996 और 2009 में जल की गुणवत्ता को तालिका-2 में बताया गया है।

यमुना एक्शन प्लान चरण दो के प्रभावों को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने दिसंबर 2011 में यमुना एक्शन प्लान चरण तीन को स्वीकृति दी है जिसका अनुमानित बजट 16.56 अरब रुपये रखा गया है और इसके केंद्र में दिल्ली को रखा गया है। इसलिए, यमुना नदी के दिल्ली खंड में विविध प्रदूषण नियंत्रण हस्तक्षेपों का मूल्यांकन आवश्यक हो गया है।

दिल्ली में यमुना नदी

यमुना नदी का दिल्ली खंड इसके सर्वाधिक प्रदूषित खंडों में से एक है। (देखें तालिका 3)

जैसा कि तालिका 3 में बताया गया है, यमुना एक्शन प्लान के चरण एक और चरण दो के पूर्ण होने के बावजूद नदी की जल

तालिका-2: यमुना नदी में जल गुणवत्ता के आंकड़े *ग्रीष्मकालीन औसत (मार्च-जून)*

बिंदु/स्थान	1996	2009		
	डीओ (एमजी/1)	बीओडी (एमजी/1)	डीओ (एमजी/1)	बीओडी (एमजी/1)
हरियाणा ताजेवाला	11.70	1.20	9.22	1.25
कालानौर सोनीपत	10.40	1.05	9.10	2.33
दिल्ली निज़ामुद्दीन	0.30	25.00	0.0	23.0
उत्तर प्रदेश आगरा नहर	0.35	26.50	0.00	14.75
मझवाली	0.50	22.0	2.75	16.75
मथुरा	8.10	4.00	5.28	8.50
मथुरा डी/एस	8.50	2.50	6.30	8.75
आगरा डी/एस	1.65	9.00	4.67	16.5
उड़ी	9.71	2.00	9.00	1.00
औरया जुहिका	8.14	5.0	11.05	7.75

स्रोत: सीपीसीबी

तालिका-3: दिल्ली के निजामुद्दीन में यमुना नदी की औसत वार्षिक जल गुणवत्ता

वर्ष	डीओ (मिग्रा प्रति ली)	बीओडीओ (मिग्रा प्रति ली)	टीसी (एमपीएन प्रति 100 मिली)
1995	3.4	9.6	386091
2005	1.6	10.00	12200000
2009	0.0	23.00	22516660
मानक*	> 4	< 3	> 5000

*आंकड़े सीपीसीबी और सीडब्लूसी से लिए गए हैं। **स्रोत:** सीपीसीबी 2000, 2006-07*
*टीसी=टोटल कॉलीफॉर्मस, बीओडी=जैव रासायनिक ऑक्सीजन मांग, *सी वर्ग के लिए सीपीसीबी मानक*

गुणवत्ता वांछित मानकों तक नहीं पहुंची है। इसलिए जल गुणवत्ता में सुधार और समय तथा धन दोनों के तौर पर निवेश आदि को ध्यान में रखकर विभिन्न हस्तक्षेपों के तहत प्रभाव पुर्वानुमान के आधार पर नदी कार्य योजनाओं को नए सिरे से तैयार करने की जरूरत है।

लगभग 224 किमी. की दूरी स्वछंद रूप से तय करने के बाद नदी पल्ला गांव के निकट दिल्ली में प्रवेश करती है और वजीराबाद में एक बार फिर से बैराज के माध्यम से घेर ली जाती है। यह बैराज दिल्ली के लिए पेयजल आपूर्ति करता है और यंहा से आगे प्रवाह एक बार फिर से शून्य या बेहद कम हो जाता है। इसके बाद नदी में अनुपचारित या अंशत: उपचारित घरेलू तथा औद्योगिक अपशिष्ट जल नदी में मिलता है। एक बार फिर लगभग 25 किमी. बहने के बाद ओखला बैराज के आगे इसके पानी को आगरा नहर में सिंचाई के लिए डाल दिया जाता है और नदी एक बार फिर से ओखला बैराज में बंध कर रह जाती है। इसके कारण गर्मियों में बैराज से लगभग शून्य या बेहद नगण्य पानी निकलने दिया जाता है। ओखला बैराज के बाद नदी में पूर्वी दिल्ली, नोएडा और साहिबाबाद इलाकों से निकला घरेलू व औद्योगिक अपशिष्ट जल शाहदरा नाले के जरिए नदी में गिरता है। आखिर में यमुना में अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदियों का पानी मिलता है और लगभग 1370 किमी. चलने के बाद यह इलाहाबाद में गंगा और भूमिगत सरस्वती से मिलती है।

यह बेसिन देश के बहुत बड़े भूभाग में फैला हुआ है। नदी पर पॉच बैराजों की मौजूदगी के कारण पूरे वर्ष नदी की बहाव स्थितियों में काफी बदलाव देखा जाता है। अक्टूबर से जून तक नदी लगभग सूखी रहती है या कुछ खंडों में बहुत थोडा प्रवाह होता है जबकि मॉनसून अवधि (जुलाई- सितंबर) के दौरान इसमें बाढ़ आई रहती है। इस क्षेत्र की लगभग 60 लाख हेक्टेयर भूमि की सिचांई नदी के जल से होती है। नदी के जल का उपयोग प्रवाह में और प्रवाहेतर दोनों ही रूपों में होता है जिसमे सिचांई, घरेलू और औद्योगिक उपयोग शामिल है। (सीपीसीबी 2001 - 02 ए)

देखा गया है कि बिंदु और गैर बिंदु दोनों ही स्रोत नदी के प्रदूषण में अपनी भूमिका निभाते हैं, जिसमें दिल्ली सबसे बड़ा प्रदूषक है और इसके बाद आगरा तथा मथुरा का नंबर आता है।

दिल्ली में जल एवं अपशिष्ट जल अवसंरचना

राजधानी तीन मुख्य स्रोतों, नामत: भूतल जल, भूगर्भ जल और वर्षाजल से जल प्राप्त करती है। यहां पैदा घरेलू और औद्योगिक क्षेत्रों से उत्पन्न अपशिष्ट जल नालों के रास्ते मल उपचार संयंत्रों और सीटीईपी तक पहुंचता है। हालांकि, कृषि क्षेत्र का जल भूमि के रास्ते घुसपैठ कर भूगर्भ जल में जा मिलता है। इसके बाद, संपूर्ण अपशिष्ट जल मल उपचार संयंत्रों से खुले नाले के रास्ते नदी में जा मिलता है जिससे नदी में बिंदुस्रोत प्रदूषण पैदा होता है। साथ ही, मानसून के दौरान, शहर का अतिरिक्त पानी जो गैरबिंदु प्रदूषण को जन्म देता है, वह भी विशाल नालों में मिल जाता है और फिर से यमुना में ही शामिल हो जाता है। इस तरह, देखा जा सकता है कि बिंदु और गैर बिंदु दोनों ही स्रोत मिलकर नदी का प्रदूषण स्तर बढ़ाते हैं। शहर में उत्पन्न अपशिष्ट जल आपूर्ति किए जाने वाले जल का 80 प्रतिशत माना जाता है और इसका उपचार 17 मल उपचार संयंत्रों तथा 13 सीटीईपी के जरिए होता है जिसके बाद यह यमुना में मिल जाता है। (सीडीपी, दिल्ली, 2006)

नदी की गुणवत्ता वजीराबाद बैराज़ के बाद तो बुरी तरह बिगड़ जाती है और मानकों के अनुरूप बिल्कुल नहीं रह पाती है। ऐसा उन 13 नालों के नदी में मिलने के कारण होता है जिनमें घरेलू तथा औद्योगिक उपयोग से उत्पन्न अपशिष्ट जल पूर्णत: अनुपचारित या अंशत: उपचारित रूप में आता है और स्वच्छ जल प्रवाह के अभाव में नदी में वैसा ही गंदा पानी जाता है। शहर में 6555 लाख गैलन अपशिष्ट जल प्रतिदिन पैदा होता है और इसमें से केवल 3167 लाख गैलन प्रतिदिन मल उपचार संयंत्रों के द्वारा शोधित हो पाता है। (जमवाल एवं मित्तल, 2010) दिल्ली में मौजूदा मल उपचार संयंत्रों का ऐसा विवरण तालिका 4 में उपलब्ध है। देखा जा सकता है कि दिल्ली में अधिकांश मल उपचार संयंत्र और सीटीईपी का उपयोग उनकी क्षमता से कम ही हो रहा है। नालों को उपचार संयंत्रों के हिसाब से बताया गया है और उनके संबंधित क्षेत्रों का भी उल्लेख किया गया है।

इस खंड में विभिन्न स्थानों पर उपचार संयंत्रों के रास्ते नदी में मिलने वाली अपशिष्ट जलधाराओं का विवरण तालिका 4 में दिया गया है। नदी में एक अन्य रास्ते जिसे हिंडन कट के नाम से जाना जाता है, के माध्यम से एक प्रत्यक्ष दबाव बनता है। दिल्ली में शुरू होने वाले और ओखला बैराज में गिरने वाले नाले जिनमें कालकाजी, सरिता विहार, तुगलकाबाद, शाहदरा, सरिता विहार पुल के पास, एलपीजी बॉटलिंग प्लांट के पास और तेहखंड आदि शामिल है, ये अध्ययन के दायरे से बाहर हैं। नजफगढ़ नाले की दिल्ली के कुल अपशिष्ट जल प्रवाह में 72.7 प्रतिशत और दिल्ली में नदी की कुल जैवरासायनिक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) के दबाव में 61 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। (सीपीसीबी, 2006-07) अपशिष्ट जल के मौजूदा पुनर्चक्रण की स्थिति इस प्रकार है; राज्याभिषेक स्तंभ संयंत्र-377 लाख गैलन प्रतिदिन, केशोपुर संयंत्र-199.1 लाख गैलेन प्रतिदिन, रिठाला

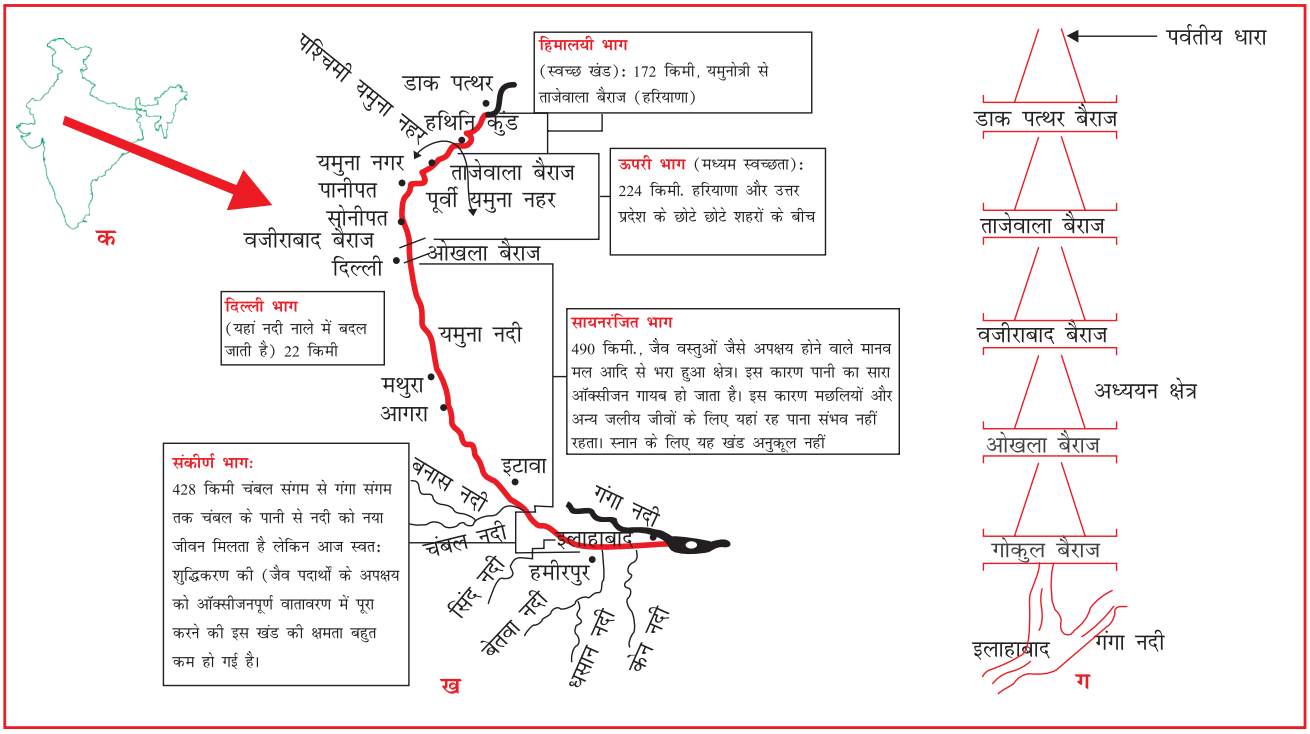

आकृति एक: यमुना का विवरण: (क) घाटी मानचित्र, (ख) प्रदूषण के आधार पर नदी वर्गीकरण, (ग) बैराज क्षेत्र आंकड़े सीपीसीबी (2006-07) से लिए और संशोधित किए गए हैं।

संयंत्र-50 गैलन प्रतिदिन और सेन नर्सिंग होम संयंत्र-22 लाख गैलन प्रतिदिन।

दिल्ली के मास्टर प्लान 2021 के अनुसार, दिल्ली जल बोर्ड शहर की मल उपचार संयंत्र क्षमता, सीटीईपी क्षमता और पुनर्चक्रण तथा पुनरुपयोग क्षमता बढ़ाने की योजना बना रहा है जिससे यमुना नदी में उत्पन्न अपशिष्ट जल की मात्रा कम होगी। प्रत्येक क्षेत्र में प्रस्तावित 'हरित पट्टी' की भी व्यवस्था मास्टर प्लान 2021 में की गई है (दिल्ली मास्टर प्लान 2021, 2007) ऐसे क्षेत्रों का सड़क के किनारे कृषि प्रयोजनों, फार्म हाउसों या वृक्षारोपण के लिए उपयोग किया जाता है। दिल्ली जल बोर्ड ने भी नदी में प्रदूषण कम करने के लिए एक इंटरसेप्टर सीवर योजना का प्रस्ताव किया है।

दिल्ली में यमुना सफाई के प्रयास

- एसटीपी, सीटीईपी में वृद्धि
- इंटरसेप्टर सीवरेज सिस्टम
- तृतीयक उपचार की स्थापना
- पुनर्चक्रण और पुन: उपयोग के विकल्प
- प्रवाह वृद्धि

हालांकि, पुनर्चक्रण और पुन: उपयोग के हस्तक्षेप के साथ साथ तृतीयक उपचार के विकल्प के परिदृश्य में नदी के पानी की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में, यह देखा जाता है कि नदी अपने वांछित स्तर को प्राप्त नहीं कर पाई है (शर्मा, डी. 2013). इसलिए, स्तर 'सी' को प्राप्त करने के लिए नदी में स्वच्छ जल मिलाना महत्वपूर्ण है। नदियों के जल के बंटवारे के लिए अंतर-राज्यीय विवादों के लिए सफल समाधान और जल के मांग पर जल-दबाव के मद्देनजर दिल्ली के लिए नदी में इतनी बड़ी मात्रा में स्वच्छ जल उपलब्ध कराना मुश्किल है।

इसीलिए पुनर्चक्रण और पुन: उपयोग विकल्पों के साथ मल उपचार संयंत्रों की स्थापना के द्वारा नदियों के प्रवाह में प्रदूषित जल का मिश्रण तथा सीवेज उत्पादन को कमतर करना बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे शहर में बेहतर सीवेज अवसंरचना तैयार होगी और नदी पर प्रदूषण का दबाव भी न्यूनतम हो जाएगा। हालांकि, अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित जल छोड़े जाने के कारण यह अब भी अपने वांछित स्तर यानी सी वर्ग की नदी का दर्जा हासिल नही कर पाएगा। इसलिए, यमुना एक्शन प्लान के तहत धन प्रवाह को देखते हुए, यह महत्वपूर्ण है कि नदी के दिल्ली खंड को सी स्तर प्राप्त करने की जरूरत पर ध्यान दिया जाए।

अनुशंसाएं

यमुना एक्शन प्लान के तहत चल रही गतिविधियों को सही दिशा में माना जा रहा है, लेकिन प्रभावी कार्यान्वयन की अवधारणा नदी प्रणाली में स्वच्छ जल के प्रवाह को बढ़ाने के उपाय सहित अन्य इंजीनियरिंग प्रयोगों की आवश्यकता होगी। नदी की जल गुणवत्ता को पुन: बहाल करने के लिए कुछ उपायों का विवरण नीचे के खंड में दिया गया है।

मल उपचार प्रणाली में सुधार

पूरी राजधानी में सीवर व्यवस्था की जानी चाहिए और सम्पूर्ण अपशिष्ट जल को (यदि आवश्यक हो तो पंपों के माध्यम से) उपचार और निपटान के लिए भेजा जाना चाहिए ताकि नदी में 'जीरो' डिस्चार्ज सुनिश्चित किया जा सके। मौजूदा जल उपचार संयंत्रों, जो वांछित निष्पादन मानकों के अनुरूप नहीं हैं, को समुन्नत करके ऐसा किया जा सकता है। नदियों के किसी एक किनारे या दोनों किनारों पर नहर या बांध जैसे वैकल्पिक ड्रेनेज सिस्टम की स्थापना से भी यह प्राप्त किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात, सीवेज पम्पिंग स्टेशनों के लिए 24 घंटे बिजली उपलब्धता की जरूरत है।

तालिका 4: दिल्ली में मल उपचार संयंत्र

सीवरक्षेत्र	संबंधित नाले	मल उपचार संयंत्र	मौजूदा स्थिति
शाहदरा	शाहदरा	यमुना विहार	क्षमता से कम उपयोग
		कोंडली	वही
रिठाला-रोहिणी	नजफगढ़ व सहायक	नरेला	वही
		रिठाला	वही
		रोहिणी	वही
ओखला	मैगजीन रोड, स्वीपर कॉलोनी, खैबर दर्रा, मेटकॉफ हाउस आईएसबीटी, मोरी गेट, तांगा स्टैंड, सिविल मिल, नंबर 14, पावर हाउस, दिल्ली गेट, सेन नर्सिंग होम, बारापुला, महारानी बाग, कालकाजी, सरिता विहार, तुगलकाबाद, एलपीजी बॉटलिंग प्लांट के नजदीक, सरिता विहार पुल के नजदीक, तेहखंड	वसंत कुंज 1 और 2	वही
		महरौली	वही
		ओखला	वही
		सेन नर्सिंग होम	पूर्ण उपयोग में
		दिल्ली गेट	पूर्ण उपयोग में
		घिटोरनी	शुरू नहीं
केशोपुर	नजफगढ़ व सहायक	पप्पनकलां	वही
		नजफगढ़	वही
		केशोपुर	वही
		निलोठी	वही
राज्याभिषेक स्तंभ	नजफगढ़ व सहायक	राज्याभिषेक स्तंभ I, II और III	वही
		ऑक्सीकरण तालाब, तिमारपुर	पूर्ण उपयोग में

स्रोतः *<http://www.dpcc.delhigovt.nic.in>*

'हरित शहर' की अवधारणा को प्रोत्साहित करने के लिए नदियों के मोरचे पर विकास को, आर्थिक रूप से व्यवहारिक और पर्यावरण के अनुकूल समाधान इन दोनों ही पैमानों पर देखा जाना चाहिए। फव्वारे, कृत्रिम झरने, खेल का मैदान, घसियाली भूमि, जल क्रीड़ा, प्रवाहमान नहर, तालाबों और वृक्षारोपण आदि के साथ नदी तटों को पार्क के रूप में अवश्य विकसित किया जाना चाहिए जिसका इस्तेमाल कृत्रिम सुविधाओं के रूप में किया जा सके।

जलग्रहण क्षमता का विस्तार और प्रदूषक स्रोतों पर लगाम

मानसून के दौरान नदी में संग्रहण कर संग्रहित जल और शुष्क अवधि के दौरान छोड़े गए पानी का उपयोग करके इसके माध्यम से प्रवाह में बढ़ोतरी कर यह हासिल किया जा सकता है। मुख्य धारा के लिए, इसकी सहायक धाराओं, अपशिष्ट जल लाने वाले नालों आदि में धारा के नीचे विसरित वातकों व यांत्रिक तलीय वातकों का प्रयोग करके तथा अंतर्धारा प्रपातों का निर्माण करके कृत्रिम रूप से उनमें हवा का प्रबंध किया जाना चाहिए। इसलिए, यमुना एक्शन प्लान के तहत किसी भी प्रदूषण नियंत्रण उपाय को डिजाइन करने के लिए, जल गुणवत्ता मॉडल का प्रदर्शन देखना महत्वपूर्ण है। मॉडलिंग प्रस्तावित उपायों के कार्यान्वयन से पहले उनका मूल्यांकन करने में योजनाकारों को मदद देगी। अपशिष्ट जल का पुनर्चक्रण एवं पुनरुपयोग मुख्य अवसरों में से एक है जिसके द्वारा पानी का उपयोग सिंचाई, बागवानी, और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। विद्युत स्टेशन में टावरों को ठंडा करने के लिए भी आपूर्ति की जा सकती है। भूजल पुनर्भरण और गंदा पानी का उपचार और पुनः उपयोग भी अन्य लाभप्रद विकल्प हो सकते हैं। इतना ही नहीं, गैर बिंदु स्रोतों जैसे खेत खलिहान, नदियों में मनुष्यों और जंतुओं के स्नान, मूर्ति विसर्जन आदि से उत्पन्न हो रहे प्रदूषण पर नियंत्रण भी महत्वपूर्ण है।

शहरी और कृषिगत अप्रयुक्त जल से होते प्रदूषण को वर्षा जल संचय इकाइयां बनाकर तथा टिकाऊ शहरी नाला प्रणाली बनाकर विसरित प्रदूषण कम किया जा सकता है। कृषि अपशिष्ट जो सीधे नदी में पहुंच जाता है उसे नदी के तटवर्ती खेतों में फिल्टर तथा बफर स्ट्रिप बना कर कम किया जा सकता है। ❑

संदर्भ

- *गुर्जर आरके एंव जाट बीसी, 2008, रावत प्रकाशन सीपीसीबी, 2006-07, यमुना नदी के जल की गुणवत्ता स्थिति (1999-2005)*
- *जल आपूर्ति और स्वच्छता के लिए यूनिसेफ और विश्व स्वास्थ्य संगठन का संयुक्त निगरानी कार्यक्रम, 2008*
- *योजना आयोग, 2007: http://planningcommission.nic.in/reports/sereport/ser/wjc/wjc_ch1pdf*
- *नदी कार्य योजना, राष्ट्रीय नदी संरक्षण, स्वच्छ नदियों के लिए कार्यकारी निदेशालय।*
- *परियोजना प्रबंधन सलाहकार (पीएमसी).एनए, यमुना कार्य योजना:*
- *सीएसई-2009 यमुना में प्रदूषण की स्थिति, पर्यावरण एंव विज्ञान के लिए केन्द्र, दिल्ली, भारत*
- *सीपीसीबी 2012-02 ए जलगुणवत्ता स्थिति व सांख्यिकी*
- *नगरीय विकास योजना, 2006. शहरी विकास विभाग, दिल्ली सरकार*
- *दिल्ली नगर में अनुपचारित सीवेज का पुनः उपयोगः एसटीपी और पुनः उपयोग के विकल्प के सूक्ष्म मूल्यांकन*
- *दिल्ली मास्टर प्लान (एमपीडी)-2021-2007 शहरी विकास मंत्रालय*
- *शर्मा, डी, 2013. डॉक्टरल शोध, टेरी विश्वविद्यालय*

कर्मचारी स्टॉक स्वामित्व योजना (ईएसओपी)

कर्मचारी स्टॉक स्वामित्व योजना (ईएसओपी) एक प्रकार की कर्मचारी लाभ योजना है जो कर्मचारियों या कंपनी के काम में लगी श्रमशक्ति को मुनाफे के बंटवारे के आधार पर कंपनी में एक स्वामित्व हित हासिल करने का मौका देती है। इसके लिए कंपनी एक न्यास निधि बनाती है, वह अपने शेयर या नकद योगदान कर या मौजूदा शेयरों को खरीदने के लिए न्यास को नकद योगदान करने वालों से उधार लेती है जिसे बाद में ऋण के तौर पर चुकाया जाता है। हालांकि, कंपनी न्यास में जो भी योगदान करती है, वह एक निश्चित सीमा तक कर कटौती के योग्य होता है। कर्मचारियों को आवंटित शेयर उनके कार्य के लिए उनके पारिश्रमिक का एक हिस्सा हो सकता है और कर्मचारी के पदमुक्त होने या उस कंपनी से रिटायर होने के समय तक ईएसओपी न्यास में रखा जा सकता है। इस न्यास के शेयर कर्मचारी के व्यक्तिगत खातों में आवंटित किए जाते हैं।

21 वर्ष से अधिक उम्र के पूर्णकालिक कर्मचारी इस योजना में भाग ले सकते हैं लेकिन शेयरधारक कंपनी के भीतर जैसे-जैसे वरिष्ठता लाभ प्राप्त करते हैं उनके शेयर अधिकार स्वत: बढ़ जाते हैं जिसे निहितांश (वेस्टिंग) कहते हैं। कंपनी छोड़ने या अवकाश ग्रहण करने के समय वे शेयर प्राप्त कर सकते हैं जिसे कंपनी को उचित बाजार मूल्य पर उनसे वापस खरीदना ही होता है। निजी फर्म में कर्मचारी खुद को आवंटित शेयरों के स्थानांतरण या उन्हें बंद करने जैसे सभी प्रमुख मुद्दों पर मतदान कर सकते हैं लेकिन यह निजी कंपनी पर निर्भर करता है कि वह मतदान के अधिकार का प्रयोग करे या नहीं जबकि सार्वजनिक संगठन में हितधारकों अर्थात् कर्मचारियों को सभी मुद्दों पर वोट करना आवश्यक है।

ईएसओपी से कर संबंधी कई लाभ हैं। शेयर में किए गए योगदान पर कर में छूट प्राप्त होती है, कंपनियों को हर साल ईएसओपी शेयर जारी करके अधिक नकद प्रवाह प्राप्त करने का मौका मिल जाता है। कंपनियां हर साल अपने विवेकाधिकार से इसमें नकद योगदान कर सकती हैं और इसके लिए कर कटौती हो सकती है। ईएसओपी में नए शेयर, मौजूदा या ट्रेजरी शेयरों को खरीदने के लिए पैसे उधार लिए जा सकते हैं और ईएसओपी में इस तरह के योगदान को कर छूट हासिल होती है। एक बार यदि किसी कंपनी में 30 प्रतिशत शेयर का स्वामित्व ईएसओपी के पास हो तो, विक्रेता बिक्री आय का पुनर्निवेश अन्य प्रतिभूतियों में कर सकते हैं और प्राप्त लाभ पर कोई कर देने से बच सकते हैं। इसके अलावा कर्मचारियों को ईएसओपी में उनके योगदान पर कोई कर भुगतान नहीं करना होता है। ❑

एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ)

एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) ऐसे फंड होते हैं जिनका कारोबार स्टॉक एक्सचेंज में बहुत हद तक शेयरों की तरह ही होता है, और वे आमतौर पर नेस्डेक-100 सूचकांक एसएंडपी 500, डाओ जोन्स आदि बंध सूचकांक या शेयर सूचकांक पर देखे जा सकते हैं। ईटीएफ शेयर बंध पत्र कमोडिटि आदि धारण कर सकते हैं। शेयर बाजारों के सबसे लोकप्रिय कारोबारी उत्पादों में शुमार होने के कारण ये निवेश का एक आकर्षक विकल्प हो गये हैं क्योंकि ये कर-क्षमता, कम लागत और शेयर जैसे फायदे उपलब्ध कराते हैं। ईटीएफ उत्पाद खरीदना उस पोर्टफोलियो के शेयर खरीदने जैसा है जो वास्तव में अपने मूल सूचकांक के सभी फायदे और प्रतिफल पा रहा हो। ईटीएफ की एक महत्वपूर्ण विशेषता जो इसे अन्य प्रकार के फंड से अलग करती है, वह ये है कि अपने मूल या संगत सूचकांक का प्रदर्शन पीछे छोड़ने की कोशिश न करके केवल अपना प्रदर्शन ठीक करने की कोशिश करता है। ईटीएफ म्युचुअल फंड और एकक निवेश न्यास दोनों सुविधाओं का एक मिश्रण है, जिसे दिन के कारोबार के अंतिम क्षणों में भी इसके शुद्ध परिसंपदा मूल्य पर बेचा जा सकता है और यह क्लोज एंड फंड की ही तरह खरीदा-बेचा जा सकता है। ईटीएफ अमेरिका और यूरोप में क्रमश: 1993 और 1999 से अस्तित्व में हैं।

ईटीएफ की एक मुख्य विशेषता लगभग निष्क्रिय प्रबंधन है यानी कि फंड मैनेजर अपने इस फंड को सक्रिय प्रबंधित फंड की तुलना में कम प्रशासनिक खर्च पर और मामूली तथा लगभग अनियमित समायोजन से भी इस पर नजर रख सकता है। ईटीएफ में प्रतिभूतियों के कारोबार की संभावना कम है। वे उच्च पूंजीगत लाभ वितरण देने की संभावना रखते हैं जिससे निवेश पर अधिक सक्षम वापसी का अवसर बनता है। चूंकि, इसमें शेयर की बहुलता होती है, इसलिए व्यक्तिगत शेयरों की तुलना में इनका कारोबार अधिक मात्रा में होता है जिसके परिणामस्वरूप इसकी तरलता उच्च हो जाती है और निवेशकों को न्यूनतम जोखिम और खर्च के साथ निवेश की स्थिति बदलने का अवसर मिल जाता है। एसपीडीआर जो एस एंड पी के 500 सूचकांकों पर नजर रखता है, सबसे अधिक प्रसिद्ध ईटीएफ कारोबार में से एक है।

भारत में ईटीएफ ने पिछले 4 महीनों में भारतीय शेयर बाजार में 2.3 अरब डॉलर का संचार किया है जिसमें से 2014 के पहले दो महीनों में 1.2 अरब डॉलर की बिक्री दर्ज की गयी। सूत्रों के अनुसारए बाजार के विनियमित क्षेत्रों में अगले दो वर्षों में क्रमिक सुधार हो सकते हैं और निवेश चक्र में वृद्धि हो सकती है। भारत में गत चार माह में ईटीएफ से प्राप्त 2.3 अरब डॉलर में से लगभग 1.5 अरब डॉलर समर्पित फंड से और शेष मार्केट फंड से प्राप्त हुए हैं। एक भारत केंद्रित ईटीएफ की प्रबंधनाधीन परिसंपत्तियां (एयूएम) अप्रैल के 6.72 अरब डॉलर की तुलना में 37 प्रतिशत वृद्धि के साथ जून में 9.2 अरब डॉलर हो गई हैं। ईटीएफ ने भारतीय बाजारों में पिछले तीन महीनों में लगभग 1.8 अरब डॉलर और गत माह में लगभग 90 करोड डॉलर निवेश किया है। ❑

(संकलन- वाटिका चंद्रा, उपसंपादक, *ईमेल: vchandra-iis2014@gmail-com*)

बजट और स्वस्थ भारत का सपना

रवि शंकर

विशेषज्ञों का मानना है कि भारत जैसे विशाल देश में स्वास्थ्य पर किया जाने वाला यह खर्च विश्व के अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। दूसरा तर्क यह है कि सरकार द्वारा कम बजट और सुविधाएं दिए जाने के कारण लोगों को निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की ओर जाना पड़ता है। निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की भागीदारी आज सरकार से कहीं अधिक हो गई है। प्राथमिक स्वास्थय केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को बेहतर बनाना जरूरी है ही, साथ ही, आयुष पद्धतियों को बढ़ावा देकर देशज विद्याओं को समृद्ध किया जा सकता है

एक पुरानी और बहुमान्य संकल्पना है कि पढ़ाई, दवाई और लड़ाई यानी कि शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय तीनों पूरी तरह नि:शुल्क होने चाहिए। स्वाधीन भारत के संविधान निर्माताओं ने संभवत: इसी बात को ध्यान में रख कर भारत को एक कल्याणकारी राज्य घोषित किया था और इसको ही ध्यान में रख कर सरकार हर वर्ष बजट बनाती है। बजट में हजारों करोड़ रुपये स्वास्थ्य के लिए आवंटित भी किए जाते हैं। परंतु दु:ख का विषय यह है कि तमाम सरकारी प्रयत्नों के बावजूद अभी तक स्वास्थ्य नि:शुल्क हो नहीं पाया है।

नयी सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट में भी स्वास्थ्य के लिए पिछली सरकार की ही भांति प्रावधान किए गए हैं। सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के लिए 21912 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया है। इसके अतिरिक्त नए एम्स खोलने के लिए 500 करोड़ रुपये दिए गए हैं। समेकित बाल विकास सेवाओं हेतु 18691 करोड़ रुपये दिए गए हैं और आयुष के लिए कुल 411 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया है। साथ ही फार्मास्यूटिकल रिसर्च के लिए 87 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इस प्रकार देखा जाए तो स्वास्थ्य के लिए सरकार ने बजट में कुल 41601 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया है। यानी कि सरकार ने पिछली यूपीए सरकार के बजट के 37300 करोड़ रुपयों की तुलना में कहीं अधिक बजट स्वास्थ्य के लिए आवंटित किया है।

देखा जाए तो इसमें प्रधानमंत्री की प्राथमिकताओं की झलक साफ दिखाई देती है। वित्त मंत्री अपनी पार्टी के घोषणापत्र के हर राज्य में एम्स का वादा पूरा करने की दिशा में बढ़े। उन्होंने आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र में विदर्भ और यूपी के पूर्वांचल में एम्स जैसे चार संस्थानों के लिए 500 करोड़ आवंटित किए। 12 मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा भी की। गांवों के विकास के लिए ग्रामीण हेल्थ रिसर्च सेंटर खोलने का भी ऐलान किया। प्रधानमंत्री के एक वादे ''सबके लिए स्वास्थ्य'' का इस्तेमाल करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि, नि:शुल्क औषधि सेवा और नि:शुल्क निदान सेवा प्राथमिकता के आधार पर शुरू की जाएगी। इस प्रकार बजट को स्वास्थ्य के लिहाज से ठीक-ठाक कहा जा सकता है। परंतु देश के जनस्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की मानें तो यह बजट पर्याप्त नहीं है।

सस्ती दवाइयों की उपलब्धता के लिए देशभर में चला रहे कंट्रोल एमएमआरपी कैंपेन से जुड़े कार्यकर्ताओं का मानना है कि रेल बजट की तर्ज पर स्वास्थ्य के लिए भी अलग से बजट लाया जाना चाहिए। उनका कहना है कि सरकार स्वास्थ्य पर और ध्यान देते हुए स्वास्थ्य बजट में और पारदर्शिता लाए। इसके लिए आवश्यक है कि रेल बजट की तरह स्वास्थ्य बजट भी अलग से पेश किया जाए। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत जैसे विशाल देश में स्वास्थ्य पर किया जाने वाला यह खर्च विश्व के अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। दूसरा तर्क यह है कि सरकार द्वारा कम बजट और सुविधाएं दिए जाने के कारण लोगों को निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की ओर जाना पड़ता है। निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की भागीदारी आज सरकार से

लेखक गांधी दर्शन के शोधार्थी और संप्रति इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन एडवांसमेंट में शोध तथा प्रकल्प समन्वयक हैं। पंचवटी फांउडेशन के लिए गौसंपदा के आर्थिक-वैज्ञानिक-पर्यावरणीय आयामों पर पांच खंडों में शोध ग्रंथ के संकलन व संपादन के अलावा पारंपरिक कृषि पर शोध कार्य किया है। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की शोध परियोजना के अंतर्गत 'राष्ट्रवादी पत्रकारिता' विषय पर पुस्तक प्रकाशित। ईमेल: ravinoy@gmail.com

कहीं आधिक हो गई है। 2008-09 के एक अध्ययन के अनुसार देश के स्वास्थ्य-व्यय का 71.62 प्रतिशत निजी क्षेत्र से आता है और केवल 26.7 प्रतिशत सरकार द्वारा। इससे स्वास्थ्य सेवाएं मंहगी और गरीबों की पहुंच से दूर हो रही हैं।

सबको स्वास्थ्य का सपना

बहरहाल इस बजट के कुछ प्रमुख मुद्दे हैं जिन पर अलग से चर्चा की जानी आवश्यक प्रतीत होती है। सबसे पहला मुद्दा है सबके लिए स्वास्थ्य। इसके लिए सरकार ने राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन चला रखा है। पिछली सरकार ने शहरी स्वास्थ्य मिशन की भी शुरूआत की थी परंतु उसे राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के बजट में ही रखा गया था। इस सरकार ने दोनों को अलग-अलग कर दिया है। परंतु सवाल है कि क्या राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन सबको स्वास्थ्य के लक्ष्य को पूरा कर सकता है?

ज्ञातव्य है कि देश की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति वर्ष 1983 में बनाई गई जिसमें पहली बार सभी नागरिकों को स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया था। यानी कि स्वाधीनता मिलने के लगभग 46 वर्ष बाद सरकार को देश के स्वास्थ्य की चिंता हुई। इसके बाद देश में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और इसके उप केंद्र खोले जाने लगे। परंतु इनकी संख्या देश की जनसंख्या के अनुपात में काफी कम थी। 2013 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, वर्ष 2011 तक देश में एक लाख छिहत्तर हजार आठ सौ बीस सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (ब्लॉक स्तर पर), प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और उप-केंद्र स्थापित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त देश में ग्यारह हजार चार सौ तिरानबे सरकारी अस्पताल हैं और सत्ताईस हजार तीन सौ उनतालीस आयुष केंद्र। देश में एलोपैथ के 883812 डॉक्टर हैं। नर्सों की संख्या अठारह लाख चौरानबे हजार नौ सौ अड़सठ बताई गई है। परंतु दूसरी ओर देश में पांच लाख से अधिक गांव हैं और अधिकतर गांवों में स्वास्थ्य सेवाएं नहीं पहुंच रही हैं।

अधिकांश प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति खराब है। कोई भी डॉक्टर गांवों में जाने के लिए तैयार नहीं है। जिन्हें भेजा जाता है, वे केंद्रों में बैठते नहीं हैं। ज्यादा दिन नहीं हुए हैं, जब एमबीबीएस के छात्रों के लिए गांवों में एक वर्ष के लिए सेवा देना अनिवार्य किए जाने पर डॉक्टरों ने तीखा विरोध किया था। ऐसे में यह चिंतनीय हो जाता है कि यदि पर्याप्त संख्या में प्राथमिक चिकित्सा केंद्र खोल भी दिए जाएंगे तो उसके लिए डॉक्टर कहां से लाए जाएंगे। हालांकि वर्ष 2012 के भारत सरकार के आंकड़ों को देखें तो प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों के लिए कुल 24049 डॉक्टरों की आवश्यकता थी और इसके लिए सरकार ने 31867 डाक्टरों को नियुक्त करने की व्यवस्था की जिनमें से 28984 डाक्टर केंद्रों में तैनात भी हैं। इस पर भी कुल 903 केंद्र डाक्टरविहीन हैं और 14873 केंद्रों में केवल एक ही डाक्टर उपलब्ध है। 7676 केंद्रों में लैब तकनीशियन नहीं हैं तो 5549 केंद्रों में फार्मास्यूटिकल नहीं हैं। केवल 5438 केंद्रों में महिला डाक्टर उपलब्ध हैं। दूसरी ओर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेषज्ञ डाक्टरों की संख्या और भी दयनीय है। आवश्यकता है 19332 विशेषज्ञों की जबकि सरकार केवल 9914 की ही व्यवस्था कर पाई है और उनमें से भी 5858 ही कार्यरत हैं।

वर्ष 2012 के भारत सरकार के आंकड़ों को देखें तो प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों के लिए कुल 24049 डॉक्टरों की आवश्यकता थी और इसके लिए सरकार ने 31867 डाक्टरों को नियुक्त करने की व्यवस्था की जिनमें से 28984 डाक्टर केंद्रों में तैनात भी हैं। इस पर भी कुल 903 केंद्र डाक्टरविहीन हैं और 14873 केंद्रों में केवल एक ही डाक्टर उपलब्ध है।

ये आंकड़े बताते हैं कि देश की बड़ी आबादी के लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाएं कितनी कम हैं। इससे यह भी साफ है कि यदि हमें सबको स्वास्थ्य का सपना साकार करना है तो इसके दस-बीस गुणा बजट की आवश्यकता पड़ेगी, जो वर्तमान स्थिति में संभव ही नहीं है। ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? यदि हम रोगों की बात करें तो वर्तमान में जो रोग देश में व्यापक हो रहे हैं, उनमें से अधिकांश हमारी जीवनशैली और खान-पान में आए बदलाव के कारण बढ़ रहे हैं। चाहे वह हृदय रोग हो या रक्तचाप, मधुमेह हो या फिर मोटापा। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में भी मलेरिया, डायरिया और तपेदिक जैसी बीमारियां ही अधिक देखी जा रही हैं। वर्ष 2012 में जिन बीमारियों के कारण अधिक मौतें (उन बिमारियों का ज्ञात मामले और मौ का अनुमान) हुई उनकी सूची तालिका 1 में है।

तालिका 1

क्र.	रोग	मामले	मौतें	मौत दर (%)
1	रैबीज	212	212	100.00
2	एक्यूट इंसेफ्लाइटिस	8344	1256	15.05
3	टिटेनस	3421	248	7.25
4	मेनिंगकोकल मेनिनजाइटिस	5609	413	7.36
5	तपेदिक (2011)	1515872	63265	4.17
6	स्वाइन फ्लू	5044	405	8.03
7	टिटेनस (नवजात)	748	42	5.61
8	डिप्थिरिया	3902	60	1.54

स्रोतः www.cbhidghs.nic.in

इससे यह स्पष्ट है कि इनमें से अधिकांश रोगों में शल्य चिकित्सा की कोई आवश्यकता नहीं है और यह भी कि इनमें से अधिकांश रोग देशज चिकित्सा पद्धतियों यानी कि आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा तथा वैकल्पिक पद्धतियों यानी कि होमियोपैथ, यूनानी आदि से भी ठीक किए जा सकते हैं। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि ये पद्धतियां अनुभवसिद्ध हैं और सस्ती भी हैं। इसलिए आयुष की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। परंतु आयुष को लेकर सरकार की नीतियां न तो तब ठीक थीं और न ही अब ठीक हैं।

आयुषः भारतीय व वैकल्पिक पद्धतियां

वर्तमान में देश में आयुष क्षेत्र के तहत बुनियादी ढांचे में 62649 बिस्तरों की क्षमता के साथ 3277 अस्पतालों, 24289 औषधालयों, 495 अंडर ग्रेजुएट कॉलेजों, 106 स्नातकोत्तर विभागों वाले कॉलेज और देश में भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी के 785185 पंजीकृत चिकित्सक हैं। परंतु दुख की बात यह है कि सरकार ही आयुर्वेद व होमियोपैथ के डाक्टरों के साथ भेदभाव करती है। आयुर्वेद के डाक्टरों को शल्य चिकित्सा यानी कि ऑपरेशन करने की छूट नहीं है। हालांकि आयुर्वेद में शल्य चिकित्सा का विशद् वर्णन है और इसका काफी गौरवपूर्ण इतिहास भी रहा है। माना जाता है कि सुश्रुत मस्तिष्क का ऑपरेशन करने वाले दुनिया के पहले चिकित्सक थे। इस पर भी अंग्रेजी सरकार ने देश की

तालिका 2: उपकेंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या

क्र. सं	राज्य/संघशासित प्रदेश	2005			2012		
		उपकेंद्र	प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	सामुदायिक स्वास्थ्य	उपकेंद्र	प्राथमिक स्वास्थ्य	सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
1	आंध्र प्रदेश	12522	1570	164	12522	1624	281
2	अरुणाचल प्रदेश#	379	85	31	286	97	48
3	असम	5109	610	4604	100	975	109
4	बिहार[4] #	10337	1648	101	9696	1863	70
5	छत्तीसगढ़	3818	517	116	5111	755	149
6	गोवा	172	19	5	205	19	5
7	गुजरात	7274	1070	272	7274	1158	318
8	हरियाणा	2433	408	72	2520	447	109
9	हिमाचल प्रदेश	2068	439	66	2065	472	76
10	जम्मू एंड कश्मीर	1879	334	70	1907	396	84
11	झारखंड[4]	4462	561	47	3958	330	188
12	कर्नाटक	8143	1681	254	8871	2310	180
13	केरल*1	5094	911	106	4575	809	217
14	मध्य प्रदेश[4]	8874	1192	229	8869	1156	333
15	महाराष्ट्र	10453	1780	382	10580	1811	363
16	मणिपुर	420	72	16	420	80	16
17	मेघालय	401	101	24	397	109	29
18	मिजोरम	366	57	9	370	57	9
19	नगालैंड	394	87	31	396	126	21
20	ओड़िसा	5927	1282	231	6688	1226	377
21	पंजाब	2858	484	116	2951	449	132
22	राजस्थान	10512	1713	326	11487	1528	382
23	सिक्किम	147	24	4	147	24	2
24	तमिलनाडु	8682	1380	35	8706	1227	385
25	त्रिपुरा	539	73	10	719	79	12
26	उत्तराखंड	1576	225	44	1848	257	59
27	उत्तर प्रदेश	20521	3660	386	20521	3692	515
28	पश्चिम बंगाल	10356	1173	95	10356	909	348
29	अंडमान एंड निकोबार द्वीप समूह	107	20	4	119	22	4
30	चंडीगढ़	13	0	1	16	0	2
31	दादरा तथा नगर हवेली	38	6	1	50	6	1
32	दमन तथा दीव	21	3	1	26	3	2
33	दिल्ली	41	8	0	41	5	0
34	लक्षद्वीप	14	4	3	14	4	3
35	पुड्डूचेरी	76	39	4	51	24	4
	संपूर्ण भारत	**1460**	**23236**	**3346**	**148366**	**24049**	**4833**

स्रोत: *भारत में ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी, 2012*

नोट:

\# स्वास्थ्य संस्थानों के मानकीकरण को लागू किए जाने के कारण 2011 में आंकड़ों की पुनरावृत्ति हुई। इस दौरान कुछ स्वास्थ्य केंद्रों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बनाया गया और इसके उलट भी कुछ काम हुए। इसी तरह कुछ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को अधिक आधुनिक सुविधाएं देकर तालुक अस्पताल बना दिया गया।

[2] 50 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित। भारत सरकार के मानकों पर खरा उतरने के लिए सहायक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और समुन्नत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के नाम बदलकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र या सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र किया गया। प्रति ब्लाक एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अनुसार 385 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित।

[3] सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में बदले गये प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र

[4] नौवीं पंचवर्षीय योजना की समाप्ति की तुलना में दसवीं पंचवर्षीय योजना की समाप्रि पर कार्य एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में कमी राज्य के विभाजन के कारण देखी गई।

[5] मार्च 2008 में स्वास्थ्य उपकेंद्रों की संख्या में कमी राज्य द्वारा जारी स्पष्टीकरण के अनुसार कार्यरत केंद्रों के समुलयन/ वास्तविक स्थिति के कारण दर्ज की गई है।

* काल में स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में कमी राज्य द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार 2009 के दौरान स्वास्थ्य संस्थानों के मानकीकरण के कारण आई है।

[6] राज्य ने बताया कि 79 अन्य अस्पताल कार्यरत हैं जिनमें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

परतंत्रता के कालखंड में आयुर्वेद पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगा रखे थे जो आज भी यथावत् चले आ रहे हैं।

इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतिबंध था पंजीकरण पर। आयुर्वेद एक परंपरागत ज्ञान परंपरा है और इस कारण बड़ी संख्या में इसके विशेषज्ञ आज की पढ़ाई से दूर हैं। इस कारण उनका पंजीकरण नहीं हो सकता। परंतु अंग्रेजी कानूनों के अनुसार केवल रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर ही चिकित्सा कार्य कर सकता है। इस कारण बड़ी संख्या में आयुर्वेदिक वैद्य अवैध सिद्ध हो जाते हैं। दुखद यह है कि स्वाधीनता के 67 वर्षों के बाद भी भारत सरकार इसका कोई समाधान नहीं निकाल पाई। वास्तव में देखा जाए तो प्रारंभ में सरकार का आयुर्वेद के प्रति काफी उपेक्षा का भी रवैया था। अंग्रेजों के जाने के बाद भी भारतीय सरकारों ने आयुर्वेद को समाप्त कर इसके स्थान पर एलौपैथ को स्थापित करने पर ही पूरी ताकत लगाई। इसका ही परिणाम है कि आज भी 41 हजार करोड़ रुपयों के स्वास्थ्य बजट में केवल 411 करोड़ रुपये ही आयुष को दिए गए हैं और उसमें से भी आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा के लिए केवल 217 करोड़ रुपये ही आवंटित किए गए हैं।

देशज प्रणालियों की ओर सरकार का ध्यान स्वाधीनता मिलने के 17 वर्ष बाद 1964 में गया था जबकि पहली स्वास्थ्य नीति 1952 में ही बनी थी। 1964 में सरकार ने आयुर्वेदिक औषधालय खोलने का निर्णय लिया था, परंतु इसकी चाल इतनी धीमी थी कि वर्ष 2007 तक केवल 31 औषधालय ही खोले गए थे। हालांकि इस क्षेत्र में कितनी अधिक संभावनाएं थीं, इसका पता केवल इस एक बात से लगाया जा सकता है कि आज देश में 24289 आयुर्वेदिक औषधालय हैं और वह भी न्यूनतम बजट के बावजूद। इसके बाद भी आयुर्वेद जैसी भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध, विकास और इनके अस्पतालों की स्थापना पर सरकार का ध्यान 1995 में गया यानी कि स्वाधीनता से पूरे 48 वर्ष बाद। मार्च 1995 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रलय के तहत भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होमियोपैथी विभाग की रचना की गई और बाद में वर्ष 2003 में इसका नाम बदल कर आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होमियोपैथी विभाग (आयुष) कर

तालिका 3: राज्यवार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में डाक्टरों की संख्या/बिना डाक्टर/लैब टैक्नीशियन/फार्मासिस्ट वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या

क्र. सं.	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	मार्च, 2012 की स्थिति के अनुसार								
		कुल कार्यरत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या								
		कुल कार्यरत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	4 से अधिक डॉक्टर वाले	3 से अधिक डॉक्टर वाले	2 से अधिक डॉक्टर वाले	1 से अधिक डॉक्टर वाले	बिना डॉक्टर	बिना लैब टैक.	बिना फर्मा.	महिला डॉक्टर वाले
1	आंध्र प्रदेश	1624	0	105	656	863	0	251	314	929
2	अरुणाचल प्रदेश #	97	2	4	33	48	10	55	64	20
3	असम	975	78	102	379	416	0	241	136	363
4	बिहार #	1863	421	32	62	1330	18	छ।	212	165
5	छत्तीसगढ़	755	2	16	106	328	303	312	240	80
6	गोवा	19	13	0	0	6	0	0	0	13
7	गुजरात	1158	0	0	NA	857	NA	NA	483	NA
8	हरियाणा[2]	447	8	11	114	162	43	106	66	85
9	हिमाचल प्रदेश	472	2	7	90	345	28	210	194	90
10	जम्मू एंड कश्मीर	396	80	111	187	18	0	91	29	270
11	झारखंड	330	8	13	112	121	76	215	218	54
12	कर्नाटक	2310	0	0	0	2310	0	544	373	576
13	केरल	809	7	109	47	646	0	698	8	459
14	मध्य प्रदेश	1156	2	20	131	815	188	506	643	95
15	महाराष्ट्र	1811	0	0	1558	253	0	418	135	584
16	मणिपुर	80	32	26	16	5	1	62	28	53
17	मेघालय #	109	2	0	15	92	0	8	2	32
18	मिजोरम	57	0	0	0	49	8	7	7	12
19	नगालैंड	126	0	0	14	84	28	60	29	18
20	ओडिसा	1226	0	0	510	623	93	1226	131	115
21	पंजाब	449	10	21	121	218	79	171	26	192
22	राजस्थान	1528	1	15	271	1221	20	283	1344	207
23	सिक्किम	24	0	0	8	16	0	0	10	17
24	तमिलनाडु	1227	90	447	640	50	0	528	196	558
25	त्रिपुरा	79	40	24	11	4	0	46	17	31
26	उत्तराखंड	257			NA			129	13	16
27	उत्तर प्रदेश	3692	9	15	414	3254	0	603	274	286
28	पश्चिम बंगाल	909	0	0	165	736	8	904	357	72
29	अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	22	2	10	9	1	0	1	0	12
30	चंडीगढ़	0	0	0	0	0	0	0	0	0
31	दादरा तथा हवेली	6	0	0	6	0	0	0	0	5
32	दमन तथा दीव	3	0	0	2	1	0	0	0	2
33	दिल्ली	5	1	3	0	1	0	1	0	4
34	लक्षद्वीप	4	1	3	0	0	0	0	0	4
35	पुड्डूचेरी	24			NA			0	0	19
	संपूर्ण भारत[1]	**24049**	**811**	**1094**	**5677**	**14873**	**903**	**7676**	**5549**	**5438**

स्रोत: *भारत में ग्रामीण स्वास्थय सांख्यिकी, 2012*

नोट

 # 2010 और 2011 के आंकड़े दोहराए गए।

कुल प्रतिशत की गणना के लिए जिन राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में मानव संसाधन के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, उन्हे छोड़ा जा सकता है।

हरियाणा में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के साथ एक ही स्थान पर मौजूद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की गिनती नहीं की गई।

दिया गया। हालांकि सिद्ध और यूनानी जैसी पद्धतियां काफी कम ही प्रचलित हैं, परंतु इससे सरकार का ध्यान आयुर्वेद की ओर से कम ही हो गया। आयुष की स्थापना के बावजूद यह सब लंबे समय तक सरकारी दिखावा ही बना रहा। हजारों करोड़ के स्वास्थ्य मंत्रालय के बजट में से आयुष को केवल कुछ सौ करोड़ रुपये ही मिलते रहे हैं। इतना ही नहीं, ऐलोपैथ के शोध, शिक्षण आदि के लिए भी इससे कहीं अधिक रुपये दिए जाते रहे हैं।

इस भेदभाव के बावजूद आयुष तेज गति से आगे बढ़ा। एक तो ये पद्धतियां सस्ती हैं, इस कारण कम बजट में भी ये तेजी से फैलीं। साथ ही एलौपैथी चिकित्सा पद्धति की अनेक खामियां और अनेक रोगों के इलाज में इसकी असमर्थता उजागर होने के बाद आम जनता उससे दूर जाने लगी। वास्तव में देखा जाए तो चिकित्सकीय विकास के तमाम दावों के बावजूद देश की स्वास्थ्य समस्याओं में कोई कमी नहीं आई है। आम आदमी को परेशान करने वाले मलेरिया, डायरिया, तपेदिक, दमा, कैंसर आदि रोग पहले से कहीं अधिक जटिल और खतरनाक हो गए हैं। एलौपैथ का इलाज काफी मंहगा और आम जनता की पहुंच से दूर है। ऊपर हम देख चुके हैं कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में पर्याप्त संख्या में डाक्टर ही नहीं हैं और सामुदायिक केंद्रों में भी विशेषज्ञ डाक्टरों का घोर अभाव है। डाक्टर मूलत: शहरों में बैठे हैं और ऊंची फीस वसूल कर ही ईलाज कर रहे हैं। सरकारी अस्पतालों में दुर्व्यवस्थाओं का यह आलम है कि मध्यम वर्ग तक इनमें जाने से घबराता है। संभवत: सरकार ने भी इस तथ्य को स्वीकार कर लिया प्रतीत होता है और संभवत: इसी कारण देश में और अधिक एम्स खोले जाने का प्रयास हो रहा है। परंतु वर्तमान एम्स का ही स्तर संतोषजनक नहीं रह गया है। ऐसे में नए खुलने वाले एम्सों की स्थिति वर्तमान सरकारी अस्पतालों जैसी नहीं हो जाएगी, इसकी क्या गारंटी है?

चिकित्सा और व्यवसायीकरण

सरकारी अस्पतालों और प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों की दुरावस्था का सबसे बड़ा कारण है एलौपैथी चिकित्सा का अत्यंत मंहगा होना और इस कारण इसका व्यवसायीकरण। निजी संस्थानों से एमबीबीएस की पढ़ाई करने में आम तौर पर 30-40 लाख रुपयों का खर्च आता है। सरकारी संस्थानों से पढ़ाई करने में भी 4-5 लाख रुपये खर्च हो जाते हैं। स्वाभाविक ही है कि जो इतनी मंहगी शिक्षा ले रहा है, वह समाजसेवा तो नहीं ही करेगा। इसमें भी ध्यान देने की बात यह है कि इस पद्धति में रोग पहचानने में ही सर्वाधिक व्यय हो जाता है। रोग पहचानने की मशीनें काफी मंहगी हैं और उनके कारण इसका ईलाज भी काफी मंहगा है। एक एलौपैथ के अस्पताल के स्थापित करने का खर्च कई करोड़ में आएगा। इतना खर्च करने वाली संस्था समाजसेवा नहीं ही कर सकती। भले ही उसे जमीन सरकार ने दी हो। स्वाभाविक ही है कि एलौपैथ ही चिकित्सा के व्यवसायीकरण के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार है।

हालांकि आयुर्वेद का भी कुछ हद तक व्यवसायीकरण होना प्रारंभ हो गया है परंतु फिर भी इस क्षेत्र में अनेक लोग और संस्थाएं निस्स्वार्थ रूप से कार्यरत हैं। इसके अलावा देश के गांव-गांव में देसी वैद्य पाए जाते हैं। अधिकांश आयुर्वेदिक दवाएं घर में भी बनाई जा सकती हैं। लोग बनाते भी हैं। उनकी विधियां सर्वसुलभ हैं। सीधी-सी बात है कि इसका व्यवसायीकरण न तो फलदायक है और न ही संभव है। सरकार यदि आयुर्वेद को स्कूली शिक्षा से ही बढ़ाना शुरू कर दे, तो स्वास्थ्य पर किया जाने वाला बजट काफी कम किया जा सकता है।

देशज प्रणालियों की ओर सरकार का ध्यान स्वाधीनता मिलने के 17 वर्ष बाद 1964 में गया था जबकि पहली स्वास्थ्य नीति 1952 में ही बनी थी। 1964 में सरकार ने आयुर्वेदिक औषधालय खोलने का निर्णय लिया था, परंतु इसकी चाल इतनी धीमी थी कि वर्ष 2007 तक केवल 31 औषधालय ही खोले गए थे। हालांकि इस क्षेत्र में कितनी अधिक संभावनाएं थीं, इसका पता केवल इस एक बात से लगाया जा सकता है कि आज देश में 24289 आयुर्वेदिक औषधालय हैं और वह भी न्यूनतम बजट के बावजूद।

एक और महत्वपूर्ण मुद्दा है अंतरराष्ट्रीय दबाव-समूहों के कारण लिए जाने वाले फैसले। उदाहरण के लिए सभी गर्भवती स्त्रियों के लिए एड्स की जांच करवाना सरकार ने अनिवार्य करवा रखा है। यह एक व्यर्थ की कवायद है। इसमें केवल सरकार का खर्च होना है। यह जांच वैकल्पिक की जानी चाहिए। इसी प्रकार और भी कई व्यवस्थाएं हैं, जो जरूरी नहीं होने पर भी सरकार द्वारा अनिवार्य रूप से थोपी जा रही हैं और जिसमें काफी खर्च भी किया जा रहा है। इसका प्रभाव आम आदमी पर भी पड़ रहा है।

आयुर्वेदिक वैद्य प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों को भी सक्रिय कर सकते हैं। थोड़े से प्रशिक्षण से गांव के वैद्य को गांव में होने वाली सामान्य बीमारियों जैसे कि मलेरिया, डायरिया, खांसी-जुकाम, ज्वर, गैस्ट्रिक आदि का ईलाज करने योग्य बनाया ही जा सकता है। इतना तो वे पहले से भी जानते ही हैं, केवल एक पंजीकरण की आवश्कता होती है जो पूरी की जा सकती है। उन्हें इन केंद्रों में बैठाया जा सकता है। साथ ही एमबीबीएस डाक्टर उपलब्ध न होने पर बीएएमएस डाक्टरों को भी बैठाया जा सकता है। इससे आयुर्वेद की महत्ता भी बढ़ेगी और उसकी शिक्षाओं का भी प्रचार प्रसार होगा। साथ ही चिकित्सा का व्यवसायीकरण भी रुकेगा। देखा जाए तो शल्य क्रिया यानी कि ऑपरेशन के अलावा और किसी भी रोग के ईलाज के लिए आयुर्वेद और अन्य चिकित्सा प्रणालियां पर्याप्त सक्षम हैं। इसलिए देश भर में मंहगे अस्पतालों की उतनी अधिक आवश्यकता नहीं है, बनिस्पत कि सामान्य बीमारियों को प्रारंभ में ही रोक देने वाले सामान्य अस्पतालों की।

कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य सुविधाओं से अधिक देश में स्वास्थ्य शिक्षा की आवश्यकता है। अच्छी स्वास्थ्य शिक्षा से आधी से अधिक बीमारियां होने से रोकी जा सकती हैं। इससे न केवल सरकार, बल्कि जनता के भी पैसों की बचत होगी। सरकार को बजटीय प्रावधान करते हुए इसका भी ध्यान रखना चाहिए। आयुर्वेद जैसी भारतीय चिकित्सा प्रणालियां इसी अव्यवसायिक और ईलाज से परहेज इच्छा वाले चिकित्सकीय तंत्र को मजबूत करती हैं। यही कारण भी था कि महात्मा गांधी ने 1909 में लिखी अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में देश से डाक्टरों को पूरी तरह हटाए जाने की बात कही थी और मृत्युपर्यंत अपनी बात पर डटे रहे थे। आज एक बार फिर महात्मा गांधी जी की उसी भविष्य-दृष्टि को सामने रख कर देश का स्वास्थ्य बजट बनाए जाने की आवश्यकता है। केवल तभी सबको स्वास्थ्य का सपना साकार किया जा सकता है। ❑

नई सरकार में शिक्षा की नई उड़ान

विमल कुमार

आजादी के समय देश में 20 विश्वविद्यालय तथा 500 कालेज थे जबकि 2011-12 तक इन विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़कर 723 हो गई तो कालेजों की संख्या बढ़कर 37204 हो गई। इसके अलावा डिप्लोमा देने वाले संस्थानों की संख्या 11356 हो गई। भारत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया का नंबर एक देश बन गया जहां सबसे अधिक संख्या में छात्र पढ़ते हैं। 2004-05 में उच्च शिक्षा में दाखिला दर 10 प्रतिशत के करीब थी जो 2011-12 में बढ़कर करीब 20 प्रतिशत हो गई। इस तरह करीब ढाई करोड़ से अधिक छात्र उच्च शिक्षा पा रहे हैं

जब से शिक्षा की गुणवत्ता का मसला देश में बहसतलब हुआ है और ज्ञान आधारित अर्थव्यस्था की चर्चा तेज़ हुई है, सरकार ने शिक्षा पर विशेष ध्यान देना शुरू किया है और इसके लिए पिछले कुछ सालों से शिक्षा के बजट में बढ़ोतरी भी हुई है पर ये सच है कि ये बढ़ोतरी पर्याप्त नहीं है। जिस रफ़्तार से देश की आबादी बढ़ रही है और स्कूलों तथा कॉलेजों में जिस गति से दाखिला दर बढ़ रही है उस हिसाब से शिक्षा का बजट अभी भी कम ही है और शैक्षणिक संस्थान, विश्वविद्यालय एवं कॉलेज कम ही खुल पाए हैं लेकिन मोदी सरकार ने संप्रग सरकार में उच्च शिक्षा में किए गए विस्तार को बढ़ाते हुए बजट में घोषणा की कि जम्मू और कश्मीर, छत्तीसगढ़, गोवा, केरल तथा आंध्रप्रदेश में आईआईटी खोले जाएंगे। साथ ही हिमाचल, पंजाब, बिहार, ओड़िसा और महाराष्ट्र में आईआईएम भी खोले जाएंगे। शायद यही कारण है कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में ही घोषणा की गई थी कि हर राज्य में आईआईटी खोले जाएंगे। वित्त मंत्री ने इस बार बजट में इसके लिए 500 करोड़ रुपये का प्रस्ताव भी किया। गौरतलब है कि संप्रग सरकार ने 2010 में ही पीपीपी मॉडल से 20 नए आईआईटी खोलने का फैसला किया था। इन्हें 2011-12 से लेकर 2019-20 के बीच खोले जाने का निर्णय लिया गया था। इसके लिए 2808.71 करोड़ का प्रस्ताव किया गया था यानी हर आईआईटी पर सरकार 128 करोड़ खर्च करेगी। इनमे 16 आईआईटी को पीपीपी मॉडल से खोलने की मंजूरी भी मिल चुकी है। मोदी सरकार ने अपने बजट में जिन आईआईटी की घोषणा की है वो वही आईआईटी हैं जिन्हें खोले जाने का प्रस्ताव 2010 में किया गया था। इस दृष्टि से बजट में संप्रग सरकार के कार्यकाल में लिए गए निर्णयों को लागू करने का प्रयास है। बजट की इस घोषणा से देश में अब 18 आईआईएम और 21 आईआईटी हो जाएंगे लेकिन चिंता की बात ये है कि पिछली सरकार में खुले आईआईटी के अभी तक कैम्पस ही नहीं बन पाए हैं और शिक्षकों की नियुक्ति तक नहीं हो पाई है।

बहरहाल, इस बार बजट में शिक्षा के मद में 83771 करोड़ का प्रावधान किया गया है जो पिछले साल के बजट से 12.13 प्रतिशत अधिक है। स्कूली शिक्षा में दस प्रतिशत की वृद्धि की गई तो उच्च शिक्षा में 13 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई, वर्ष 2012-13 में शिक्षा का बजट 61.427 करोड़ और 2013-14 में 65.867 करोड़ रुपये था। इस तरह इस बार के बजट में 18 हज़ार करोड़ रुपये की राशि अधिक है। पर इसके बावजूद शिक्षा का बजट आज तक कुल सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत नहीं हो पाया। कांग्रेस सरकार की तरह बीजेपी ने भी इसे 6 प्रतिशत करने का वादा अपने घोषणा पत्र में किया है जबकि आर्थिक समीक्षा के अनुसार 2014-14 तक ये बजट सकल घरेलू उत्पाद का महज 3.3 प्रतिशत ही रहा। वर्ष 2008-09 में ये मात्र 2.9 प्रतिशत ही था। इससे पता चलता है कि गत पांच वर्ष में एक प्रतिशत की वृद्धि नहीं हुई जबकि दाखिला दर उच्च शिक्षा में बढ़कर करीब 20 प्रतिशत हो गया।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। फिलहाल एक संवाद समिति से जुड़े हैं। 'सत्ता, समाज और बाजार' उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। शिक्षा तथा अन्य सामाजिक विषयों पर सभी प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखते रहते हैं। ईमेल: vimalchorpuran@gmail.com

कौशल विकास कार्यक्रम

कौशल विकास कार्यक्रम से न केवल व्यक्तियों का विकास होता है बल्कि देश की अर्थव्यस्था का भी विकास होता है। इससे समावेशी समाज का भी निर्माण होता है। रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और उत्पादन में भी वृद्धि होती है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने मार्च 2014 तक कौशल विकास के 158 प्रस्तावों को मंजूरी दी है इनमें 129 प्रस्ताव प्रशिक्षण के तथा 29 क्षेत्रगत कौशल विकास परिषद के हैं और कुल बजट 2215.89 करोड़ रुपये का है। कौशल विकास कार्यक्रम के तहत 2010 से अब तक 19,54,300 लोगों को रोजगारोन्मुख कौशल का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इनमें 60 प्रतिशत लोगों को विभिन्न सेक्टरों में रोजगार भी मिले हैं। 2013-14 में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने 10,05,074 लोगों को प्रशिक्षण दिया है। इन लोगों को स्वास्थ्य, पर्यटन, रिटेल, कपड़ा उद्योग सूचना प्रोद्योगिकी, विनिर्माण, आतिथ्य बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं तथा इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया गया है.

देश के कुल 366 जिलों में ये प्रशिक्षण दिए गए हैं। जो लोग अपने कौशल का उन्नत विकास करना चाहते हैं या और नए कौशल सीखना चाहते हैं उनके लिए 1000 करोड़ रुपये से स्टार योजना शुरू की गई है जिसे राष्ट्रीय स्किल सर्टिफिकेशन और मोनेटरी रिवॉर्ड स्कीम के नाम से जाना जाता है। ये योजना 16 सितंबर 2013 से शुरू हुई और 206 कोर्सों में 4 लाख से अधिक लोगों के नाम पंजीकृत किए गए। 31 मार्च 2014 तक 6402 केन्द्रों में 3,44,545 लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किए। उड़ान नामक कौशल प्रशिक्षण योजना के तहत प्राइवेट सेक्टर में जम्मू और कश्मीर के स्नातक और स्नातोकोतर छात्रों को प्रशिक्षण दिया हया। 47 कारपोरेट हाउस ने 61893 लोगों को प्रशिक्षित किया। 31 मार्च 2014 तक 4318 लोगों को 36 कारपोरेट हाउस ने अपने यहां ट्रेनिंग देनी शुरू की जिनमें 1451 लोगो ने ट्रेनिंग पूरी कर ली। अगले साल जम्मू और कश्मीर के 8000 लोगों को इस योजना में ट्रेनिंग दी जाएगी।

बजट में दूसरी महत्वपूर्ण योजना पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम है। इसके लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। पिछले कई सालों से कहा जा रहा है कि स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता नहीं है। असर की रिपोर्ट ने भी ये सवाल उठाया है। इसलिए सरकार ने ये योजना शुरू की है। इससे 20 हज़ार शिक्षक लाभान्वित होंगे। देश में अभी शिक्षकों की काफी कमी है। 2020 तक एक लाख 38 हज़ार शिक्षकों की जरूरत कालेजों, विश्वविद्यालयों और संस्थानों में पड़ेगी। देखना यह है कि ये योजना किस तरह लागू हो पाती है और इसके अपेक्षित परिणाम कब तक आते हैं।

मोदी सरकार में राष्ट्रपति के अभिभाषण में मदरसों के आधुनिकीकरण की बात कही गई थी। उसे लागू करने के लिए सरकार ने बजट में 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। करीब दस लाख छात्र राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय संस्थान के जरिये नई आधुनिक तालीम पाएंगे। मदरसों पर ये आरोप लगते रहे हैं कि इनमें आतंकवाद के बीज भी पनपते रहतें है लेकिन इस कार्यक्राम से मदरसों का न केवल आधुनिकीकरण होगा बल्कि उनकी छवि में भी सुधार आएगा।

बजट में वर्चुअल क्लास रूम और ऑनलाइन कोर्स के लिए भी 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। जिस तरह प्रोद्योगिकी में बदलाव आया है उसे देखते हुए छात्रों के लिए इस तरह की योजना बनाने की बेहद जरूरत थी, शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए स्कूलों का मूल्यांकन और आकलन करने की योजना भी सरकार ने बनाई है, बजट में इसके लिए भी 30 करोड़ का प्रावधान रखा गया है।

तकनीकी शिक्षा और प्रबंधन पर अधिक जोर देने के कारण समाज विज्ञान और मानविकी की तरफ ध्यान कम जा रहा है। शायद इसलिए इस बजट में भोपाल में जयप्रकाश नारायण के नाम पर एक उच्चशिक्षण संस्थान के खोले जाने की घोषणा भी की गई है। बजट में कौशल विकास पर भी जोर दिया गया है पर उसके लिए सरकार ने अतिरिक्त बजट का प्रावधान नहीं किया है। राष्ट्रपति के अभिभाषण में राष्ट्रीय बहु हुनर मिशन की बात जरूर की गई थी। इसके अलावा राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट और टेक्नोलॉजी मिशन भी शुरू किया गया है ताकि गांव के बच्चे ई-क्रांति का लाभ उठा सकें। इसके लिए बजट में 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

बजट में छात्रों के लोन को सरल बनाने की घोषणा भी की गई है जिस से छात्रों की होने वाली समस्याएं दूर हो सकें। कई बार नियमों के जटिल होने से छात्र लोन से वंचित हो जाते थे या उन्हें समय पर लोन नहीं मिल पाता था। नेत्रहीन छात्रों की पढ़ाई के लिए सरकार ने 15 नए ब्रेल प्रेस स्थापित करने की घोषणा भी की है। इसके अलावा पहले से काम कर रहे दस ब्रेल प्रेस का आधुनिकीकरण भी किया जाएगा। सरकार ने नेत्रहीन लोगों के लिए ब्रेल संकेत वाला नोट भी छापने का फैसला किया है। इस बार बजट में आंध्रप्रदेश और राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालय तथा हरियाणा और तेलंगाना में बागवानी विश्वविद्यालय खोलने का एलान किया है और इसके लिए 200 करोड़ का प्रावधान किया है। साथ ही उत्तराखंड में हिमालय अध्यन केंद्र स्थापित करने का भी जिक्र है।

इस तरह देखा जाये तो सरकार ने काफी घोषनाएं की हैं पर स्कूली शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया है। सरकारी स्कूलों के तंत्र को मज़बूत बनाने एवं उसके विस्तार के लिए कोई विशेष योजना नहीं बनाई है, केंद्रीय विद्यालय संगठन के अधिक विस्तार से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ेगी, ज्ञान आयोग ने उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए 1000 विश्वविद्यालय और 30 हज़ार कॉलेज खोलने की सिफारिश की थी लेकिन सरकार उस दिशा में पर्याप्त कदम नहीं उठा रही है। इस से पता चलता है कि शिक्षा का निजीकरण और अधिक होगा तथा भविष्य में पीपीपी मॉडल से ही शिक्षण संस्थान अधिक खुलेंगे। ❑

सब का साथ सब का विकास

प्रियंका संभव

बजट 2014-15 कई मायनों में सामाजिक बजट है - वैसे एक सामाजिक बजट का मतलब हुआ एक ऐसा बजट जो समाज कल्याण स्कीमों पर जोरदार खर्च कर रहा हो। लेकिन यह बजट सामाजिक इसलिए भी बन रहा है क्योंकि इसने जिन चीजों को महंगा किया है वे अर्थव्यवस्था की सेहत से ज्यादा आपकी सेहत से जुड़ी हुई हैं। हमारे सामने अब एक ऐसा बजट है जो कोई बहुत बड़ा कदम तो नहीं उठा रहा लेकिन नपे तुले छोटे-छोटे ऐसे कदम जरूर उठा रहा है जिससे इसे इरादों का बजट कहा जा सकता है क्योंकि बढ़ती महंगाई, इराक संकट और खराब मॉनसून जैसी बुरी खबरों से जूझती अर्थव्यवस्था को अभी बड़े फैसलों की नहीं बल्कि हौसलों की दरकार है और यही हौसला इस बजट में दिख रहा है

केवल 30 दिन की सरकार जो अभी चुनावों से 4 साल 11 महीने दूर है उसने भी एक ऐसा ही बजट पेश किया जिसमें मध्य वर्ग से लेकर समाज कल्याण स्कीमों पर जोर दिखा। लगभग ढाई घंटे के बजट भाषण में हर 10 से 12 लाइन के बाद अर्थव्यवस्था की चिंता दर्ज जरूर की गई लेकिन सब्सिडी को कम करने जैसी कड़वी दवाई की खुराक नहीं मिली।

वैसे आज तक के बजट भाषणों की लंबाई के सारे रिकॉर्ड को तोड़ते हुए 16,536 शब्दों का भाषण देकर अरुण जेटली ने नया रिकॉर्ड बना लिया। यह सच है कि वर्तमान आर्थिक स्थिति किसी भी वित्त मंत्री के लिए एक चुनौती है और इससे निबटने के लिए वित्त मंत्री ने सबका साथ, सबका विकास का नारा दिया है।

रेल बजट से ठीक पहले यात्री किराया और माल ढुलाई की कीमत बढ़ गई और आम बजट से ठीक पहले प्याज ने रुलाया, पेट्रोल-डीजल ने जेब ढीली की, चीनी से लेकर रसोई गैस तक महंगी हो गई - फिर बजट से हम और आप क्या उम्मीद रखते? लेकिन अर्थव्यवस्था के इस कठिन दौर में जबरदस्त बहुमत से जीती सरकार का ये पहला नीति निर्धारक है जो सरकार की सोच की दिशा की ओर इशारा करता है। समय के साथ ही यह पता चलेगा कि यह बजट अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने में कितना सक्षम हुआ।

100 करोड़ की 29 परियोजनाओं की घोषणा बजट 2014-15 को बना रही है 100 करोड़ क्लब का सदस्य। वन बंधु कल्याण योजना, बेटी पढ़ाओ बेटी बढ़ाओ, आजीविका, मणिपुर में स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी, ऑर्गेनिक खेती, वॉर मेमोरियल, टेक्नोलॉजी फंड और कम्युनिटी रेडियो जैसी परियोजनाओं पर 100 करोड़ का आवंटन किया गया है।

लेकिन 100 करोड़ की घोषणाओं के बीच गुजरात में बन रही सरदार पटेल की स्टैच्यु ऑफ यूनिटी के लिए 200 करोड़ की घोषणा अलग तरह की जरूर रही। औरतों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए भी 150 करोड़ रुपये की घोषणा की गई है।

इस बजट ने नौकरीपेशा का साथ भी निभाया। बिटर पिल की जगह अरुण जेटली ने मध्य वर्ग के लिए पेश की गुजराती मीठी थाली। व्यक्तिगत टैक्स के मामले में वित्त मंत्री की घोषणा करदाताओं को खुश कर रही है। मूल आय सीमा बढ़ा दी - 2 लाख की जगह अब 2.50 लाख की आय कर मुक्त होगी, 80सी में निवेश पर छूट की सीमा 50,000 रुपये से बढ़कर 1.50 लाख और आवास ऋण की इएमआई चुकाने वालों के लिए ब्याज पर इनकम टैक्स के सेक्शन 24 के तहत छूट बढ़ गई है। ब्याज पर 1.50 लाख तक की छूट अब बढ़कर 2 लाख रुपये हो गई है। तो अगर आप तीनों कदमों का पूरा फायदा उठाते हैं तो कुल मिलाकर 6 लाख रुपये तक की कुल आय पर कोई कर नहीं देना होगा। इस तरह सालाना 15,000 रुपये की बचत होगी। वहीं सालाना 10 लाख से ज्यादा आय वालों के लिए ये बचत 35 हजार रुपये की होगी।

कर नियमों में बदलाव का इंतजार करदाताओं के लिए लंबा रहा और बढ़ती महंगाई से जूझने के लिए इसे तर्कसंगत बनाना जरूरी हो गया था। आवास ऋण के ब्याज पर 1.50 लाख

लेखिका समाचार चैनल सीएनबीसी आवाज में उपभोक्ता मामलों की संपादक हैं। ईमेलः priyankasambav@gmail.com

रुपये की छूट 2003 से चली आ रही थी। 2003 से 2014 तक घर की कीमतों में 10 गुना तक उछाल आ चुका है लेकिन ब्याज पर मिलने वाली छूट वहीं की वहीं रही। इसलिए ब्याज पर मिलने वाली छूट को बढ़ाना समय की मांग थी। वैसे उम्मीद तो यही थी कि यह एक लाख तक बढ़ जाए क्योंकि इसको बढ़ाने से सरकार के खर्चों पर कोई असर नहीं पड़ता और करदाताओं को राहत देने के लिए ये सबसे आसान रास्ता भी माना जा रहा था।

वित्त अधिनियम, 2005 में 80सी में निवेश की सीमा एक लाख रुपये की गई थी। वित्त वर्ष 2006 से करदाता बीमा, इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम (ईएलएसएस), पीपीएफ और पेंशन प्लान जैसे विकल्पों में निवेश कर के एक लाख रुपये की कर बचत ले सकते थे। अब नई सरकार चाहती है कि आप अपनी बचत की आदत को बढ़ाएं और डेढ लाख रुपये तक की बचत कर टैक्स छूट का लाभ उठाएं। चिंता ये थी कि साल 2009-10 में सकल घरेलू बचत जीडीपी की 33.7 प्रतिशत थी जो कि गिरकर साल 2012-13 में 30.1 प्रतिशत पर पहुंच गई है। यानी जाहिर तौर पर करदाताओं की जेब महंगाई से जूझने के लिए मजबूर थी इसलिए बचत पर ज्यादा ध्यान दे पा रही थी न पैसे ही खर्च कर रही थी। अब कर छूट के फायदे की वजह से लोग इस ओर फिर से आकर्षित होंगे और ज्यादा बचत करेंगे जिससे देश में सुस्त पड़े निवेश चक्र को गति मिलेगी।

80सी का पूरा फायदा उठाने के लिए आपको अपनी जेब से 50,000 रुपये का निवेश भी तो करना होगा और अगर आप 2.50 लाख रुपये के कर दायरे में हैं तो आपको छूट मिलेगी 5000 और ये 5000 बचाने के लिए 50,000 रुपये का निवेश कीजिए। कर छूट सीमा 2 लाख से 2.50 लाख हो गई है यानी 5150 रुपये का फायदा और इसे अगर आप 365 दिनों से गुणा करेंगे तो रोजाना 14 रुपये की बचत।

लेकिन क्या ये टैक्स गणित इतना आसान है? 80सी का पूरा फायदा उठाने के लिए आपको अपनी जेब से 50,000 रुपये का निवेश भी तो करना होगा और अगर आप 2.50 लाख रुपये के कर दायरे में हैं तो आपको छूट मिलेगी 5000 और ये 5000 बचाने के लिए 50,000 रुपये का निवेश कीजिए। कर छूट सीमा 2 लाख से 2.50 लाख हो गई है यानी 5150 रुपये का फायदा और इसे अगर आप 365 दिनों से गुणा करेंगे तो रोजाना 14 रुपये की बचत। तो क्या अब मीठी थाली का स्वाद थोड़ा कड़वा लग रहा है? 8 प्रतिशत की दर से बढ़ रही मंहगाई दर से मुकाबला करने के लिए एक महीने में 438 रुपये काफी नहीं हो सकते हैं। आवास ऋण के ब्याज पर छूट बचत बैंक के बढ़ते ब्याज दर के आगे धराशाई हो जाती है।

करदाताओं को एक नए कर के लिए भी तैयार रहना होगा। डेट म्यूचुअल फंड पर टैक्स का बोझ बढ़ गया है। डेट म्यूचुअल फंड के तीन साल पूरे होने पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन माना जाएगा और अब 10 प्रतिशत की बजाय 20 प्रतिशत कर लगेगा। ये डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स का नया प्रारूप है जो कि सकल डिविडेंड (ग्रॉस) पर अब से देना होगा।

घर खरीदारों के लिए आवास ऋण के ब्याज में बढ़ी छूट के मुकाबले ज्यादा राहत वाली बात है फंड की कमी का रोना रो रहे रियल एस्टेट क्षेत्र के लिए रियल एस्टेट इनवेस्टमेंट ट्रस्ट (रीट) फंड का रास्ता खोलना। रीट पर कर छूट भी मिलेगी और रीट के जरिए कम कीमत वाले घरों की फंडिग को आसान बनाने की कोशिश है। इस कदम पर रिजर्व बैंक की भी मुहर लग गई है। रिजर्व बैंक सस्ते मकान बनाने के लिए डेवलपर्स को आसान कर्ज देने को तैयार है। इसके साथ मकान खरीदने के लिए ग्राहकों को सस्ता कर्ज देने का रास्ता भी आसान हो गया है। इस कदम से सस्ते मकानों को इंफ्रास्ट्रक्चर का दर्जा मिल रहा है और इन्हें बनाने के लिए बांड जारी करने की छूट से फंड की लागत घटेगी जिससे मकानों की कीमतों में पांच फीसदी तक कमी हो सकती है। अफोर्डेबल हाउसिंग के बारे में नए दिशा-निर्देशों के मुताबिक मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु और हैदराबाद में 65 लाख रुपये और उससे कम कीमत वाले मकान अफोर्डेबल हाउसिंग के दायरे में आएंगे, अन्य शहरों में 50 लाख रुपये तक के मकान सस्ते माने जाएंगे जिसके तहत डेवलपर्स के लिए बैंक की कर्ज की लागत घटेगी। सस्ते घर की परियोजनाओं पर डेवलपर्स को लंबी अवधि के लिए कर्ज भी मिल सकेगा। अफोर्डेबल परियोजनाओं को इनफ्रा स्टेट मिलने से जहां पहले 3 साल के लिए ऋण मिलता था वह अब बढ़कर 7 साल के लिए हो जाएगा। अगर ऋण सस्ते मिलेंगे तो घर की कीमत तो कम होगी ही साथ ही सस्ते मकानों के लिए आवास ऋण की ब्याज दर चौथाई से आधा फीसदी तक कम हो सकती है।

इस बजट में नए निर्माण पर खासा जोर दिख रहा है। सस्ते घर को बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है तो वहीं 100 नए शहर बनाने की योजना पर 7060 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। सरकार के पहले आम बजट में 100 स्मार्ट सिटी बसाने का ऐलान करके बीजेपी के चुनावी घोषणापत्र के बड़े वादे को अमलीजामा पहनाने की शुरुआत की गई है और यह जरूरी भी है। 2008 में जहां 34 करोड़ भारतीय शहरों में थे, वहीं 2030 तक इनकी तादाद बढ़कर 59 करोड़ होने का अनुमान है। ऐसे में बड़ी आबादी को शहरों में बसाने और उन्हें ओजीविका मुहैया कराने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा शहरों की जरूरत होगी। इस जरूरत को ध्यान में रखते हुए नए शहरों पर काम करना बेहद आवश्यक है। नए स्मार्ट शहर नाम के अनुरूप हाई टेक शहर होंगे। वैसे गुजरात सरकार 2011 में इस दिशा में बड़ी पहल कर चुकी है। अहमदाबाद के नजदीक देश की पहली स्मार्ट सिटी बसाने की शुरुआत हो चुकी है। इसे गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंशियल टेक यानी 'गिफ्ट' नाम दिया गया है।

सरकार के पहले आम बजट में 100 स्मार्ट सिटी की घोषणा अहम है। 2008 में जहां 34 करोड़ भारतीय शहरों में थे, वहीं 2030 तक इनकी तादाद बढ़कर 59 करोड़ होने का अनुमान है। ऐसे में बड़ी आबादी को शहरों में बसाने और उन्हें ओजीविका मुहैया कराने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा शहरों की जरूरत होगी। इस जरूरत को ध्यान में रखते हुए नए शहरों पर काम करना बेहद आवश्यक है।

इस कदम के साथ भारत अब उन देशों में शुमार हो गया है जो इन दिनों स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में तेजी से बढ़ रहे हैं। चीन, यूएई और द. कोरिया में स्मार्ट सिटी विकसित किए जा रहे हैं। चीन में तिनच्यांग नॉलेज

सिटी समेत सुहो, गोंजो, सिहॉन स्मार्ट सिटी हैं। स्पेन के बार्सिलोना और फ्रांस के मॉन्पेलियर को स्मार्ट सिटी का दर्जा दिया जा सकता है।

देश के पुराने शहरों की व्यवस्थाओं को भी दुरुस्त किया जाएगा जिसमें 100 शहरों का आधुनिकीकरण भी शामिल है। इससे साफ जाहिर है कि सरकार शहरीकरण को विकास का इंजन मानकर चल रही है।

पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम के 4.1 प्रतिशत के वित्तीय घाटे के स्तर को अरुण जेटली ने भी बरकरार रखा है। अर्थशास्त्री उम्मीद कर रहे थे कि ये अनुमान बढ़ने वाला है लेकिन वित्त मंत्री ने 4.1 प्रतिशत के स्तर को चुनौती मानकर इससे डटकर मुकाबला करने का आश्वासन दिया है। ये आसान नहीं होगा क्योंकि टैक्स से होने वाली कमाई में कोई इजाफा नहीं दिख रहा है और जो घोषाणाएं की गई हैं उनका फल अभी तुरंत नहीं मिलने वाला है। लेकिन अगर वित्त मंत्री सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी की विकास दर को 5.4 से 5.9 तक ले जाते हैं तो वित्तीय घाटे को संभालना इतना मुश्किल नहीं होगा। वित्त मंत्री ने जो मैक्रोइकनॉमिक सिद्धांत दिया है वह गौर करने लायक है। उन्होंने ये अवश्य कहा है कि इसके कई अवसर खो चुके हैं इसलिए अब अपनी आमदनी से ज्यादा खर्च करना नामुमकिन है यानी उन्होंने साफ कह दिया कि जिस दिशा में उन्होंने कदम उठाया है वही यात्रा आगे जारी रहेगी। खासतौर पर पिछली तारीख से कर लगाने के मामले में यानी रेट्रोस्पेक्टिव टैक्स पर पूरा कॉर्पोरेट जगत निगाहें टिकाए बैठा था और इस पर असमंजस खत्म करते हुए वित्त मंत्री ने कह दिया कि अब आगे ऐसे टैक्स नहीं लगेंगे। इस घोषणा के साथ उम्मीद तो यही है कि भारत पर निवेशकों का आत्मविश्वास फिर से बढ़ेगा और निवेशक भारत में धन निवेश करना चाहेंगे।

वैसे वित्त मंत्री के पिटारे में से जिस तरह से शुल्क घटने और बढ़ने की घोषणा की गई वो साफ इशारा कर रही है कि जीवनशैली महंगी हो गई है हालांकि आम लोगों की जरूरत को ध्यान में रखने की कोशिश जरूर की गई है।

साधारण टीवी के साथ 19 इंच तक के एलईडी और एलसीडी टीवी 500 से 1000 रुपये तक सस्ते हो जाएंगे क्योंकि इनके पैनल पर आयात शुल्क 10 प्रतिशत से घटकर शून्य हो गया है। नाईकी और रीबॉक जैसे ब्रैंड तो सस्ते नहीं हुए लेकिन बाटा के जूते चप्पल आपको पहले से सस्ते मिल जाएंगे। 500 से 1000 रुपये के फुटवियर पर एक्साइज ड्यूटी 12 प्रतिशत से घटकर 6 प्रतिशत हो गई है। फैटी एसिड और पाम ऑयल से भी आयात शुल्क घट गया है जिसका मतलब है कि आपके नहाने का साबुन भी सस्ता हो जाएगा लेकिन क्योंकि कंपनियों के पास फिलहाल भंडार है इसलिए सस्ते साबुन के लिए साल के अंत तक इंतजार करना पड़ेगा।

टैक्स से होने वाली कमाई में कोई इजाफा नहीं दिख रहा है और जो घोषाणाएं की गई हैं उनका फल अभी तुरंत नहीं मिलने वाला है। लेकिन अगर वित्त मंत्री सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी की विकास दर को 5.4 से 5.9 तक ले जाते हैं तो वित्तीय घाटे को संभालना इतना मुश्किल नहीं होगा। वित्त मंत्री ने जो मैक्रोइकनॉमिक सिद्धांत दिया है वह गौर करने लायक है।

बजट 2014-15 कई मायनों में सामाजिक बजट है - वैसे एक सामाजिक बजट का मतलब हुआ एक ऐसा बजट जो समाज कल्याण स्कीमों पर जोरदार खर्च कर रहा हो। लेकिन सरकार का बजट सामाजिक इसलिए भी बन रहा है क्योंकि इसने जिन चीजों को महंगा किया है वो अर्थव्यवस्था की सेहत से ज्यादा आपकी सेहत से जुड़ी हुई हैं।

सेंटर फॉर साइंस एंड इंवायरमेंट की निदेशक सुनीता नारायण के मुताबिक इस बजट ने चीनी और तंबाकू को एक ही श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। जिससे साफ दिख रहा है कि एरियेटेड पेय तंबाकू जितने ही खतरनाक हैं। एरियेटेड पेय यानी शीतल पेय जिनमें एडड शुगर होती है अब 2 से 10 रुपये तक महंगे हो जाएंगे क्योंकि इनमें 5 प्रतिशत तक की शुल्क बढ़ोतरी कर दी गई है।

तंबाकू पर एक्साइज शुल्क 11 से 72 प्रतिशत हो गया है। इससे धूम्रपान करने वालों के होठों से धुंए के लच्छे कम और मंहगाई के लिए उफ्फ ज्यादा निकलेगी। बजट के 24 घंटे में कम से कम 24 लोगों ने अपना सिगरेट छोड़ने का लॉन्ग टर्म प्लान गिना दिया और इसे देखते हुए यही लग रहा है कि सिगरेट के पैकेट पर भद्दी फोटोग्राफ और सिगरेट पीना हानिकारक है वाली लाइन से भी ज्यादा प्रभावशाली कीमत को बढ़ाना है। कम से कम सिगरेट से तौबा करने की सोच तो दिख ही रही है।

तो हमारे सामने अब एक ऐसा बजट है जो कोई बहुत बड़ा कदम तो नहीं उठा रहा लेकिन नपे तुले छोटे-छोटे ऐसे कदम उठा रहा जिससे इसे इरादों का बजट कहा जा सकता है क्योंकि बढती महंगाई, इराक संकट और खराब मॉनसून जैसी बुरी खबरों से जूझती अर्थव्यवस्था को अभी बड़े फैसलों की नहीं बल्कि हौसलों की दरकार है और यही हौसला इस बजट में दिख रहा है। ❑

(पृष्ठ 34 का शेषांश)

लेकिन इसका विश्लेषण करने पर मालूम चलता है कि इसके खाते से काफी ज्यादा मिल सकता है। यदि इसका ठीक से क्रियान्वयन किया जाए तो यह काफी कम समय में भारतीय नीति निर्माण और व्यवसायिक सोच में बदलाव ला सकता है, क्योंकि यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सों में काफी बड़े बदलावों की व्याख्या करता है।

वित्त मंत्री ने सही तरीके से आम बजट के रहस्य से परदा उठाने के दृष्टिकोण को अपनाया है। यह काफी कुछ दूसरे देशों में अपनाये जाने वाले अंतरराष्ट्रीय तरीके से मिलता है, जहां बजट का दिन कोई खास महत्व नहीं रखता और राजस्व नीति निर्माण एक नियमित कार्य है, और इसे सरकारी खजाने से जुड़ी घोषणा या बयान के साथ जोड़कर नहीं देखा जाता। यह घोषणा कि मौद्रिक नीति नियम और अन्य कल्याणकारी मुद्दे जैसे कुपोषण और साथ ही सरकारी व्यय जैसे छूट इत्यादि की भी एक आयोग द्वारा नियमित तर्कसंगत जांच परख की जाए, और जिन्हें बजट तैयार होने तक की सीमित समय-सीमा दी गई। उपलब्ध राजकोषीय आय के बावजूद अतिरिक्त उधारी और उच्च ऋण दायित्व उठाने के लिए प्रतिरोध, राजकोषीय समेकन के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बजटीय नीतियों को तैयार करने में एक अनुभवी और सरल दृष्टिकोण का इस्तेमाल किया गया है। इस तरह यह बजट वास्तव में एक प्रशंसनीय और अपने आप में अलग है, और सर्वसम्मति से नए सुधारों की रूपरेखा तैयार करता है। ❑

उम्मीद से काफी कम मिला

शशांक द्विवेदी

विज्ञान का बजट आवंटन हमेशा से कम ही रहा है। वैज्ञानिक समुदाय इसे बढ़ाने की मांग तो दशकों से करता रहा लेकिन पिछले कुछ वर्षों में राजनीतिक स्तर पर भी जब इस संबंध में बयान आने लगे तो उम्मीद जगी। हालांकि इस बार भी विज्ञान प्रेमियों को निराशा हाथ लगी। पीएसएलवी सी-23 के सफल प्रक्षेपण के बाद सेटेलाइट डिप्लोमेसी की चर्चा तो खूब हुई लेकिन ऐसे लक्ष्यों को प्राप्त करने और भारत को विज्ञान महाशक्ति बनाने के लिए जिस विशाल धनराशि की आवश्यकता है, उसकी तरफ कदम बढ़ाने के लिए बजट प्रावधान भी दिल खोलकर करने होंगे

केंद्रीय बजट प्रस्तुत करने के दौरान वित्तमंत्री ने कहा कि सरकार विज्ञान के विकास, शोध परियोजनाओं की बढ़ोतरी तथा अनुसंधान कार्य के लिए एक शोध फंड संगठन बनाएगी। इस संगठन के जरिए छात्रों को शोध परियोजनाओं के लिए सहायता दी जाएगी लेकिन दूसरी ओर देश में प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रौद्योगिकी विकास कोष को कुल 100 करोड़ रुपये आवंटित किए गए अर्थात् कुल मिलाकर सरकार ने विज्ञान और तकनीक के पूरे क्षेत्र के लिए बजट में जीडीपी का लगभग एक प्रतिशत दिया है जो कि उम्मीद से काफी कम है।

यह उम्मीद से कम इसलिए भी है क्योंकि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने भी भारतीय विज्ञान कांग्रेस समारोह में कहा था कि हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का कम से कम दो फीसद वार्षिक ख़र्च करना चाहिए। यह सरकार और उद्योग जगत दोनों की तरफ से होना चाहिए। दक्षिण कोरिया जैसे देश में सकल घरेलू उत्पाद का काफी अधिक हिस्सा विज्ञान पर खर्च किया जाता है, जिसमें उद्योग का सहयोग काफी अहम है जबकि अमेरिका, चीन सहित दुनिया के कई छोटे बड़े देश लगातार विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में बजट बढ़ाते रहे हैं।

पिछले कई सालों से हर बार सरकार द्वारा इस तरह की चिंताएं व्यक्त की जाती हैं लेकिन बाद में वास्तविक धरातल पर वह क्रियान्वित नहीं हो पाता। श्री सिंह ने कहा था हमारे समाज में साइंस को जो मुकाम मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया है लेकिन इसके लिए जिम्मेदार कौन है? देश में वैज्ञानिक अनुसंधान और शोधों की दशा अत्यंत दयनीय है। गत वर्ष भारत रत्न से नवाजे गए प्रोफेसर सीएनआर राव समेत कई वैज्ञानिकों ने भी अतीत में देश में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र के लिए कम बजट देने के लिए

रेखाचित्र-1: वर्ष 2009 में चुनिंदा देशों द्वारा शोध एवं विकास पर किया गया खर्च (उनके जीडीपी के प्रतिशत में)

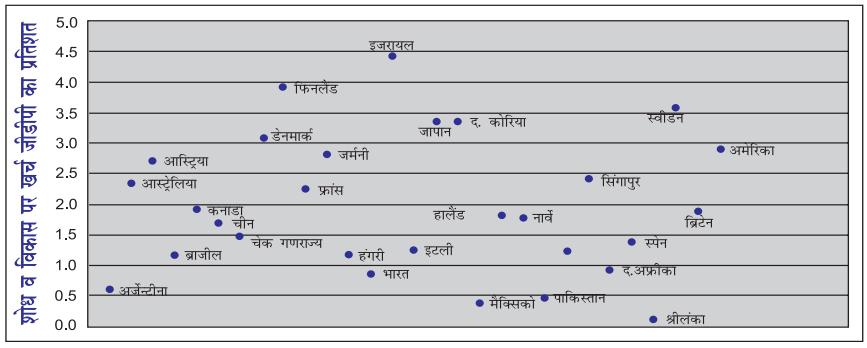

स्रोत: शोध व विकास आंकड़े: एक नजर में, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार

लेखक सेंट मारग्रेट इंजीनियरिंग कॉलेज, अलवर में प्राध्यापक हैं तथा विज्ञान विषय पर केंद्रित वेबसाइट www.vigyanpedia.com के संपादक हैं। हिंदी में विज्ञान-प्रौद्योगिकी विषय पर वह सभी-प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। ईमेल: shashank_200@rediffmail.com

रेखाचित्र-2: वैज्ञानिक शोध और अनुसंधान के लिए बजट का आवंटन
(जीडीपी के सदंर्भ में)

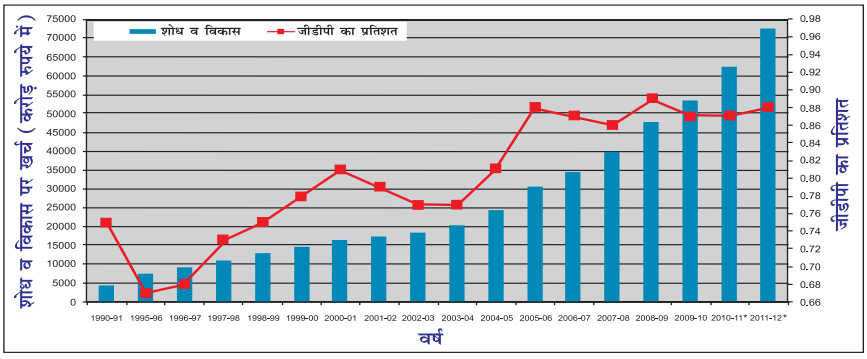

स्रोत: शोध व विकास आंकड़े: एक नजर में, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार

सरकार की आलोचना की थी। प्रोफेसर राव का मानना है कि देश में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए वर्तमान में जो सरकारी बजट है या जो फंड है वो काफी कम है। अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी भारत तरक्की जरूर कर रहा है लेकिन वहां के लिए भी समुचित बजट उपलब्ध नहीं है।

यह तथ्य भी ध्यान देने लायक है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीस जून को श्रीहरिकोटा में पांच विदेशी उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण के मौके पर वैज्ञानिकों को बधाई देने के दौरान कहा था कि भारत के मंगल अभियान की लागत हॉलीवुड की हिट फिल्म ग्रेविटी की निर्माण लागत से कम है। वैज्ञानिक विषयवस्तु पर अंतरिक्ष अभियान से जुड़ी इस थ्री डी फिल्म की लागत तकरीबन सौ मिलियन डॉलर यानी 600 करोड़ रुपये है जबकि भारत के मंगल मिशन की लागत 450 करोड़ आई। प्रधानमंत्री का यह बयान खुद-ब-खुद विज्ञान क्षेत्र में धन की उपलब्धता की स्थिति को बयां कर देता है।

बुनियादी ढांचा कमजोर

विज्ञान पर बजट की कमी और समाज में वैज्ञानिक माहौल न बन पाने को लेकर जिम्मेदार कौन है? पिछले साल भी विज्ञान कांग्रेस में कहा गया था कि सरकार विज्ञान के लिए बजट में जीडीपी का दो फीसदी खर्च करेगी लेकिन वो वादा अधूरा रह गया। दो साल पहले 99वें राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस में भी प्रधानमंत्री ने कहा था कि हम वैज्ञानिक अनुसंधान में पिछड़ गए हैं और चीन वैज्ञानिक अनुसंधान में हमसे आगे निकल गया। अमेरिका की तर्ज पर चीन अपनी क्षमताओं का लोहा मनवा रहा है लेकिन हमारे देश में विज्ञान का मौजूदा बुनियादी ढांचा ही बेहद कमजोर है।

देश में विज्ञान और शोध की स्थिति का आलम यह है कि विज्ञान में पीएच.डी करने वाले हजारों लोगों में से 60 फीसदी बेरोजगार हैं। इसीलिए 12वीं के बाद विज्ञान के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राएं भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान के बजाय तकनीकी व प्रबंधन से जुड़े पाठयक्रमों को प्राथमिकता देने लगे हैं। इन क्षेत्रों में भारी-भरकम पैकेज के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा भी हासिल हो जाती है। इसी का परिणाम है कि विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विज्ञान संकाय के स्नातकोत्तर पाठयक्रमों में छात्रों के दाखिले में कमी आई है।

कभी दुनिया भर में होने वाले शोध कार्य में भारत का नौ फीसद योगदान था जो आज घटकर महज 2. 3 फीसद रह गया है। सृजन के क्षेत्र में हमारी बढ़ती दरिद्रता का आलम क्या है इस पर भी एक नजर डालें। देश में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक (टेक्नोलॉजी) को लें तो तकरीबन पूरी टेक्नोलॉजी आयातित है। इनमें 50 फीसद तो बिना किसी बदलाव के ज्यों की त्यों इस्तेमाल होती है और 45 फीसद थोड़ा-बहुत हेर-फेर के साथ इस्तेमाल होती है।

इस स्थिति के लिए हमारे विद्यार्थी और उनके अभिभावक जिम्मेदार नहीं हैं। दरअसल हमारी शिक्षा प्रणाली में ऐसा बोध ही पैदा नहीं किया गया कि विज्ञान को पाठयक्रम में शामिल एक विषय से भी आगे समझा जाए। शायद यही वजह है कि पिछले 50 वर्षों में देश एक भी ऐसा वैज्ञानिक पैदा नहीं कर पाया, जिसे पूरी दुनिया उसकी अनोखी देन के लिए पहचाने। किसी भारतीय नागरिक को नोबेल पुरस्कार भी 84 साल पहले मिला था (सीवी रमण, 1930 भौतिकी)। तब से हम भारतीय मूल के विदेशी नागरिकों द्वारा अर्जित नोबेल पर ही खुशी मनाते आए हैं। आजादी के समय जब देश में संसाधन कम थे तब हमारे यहां जगदीश चंद्र बोस, नोबल पुरस्कार विजेता सर सी वी रमण, मेघनाद साहा, सत्येन्द्र बोस जैसे महान वैज्ञानिक हुए, लेकिन आज जब संसाधनों की कमी नहीं है, हमारे देश में विज्ञान की स्थिति दयनीय बनी हुई है। हमारे देश में जन्मे वैज्ञानिक हर गोबिंद खुराना, एस. चन्द्रशेखर, अमर्त्य सेन और डा. वेंकटरामन रामकृष्णन विदेशों में जाकर उत्कृष्ट कार्य के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त करते हैं लेकिन यहां रहकर नहीं। यहां पर उन्हें बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं कराई गई और उन्हें बाहर जाना पड़ा। देश की ज़्यादातर यूनिवर्सिटीज के अंदरूनी हालात ऐसे हो गए हैं कि वहां शोध के लिए स्पेस काफी कम रह गया है। उच्च शिक्षा पाने वालों में से केवल एक प्रतिशत छात्र ही शोध करते हैं। किन विषयों पर शोध हो रहा है और समाज के लिए उसकी क्या उपयोगिता है, इसका मूल्यांकन करने वाला कोई नहीं है। इसके उलट यूजीसी के कई ऐसे प्रावधान हैं, जो गंभीर शोधपरक संस्कृति के विकास में रुकावट डालते हैं।

कभी दुनिया भर में होने वाले शोध कार्य में भारत का नौ फीसद योगदान था जो आज घटकर महज 2.3 फीसद रह गया है। सृजन के क्षेत्र में हमारी बढ़ती दरिद्रता का आलम क्या है इस पर भी एक नजर डालें। देश में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक (टेक्नोलॉजी) को लें तो तकरीबन पूरी टेक्नोलॉजी आयातित है। इनमें 50 फीसद तो बिना किसी बदलाव के ज्यों की त्यों इस्तेमाल होती है और 45 फीसद थोड़ा-बहुत हेर-फेर के साथ इस्तेमाल होती है। इस तरह विकसित तकनीक के लिए हमारी निर्भरता आयात पर है। कहा तो जा रहा है कि देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है लेकिन ये प्रतिभा क्या केवल विदेशों में नौकरी या मजदूरी करने वाली हैं?

विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र के लिए केंद्रीय बजट (2014-2015) में मुख्य प्रावधान

- विज्ञान के विकास, शोध परियोजनाओं को प्रोत्साहन तथा अनुसंधान कार्य के लिए एक शोध कोष संगठन
- शोध कोष संगठन के जरिए छात्रों को शोध परियोजनाओं के लिए सहायता
- प्रौद्योगिकी विकास कोष के लिए 100 करोड़ रुपये आवंटित
- वैज्ञानिक वेयरहाउसिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए 5000 करोड़ रुपये
- हर भारतीय तक इंटरनेट की पहुंच बनाने के लिए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम
- राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट मिशन के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रस्ताव
- उच्च और तकनीकी शिक्षा के प्रसार के लिए वर्चुअल क्लासेस (आभासी कक्षा) के लिए 100 करोड़ रुपये आवंटित
- पांच नए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी), पांच भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) और चार अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना
- प्रौद्योगिकी केंद्रित दूसरी हरित क्रांति में ''प्रोटीन क्रांति'' पर जोर
- 15 आधुनिक अनुसंधान स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किए जाएंगे।
- प्रौद्योगिकी के विकास के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र सुदृढ़ किए जाएंगे।
- राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा प्राधिकरण स्थापित किया जाएगा।
- कृषि, विज्ञान और तकनीक को प्रोत्साहन के लिए सामुदायिक रेडियो केंद्रों की नई योजना में 100 करोड़ रुपये का प्रावधान, 600 नए सामुदायिक रेडियो स्टेशन खोले जाएगे जहां से विभिन्न विषयों के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाएगा
- अत्याधुनिक सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए 400 करोड़ रुपये, अत्याधुनिक ताप विद्युत प्रौद्योगिकी की तैयारी के लिए 100 करोड़ रुपये का प्रस्ताव।
- मौसम अनुसंधान के लिए 100 करोड़ रुपये से योजना की शुरुआत।

विज्ञान के लिए समयबद्ध राष्ट्रीय नीति जरूरी

वास्तव में विज्ञान के क्षेत्र में विकास के लिए वैज्ञानिकों की ज़रूरत होगी और वो भी आधारभूत विज्ञान विषयों से जुड़े शोधार्थियों की, इसलिए यह जरूरी है कि मेधावी छात्रों को विज्ञान विषय को पढ़ने के लिए आकर्षित किया जाए। विज्ञान के छात्रों और शोधार्थियों को रोजगार की सुनिश्चित गारंटी दी जाए। वैज्ञानिक अनुसंधान कल-कल बहती जलधारा की तरह है इसमें सततता जरूरी है एवं स्वायतता भी। आज जरूरत है विज्ञान के विषय में गंभीरता से एक राष्ट्रीय नीति बनाने की और उस पर संजीदगी से अमल करने की।

भारत आर्यभट्ट, कणाद, ब्रह्मभटट्, रामानुजन, भास्कर, जगदीश चंद्र बोस, सी वी रमण जैसे वैज्ञानिकों का देश है। अगर हमने अपनी समृद्ध वैज्ञानिक परंपरा को पूरी शिद्दत और ईमानदारी के साथ आगे बढ़ाया होता तो विज्ञान के क्षेत्र में भारत दुनिया के शीर्ष पर होता। ऐसा नहीं है कि हमने उपलब्धियां हासिल नहीं की हैं, लेकिन हमारी योग्यता और क्षमता के लिहाज़ से हम इस मोर्चे पर अब भी काफी पीछे हैं। अंतरिक्ष, परमाणु मिसाइल के क्षेत्र में हमारी कुछ उपलब्धियां भी हैं, लेकिन दुनिया को बताने लायक हमने कोई नई खोज और आविष्कार नहीं किया है। जबकि पड़ोसी देश चीन पूरे योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहा है। चीन ने यह जान लिया है और मान लिया है कि बौद्धिक संपदा के विकास और उसकी समृद्धि के बिना वह 2020 तक अमेरिका को नहीं पछाड़ सकता है। इसी का नतीजा है कि अब वह विज्ञान के क्षेत्र में शोध और विकास पर बड़े पैमाने पर जुट गया है। चीन के विश्वविद्यालय और उद्योग तथा वैज्ञानिक बड़े पैमाने पर इस काम को अंजाम दे रहे हैं। इसके लिए वहां की सरकार ने अपने खजाने खोल दिए हैं और अनुकूल माहौल भी बना दिया है। चीन में इस क्षेत्र में खास तरह की एकाग्रता और खुलापन देखने को मिल रहा है जबकि हमने इस बारे में अब सोचना ही शुरू किया है। इसी तरह अमेरिका बुनियादी विज्ञान विषयों की प्रगति का पूरा ध्यान रखता है। उसकी नीति है कि वैज्ञानिक मज़दूर तो वह भारत से लेगा, पर विज्ञान और टेक्नोलॉजी के ज्ञान पर कड़ा नियत्रंण रखेगा। चीन में भी शिक्षा का व्यवसायीकरण हुआ है, पर बुनियादी विज्ञान और टेक्नोलॉजी की प्रगति का उसने पूरा ध्यान रखा है। भारत को चीन से शिक्षा लेनी चाहिए। 'वर्ल्ड क्लास' बनने के लिए बुनियादी विज्ञान का विकास जरूरी है।

विज्ञान कांग्रेस जैसे समारोह वैज्ञानिक माहौल पैदा करने के लिए जरूरी हैं और ये सकारात्मक कदम हैं लेकिन बेहतर होगा जब इस तरह के समारोहों से विज्ञान, शोध और अनुसंधान के लिए कोई ठोस कदम उठाए जाएं जिससे देश का आम आदमी भी विज्ञान से जुड़ाव महसूस कर सके।

शोध और अनुसंधान के लिए बजट

अब संसद में या सर्वदलीय बैठक में देश के शीर्ष वैज्ञानिकों से विचार करके 5-5 वर्षों के लिए विज्ञान के लक्ष्य निर्धारित किए जाने चाहिए जिससे यह जाना जा सके कि देश इस चरणबद्ध तरीके से आखिर कितना आगे जा सकता है और इसके लिए इस धन की उपलब्धता अब आगे आने वाली हर सरकार को करनी ही होगी। प्रधानमंत्री जी को अपने वादे पर अमल करते हुए केंद्रीय बजट में विज्ञान और अनुसंधान के लिए और अधिक धनराशि स्वीकृत करनी चाहिए जिससे देश में वैज्ञानिक अनुसंधान में धन की कमी आड़े न आए और देश में वैज्ञानिक शोध और आविष्कार का एक सकारात्मक माहौल बने।

विज्ञान कांग्रेस जैसे समारोह वैज्ञानिक माहौल पैदा करने के लिए जरूरी हैं और ये सकारात्मक कदम हैं लेकिन बेहतर होगा जब इस तरह के समारोहों से विज्ञान, शोध और अनुसंधान के लिए कोई ठोस कदम उठाए

पीएसएलवी-सी 23: इसरो की ऐतिहासिक सफलता

अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में इतिहास रचते हुए भारत ने आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से पीएसएलवी-सी23 राकेट के जरिए चार देशों के पांच उपग्रहों का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया और ये उपग्रह कक्षा में स्थापित हो गए। 44 मीटर ऊंचे, 230 टन वजनी और करीब 100 करोड़ रुपये की लागत वाले पीएसएलवी सी-23 ने पांच विदेशी उपग्रहों को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया। इनमें फ्रांस का 714 किलोग्राम भार वाला स्पॉट-7 प्रमुख है। इसके अलावा पीएसएलवी सी-23 ने जर्मनी के 14 किलो भार वाले एआईएसएटी, कनाडा के 15-15 किलो भार वाले एनएलएस 7.1 (सीएएन-एक्स4) और एनएलएस 7.2 (सीएएन-एक्स5) और सिंगापुर के सात किलो वजन वाले वीईएलओएक्स-1 उपग्रह को भी अंतरिक्ष में भेजा गया। उपग्रह के प्रक्षेपण में भारत कारोबारी छलांग पहले ही लगा चुका है। 23 अप्रैल 2007 को भारत के उपग्रहीय प्रक्षेपण यान ने इटली के खगोल उपग्रह एंजिल का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण किया। यह पहला सफल कारोबारी प्रक्षेपण था जिससे भारत दुनिया के पांच देशों अमेरिका, रूस, फ्रांस और चीन के विशिष्ट क्लब में शामिल हो गया था। इन प्रक्षेपणों के द्वारा भारत व्यवसायिक दृष्टिकोण से विदेशी उपग्रहों को भी प्रक्षेपित करने वाली चुनींदा सूची में शामिल हो चुका है।

प्रधानमंत्री ने इस प्रक्षेपण को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि विदेशी उपग्रहों का यह सफल प्रक्षेपण 'भारत की अंतरिक्ष क्षमता की वैश्विक अभिपुष्टि है।' वास्तव में ये सफलता कई मायनों में बहुत खास है क्योंकि एक समय था जब भारत अपने उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए दूसरे देशों पर निर्भर था और आज भारत विदेशी उपग्रहों के प्रक्षेपण से अरबों डालर की विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है। जिससे भारत को वाणिज्यिक फायदा हो रहा है। इसरो के कम प्रक्षेपण लगत की वजह से दूसरे देश भारत की तरफ लगातार आकर्षित हो रहे हैं। इसरो ने अब तक 19 देशों के 40 उपग्रहों का प्रक्षेपण किया है जिससे देश के पास काफी विदेशी मुद्रा आई है। चांद और मंगल अभियान सहित इसरो अपने 100 से ज्यादा अंतरिक्ष अभियान पूरे करके इतिहास रच चुका है । ये सफलता इसलिए खास है क्योंकि भारतीय प्रक्षेपण राकेटों की विकास लागत ऐसे ही विदेशी प्रक्षेपण राकेटों की विकास लागत का एक-तिहाई है।

वैज्ञानिकों से सार्क देशों के लिए एक सार्क उपग्रह लॉन्च करने का आह्वाहन करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इस तरह के उपग्रह से भारत के पड़ोसी देशों को आधुनिक तकनीकी का लाभ मिलेगा और यह उपग्रह भारत की तरफ से पड़ोसी देशों को तोहफा होगा। ताकि दूरस्थ शिक्षा, टेलिमेडिसिन, और कृषि संबंधी जानकारी जैसी सुविधाएं उन्हें मिल पाएं। ऐसे तकनीकी तोहफों से सार्क देशों के साथ भारत के सम्बंध भी मजबूत होंगे।

जाएं जिससे देश का आम आदमी भी विज्ञान से जुड़ाव महसूस कर सके।

इसरो के भावी मिशन

हाल में पांच विदेशी उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण, मंगल यान और चंद्रयान-1 की सफलता के साथ-साथ अंतरिक्ष में प्रक्षेपण का शतक लगाने के बाद इसरो चार और महत्वपूर्ण मिशनों पर कार्य तेज करने जा रहा है। इन मिशनों के लिए इसरो को भारी-भरकम बजट की जरूरत होगी। इनमें पहला कदम है अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजना। दूसरा मिशन चंद्रमा की सतह पर एक रोवर उतारना, तीसरा मिशन सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य उपग्रह का प्रक्षेपण करना और चौथा कदम रीयूजेबल लांच वेहिकल का प्रक्षेपण है। इन सभी महत्वपूर्ण मिशनों को अगले चार सालों के भीतर अंजाम दिया जाएगा। पृथ्वी की कक्षा में सफलतापूर्वक मंगलयान के पहुंचने के बाद इसरो के वैज्ञानिक अभियान की सफलता को लेकर काफी आश्वस्त हैं। हालांकि जब तक यह उपग्रह मंगल की कक्षा में स्थापित नहीं हो जाता तब तक वैज्ञानिक इस मिशन से जूझते रहेंगे लेकिन इसरो की रणनीति के तहत मिशन की सफलता या विफलता का आगामी कार्यक्रमों पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

इसरो का मानवयुक्त अंतरिक्ष कार्यक्रम

चंद्रयान-1 व मंगलयान की कामयाबी के बाद भारत की निगाहें अब आउटर स्पेस पर हैं। इसरो ग्रहों की तलाश के लिए मिशन भेजने की योजना बना रहा है। खास बात यह है कि इसमें एक मानव मिशन भी शामिल है। मानव स्पेसफ्लाइट कार्यक्रम का उद्देश्य पृथ्वी की निचली कक्षा (Leo) के लिए दो में से एक चालक दल को ले जाने और पृथ्वी पर एक पूर्वनिर्धारित गंतव्य के लिए सुरक्षित रूप से उन्हें वापस जाने के लिए एक मानव अंतरिक्ष मिशन शुरू करने की है। कार्यक्रम इसरो द्वारा तय चरणों में लागू करने का प्रस्ताव है। वर्तमान में, पूर्व परियोजना गतिविधियों क्रू मॉड्यूल, पर्यावरण नियंत्रण और लाइफ सपोर्ट सिस्टम, क्रू एस्केप सिस्टम, आदि महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के विकास पर इसरो ध्यान दे रहा है। कार्यक्रम के बारे में 300 किलोमीटर पृथ्वी की निचली कक्षा और उनकी सुरक्षित वापसी के लिए 2 या 3 चालक दल के सदस्यों को ले जाने के लिए एक पूरी तरह से स्वायत्त कक्षीय वाहन के विकास की परिकल्पना की गई है। इसरो ने 2015 में अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजने के लिए आरंभिक तैयारियां पूरी कर दी हैं।

चंद्रयान-2 मिशन

चंद्रयान-2 भारतीय अंतरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) तथा रूस की अंतरिक्ष एजेंसी रोसकोसमोस (आरकेए) का एक प्रस्तावित चंद्र अन्वेषण अभियान है जिसकी लागत लगभग 425 करोड़ रुपये है। जीएसएलवी प्रक्षेपण यान द्वारा प्रस्तावित इस अभियान में भारत में निर्मित एक लूनर ऑर्बिटर (चंद्रयान) तथा एक रोवर एवं रूस द्वारा निर्मित एक लैंडर शामिल होंगे। इसरो के अनुसार यह अभियान विभिन्न नई प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल तथा परीक्षण के साथ-साथ नए प्रयोगों को भी करेगा। पहिएदार रोवर चंद्रमा की सतह पर चलेगा तथा ऑन-साइट विश्लेषण के लिए मिट्टी या चट्टान के नमूनों को एकत्र करेगा। आंकड़ों को चंद्रयान-2 ऑर्बिटर के माध्यम से पृथ्वी पर भेजा जाएगा। मायलास्वामी

(शेषांश पृष्ठ 58 पर)

नहीं मिली सामाजिक पूंजी को अहमियत

रहीस सिंह

भारत में भी किसी न किसी स्तर पर यह स्थिति देखी जा रही है और यह जरूरत महसूस की जा रही है कि सरकार अर्थव्यवस्था की दिशा और प्रकृति को उस दिशा में ले जाने की कोशिश करे जिससे सामाजिक और आर्थिक पूंजी एक साथ समृद्ध हो, ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था अन्योन्याश्रित बनें अथवा फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज की अर्थव्यवस्था एक-दूसरे की ताकत बनें। एसएमई और एमएसएमई के लिए 10,000 करोड़ रुपये का प्रावधान मजबूत कदम है इससे इस क्षेत्र की ऋण व निधि प्रवाह संबंधी समस्या हल हो सकेगी

आम बजट न केवल सरकार की आर्थिक समझ को व्यक्त करता है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था की प्रकृति, स्थिति और दिशा को भी व्यक्त करता है। इसलिए बजट को सिर्फ आवंटन, वितरण या सस्ती अथवा मंहगी या फिर करों में छूट अथवा वृद्धि जैसी चीजों के ही नज़रिए से नहीं देखा जाना चाहिए। लेकिन यह जानने की जरूरत अवश्य होती है कि बजट देश की जरूरतों के अनुसार अर्थव्यवस्था को दिशा देने की नीतियों को अपनाने में समर्थ है या नहीं? एक पक्ष और भी है, जिसे अब तक भारतीय अर्थशास्त्रियों और नीतिकारों ने सबसे कम महत्व दिया है, वह है सामाजिक पूंजी का, जिसकी जरूरत को अब वैश्विक मंच पर उठाया जाने लगा है। बजट इसे कितनी तरजीह दे पा रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो बजट आर्थिक पूंजी के साथ-साथ सामाजिक पूंजी को साथ लेकर चलने में समर्थ हो पा रहा है या नहीं?

अभी हाल ही में बैंक ऑफ इंगलैंड के गवर्नर मार्क कार्ने ने न्यूयार्क में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि निरंकुश पूंजीवाद आज दुनिया को उसी तरह के प्रतिफल दे रहा है जिससे एक क्रांति अपने ही बच्चों को ग्रास बनाकर परिणामों को दुनिया के सामने पेश करती है। उनका इशारा सामाजिक पूंजी की तरफ था जो उनके आकलन के अनुसार अनियंत्रित बाजारवादी कट्टरता का शिकार हो रही है। उनका कहना था कि सभी विचारधाराएं चरम सीमा से ग्रस्त हैं। उन्होंने दुनिया का ध्यान इस ओर भी आकर्षित करने की कोशिश की कि 2008 के मेल्टडाउन से पहले बाज़ार की ताकत में विश्वास 'आस्था के दायरे' (द रीम ऑफ फेथ) तक पहुंच चुका था और बाजार अर्थव्यवस्था तब तक बाजार समाजों के रूप में परिवर्तित हो चुकी थीं। वे इस मान्यता को स्थापित कर चुकी थीं कि 'लाइट टच्ड रेग्युलेशन' और 'बबल्स' को ठीक से पहचाना नहीं जा सकता लेकिन इस अर्थशास्त्र के पैरोकार यह भूल गए कि समृद्धता केवल आर्थिक पूंजी में निवेश से नहीं आती बल्कि वास्तविक समृद्धता तो सामाजिक पूंजी में निवेश से आती है। उल्लेखनीय है कि सामाजिक पूंजी समाज में साझा मूल्यों और विश्वासों के बीच लिंक की तरह है जो व्यक्तियों (इंडीविजुअल्स) को साहसी बनाने के साथ-साथ पारस्परिक सहयोग की भावना से संपन्न करती है। इसके कमज़ोर पड़ने से व्यक्ति न केवल स्वयं को आगे बढ़ाने में असमर्थ होता है बल्कि समाज से अलग होता जाता है। इसका अंतिम छोर अलगावाद पर जाकर रुकता है जिसमें निष्क्रिय अलगाववाद ही नहीं आता बल्कि सक्रिय अलगाववाद भी आता है जो तमाम तरह के संघर्षों को जन्म देता है। इसलिए भारत जैसे देश में यह अपेक्षा तेजी से की जा सकती है कि विकास का जो भी मॉडल अपनाया जाए उसमें सामाजिक पूंजी की केंद्रीय हैसियत हो। लेकिन क्या ऐसा हो पा रहा है या बजट में ऐसी कोई संभावना दिख रही है?

विकसित देशों में जो आर्थिक मॉडल है उसके प्रति न केवल विकसित देशों में बल्कि पूरी दुनिया में गहरी खीझ दिखाई दे रही है, फिर वह चाहे जास्मिन क्रांति के रूप में अरब देशों में उपजी हो या आक्यूपाई वाल स्ट्रीट के रूप में अमेरिका जैसे देश में। कारण यह है कि

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। उन्होंने ऐतिहासिक-सामाजिक विषयों पर अब तक अनेक पुस्तकें लिखी हैं। ये पुस्तकें प्रकाशन केंद्र (लखनऊ), पियर्सन (किंडर्सले डार्लिंग प्रकाशन ब्रिटेन की दक्षिण एशिया के लिए फ्रेंचाइजी) तथा हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय आदि प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गई है। एक अन्य पुस्तक ''नयी विश्व व्यवस्था में भारत'' प्रकाशनाधीन है। ईमेल: raheessingh@gmail.com

अधिकांश वर्ग यह मान रहा है कि वैश्वीकरण और तकनीकी संवर्द्धन केवल अतिधनाढ्यों के लिए रिटर्न देने का काम कर रहा है, इसमें सामान्यजन और गरीबों के लिए कोई जगह नहीं है। यही वजह है कि जहां भी अतिधनाढ्यों या सुपर रिच के लिए 'अल्पकालिक लाभ' मार्गदर्शी सिद्धांत बने हुए हैं वहां सामाजिक-आर्थिक खाई अधिक चौड़ी हुई, युवाओं के लिए अवसरों का कम निर्माण किया गया जिससे कमजोर सामुदायिक भावना ओर 'अनफेयर सेंस' का उदय हुआ। अमेरिका में हाल ही में हुए एक सर्वे में स्नातक युवाओं में 40 प्रतिशत को अंडरएम्पलाएड यानी अर्द्धबेरोजगार माना जबकि यूरो क्षेत्र में उसे 50 प्रतिशत युवा बेरोजगार मिले, जिसे दुनिया को सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र माना जा सकता है जबकि अभी कुछ वर्ष पहले ही यह आदर्श आर्थिक क्षेत्र के रूप में देखा जा रहा था। आखिर ऐसा क्यों हुआ कि वह खोल उतर गया जो इसे आदर्शतम बता रहा था? क्या अमेरिका और यूरोप में कभी इसका गंभीरता से अध्ययन किया गया कि 'टू बिग टू फेल' स्कैंडल वास्तव में क्या था? ये प्रश्न इसलिए उठाए जा रहे हैं कि भारत में भी किसी न किसी स्तर पर यह स्थिति देखी जा रही है और यह जरूरत महसूस की जा रही है कि सरकार अर्थव्यवस्था की दिशा और प्रकृति को उस दिशा में ले जाने की कोशिश करे जिससे सामाजिक और आर्थिक पूंजी एक साथ समृद्ध हो, ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था अन्योन्याश्रित बनें अथवा फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज की अर्थव्यवस्था एक-दूसरे की ताकत बनें।

भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता के साथ स्फूर्त अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने की जरूरत है। इस स्थिति में ग्रामीण विकास पर अधिक ध्यान देना होगा लेकिन ग्रामीण विकास का तात्पर्य सिर्फ और सिर्फ ग्रामीण इन्फ्रास्ट्रक्चर के निवेश तक ही सीमित रहना नहीं है बल्कि उसके लिए कृषि पर सबसे अधिक ध्यान देना होगा। ध्यान रहे कि कृषि पिछले कई दशकों से उपेक्षित है। पूर्व कृषि मंत्री के अनुसार चौथी पंचवर्षीय योजना से 12वीं पंचवर्षीय योजना तक कृषि में राष्ट्रीय आय का 1.3 प्रतिशत से भी कम औसत निवेश किया गया।

वित्त मंत्री अरुण जेटली ने अपने बजट भाषण के दूसरे ही बिंदु में यह कहा कि भारत के लोगों ने निर्णायक रूप से परिवर्तन के लिए वोट दिया है। यह निर्णय लोगों का यथास्थिति के प्रति गुस्सा दर्शाता है। भारत निःसंकोच रूप से विकास करना चाहता है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले व्यक्ति स्वयं को गरीबी के शाप से मुक्त कराने के इच्छुक हैं जिन्हें जटिल चुनौतियों से उभरने का मौका मिल गया, वे आकांक्षावान हो गए हैं। वे अब नव मध्यवर्ग का हिस्सा बनना चाहते हैं। उनकी अगली पीढ़ी समाज द्वारा दिए जाने वाले अवसर का फायदा उठाने के लिए उत्सुक है। निर्णय लेने में धीमेपन से उपलब्ध अवसर हाथ से निकल जाता है। वित्त मंत्री ने यह भी स्वीकार किया कि यह राष्ट्र बेरोजगारी, अपर्याप्त बुनियादी सुविधाएं, अवसंरचना के अभाव और उदासीन अभिशासन झेलने के मूड में कतई नहीं है लेकिन क्या वित्त मंत्री धीमे विकास, बेरोजगारी और अवसंरचनात्मक अभाव की वास्तविक वजहों को सामने ला पाए? क्या वास्तव में देश की सामाजिक-आर्थिक गतिकी के साथ-साथ देशी-विदेशी अर्थव्यवस्था की योजक कड़ी के बीच साम्य कायम हो पाया?

जिन समस्याओं की ओर वित्त मंत्री ध्यान आकर्षित कर रहे हैं उनके लिए पहला कारण अंतरराष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य रहा, विशेषकर अमेरिकी व यूरोपीय अर्थव्यवस्था का संकट। अब अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने यह उम्मीद जताई है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था 2012-13 के संकुचन के बाद 2014 में 2013 के 3.0 प्रतिशत के मुकाबले 3.6 प्रतिशत की रफ्तार से वृद्धि करेगी। यानी वैश्विक परिस्थितियां अनुमानों से भिन्न रहीं तो भारतीय अर्थव्यवस्था भी लड़खड़ाएगी। इस स्थिति में भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता के साथ स्फूर्त अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने की जरूरत है। इस स्थिति में ग्रामीण विकास पर अधिक ध्यान देना होगा लेकिन ग्रामीण विकास का तात्पर्य सिर्फ और सिर्फ ग्रामीण इन्फ्रास्ट्रक्चर के निवेश तक ही सीमित रहना नहीं है बल्कि उसके लिए कृषि पर सबसे अधिक ध्यान देना होगा। ध्यान रहे कि कृषि पिछले कई दशकों से उपेक्षित है। पूर्व कृषि मंत्री के अनुसार चौथी पंचवर्षीय योजना से 12वीं पंचवर्षीय योजना तक कृषि में राष्ट्रीय आय का 1.3 प्रतिशत से भी कम औसत निवेश किया गया। सिंचित कृषि भूमि का विस्तार बहुत ही कम हुआ। इस स्थिति को देखते हुए सरकार चाहती तो किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में सुधार, कर सुधार और बाजार की प्रणाली का सरलीकरण जैसे कदम उठा सकती थी लेकिन इस बजट में ऐसा कुछ नहीं दिखा। सरकार ने शायद इस बात को नजरंदाज किया कि आज भी देश की साठ प्रतिशत से अधिक जनसंख्या की आजीविका का स्रोत कृषि ही है और 50 से 52 प्रतिशत श्रमशक्ति को कृषि ही रोजगार देती है लेकिन वह जीडीपी में 13.7 प्रतिशत हिस्सा ही ले पा रही है। सरकार के पास यदि दूरदृष्टि थी तो उसे कृषि को विशेष महत्व देना चाहिए था लेकिन ऐसा हुआ नहीं। उसने मोटे तौर पर तीन काम किए। पहला प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना शुरू करने का प्रस्ताव जिसके लिए मात्र 1000 करोड़ रुपये की धनराशि का ही प्रावधान है। यह सामान्य स्थिति के समाधानों के लिए मुकम्मल हो सकती है लेकिन व्यवहारिक चुनौतियों के लिए अपर्याप्त होगी। दूसरा, वर्ष 2014-15 के दौरान कृषि ऋण के लिए 8 लाख करोड़ का लक्ष्य जिसे ब्याज सहायता स्कीम के अंतर्गत बैंकों द्वारा 7 प्रतिशत की रियायती दर पर प्रदान किया जाएगा। इसका भी एक पक्ष बेहद कारगर दिखता है लेकिन दूसरा यह भी है कि यह किसानों पर ऋणभार बढ़ाएगा जो उनके लिए जोखिमपूर्ण होगा। एक पक्ष यह भी है कि आज भी अधिकांश किसान, विशेषकर सीमांत किसान जिनकी तादाद 85 प्रतिशत के आसपास है, बैंक तक अपनी पहुंच सुनिश्चित नहीं कर पाते।

आज भी देश की साठ प्रतिशत से अधिक जनसंख्या की आजीविका का स्रोत कृषि ही है और 50 से 52 प्रतिशत श्रमशक्ति को कृषि ही रोजगार देती है लेकिन वह जीडीपी में 13.7 प्रतिशत हिस्सा ही ले पा रही है। सरकार के पास यदि दूरदृष्टि थी तो उसे कृषि को विशेष महत्व देना चाहिए था लेकिन ऐसा हुआ नहीं। उसने मोटे तौर पर तीन काम किए। पहला प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना शुरू करने का प्रस्ताव जिसके लिए मात्र 1000 करोड़ रुपये की धनराशि का ही प्रावधान है। यह सामान्य स्थिति के समाधानों के लिए मुकम्मल हो सकती है लेकिन व्यवहारिक चुनौतियों के लिए अपर्याप्त होगी।

इसके दो कारण हैं-एक तो बैंकिंग घनत्व कम है और दूसरा वाणिज्यक बैंक बिना कुछ गिरवी रखे ऋण प्रदान नहीं करते। हालांकि भूमिहीन किसानों के लिए फंड की व्यवस्था करने संबंधी प्रावधान को बहुत ही अच्छा कदम माना जा सकता है। बजट में 500 करोड़ रुपये के मूल्य स्थिरीकरण कोष के गठन की बात भी की गई है। दरअसल, सरकार की मंशा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को धीरे-धीरे खत्म करते हुए एक राष्ट्रीय बाजार विकसित करने की है जिससे निजी क्षेत्रों और किसान बाजारों को बढ़ावा मिलेगा। उल्लेखनीय है कि एमएसपी को महंगाई की एक बड़ी वजह माना जा रहा है। बजट के संकेतों को समझ यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हम अब खेती से बाजार आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं।

सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में संतुलन बनाने और ग्रामीण व शहरी अर्थव्यवस्था को जोड़ने का काम लघु और मझौले उद्योग कर सकते हैं। ये वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं

लाखों एसएमई या एमएसएमई मर चुके हैं और कई लाख रुग्णता के शिकार हैं। इस लिहाज से वित्त मंत्री ने 10,000 करोड़ से निधियों का निर्माण करके बेहतर कदम उठाया है। यह निधि इक्विटी के रूप में उपलब्ध करायी जाएगी। इससे इस क्षेत्र के लिए जो ऋण और फंड के प्रवाह की समस्या बनी हुई थी, वह कुछ हद तक हल होगी

लेकिन 1991 के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था को जिस रास्ते पर आगे ले जाया गया उसने इन उद्योगों का विनाश कर दिया। लाखों एसएमई या एमएसएमई मर चुके हैं और कई लाख रुग्णता के शिकार हैं। इस लिहाज से वित्त मंत्री ने 10,000 करोड़ से निधियों का निर्माण करके बेहतर कदम उठाया है। यह निधि इक्विटी के रूप में उपलब्ध करायी जाएगी। इससे इस क्षेत्र के लिए जो ऋण और फंड के प्रवाह की समस्या बनी हुई थी, वह कुछ हद तक हल होगी लेकिन क्या हाल की अंकटाड की रिपोर्ट के मुताबिक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाली कंपनियों और छोटे उद्योगों को एफडीआई के जरिये एक प्लेटफॉर्म पर लाने का प्रयास नहीं किया जा सकता था? यदि ऐसा प्रयास किया जाता तो दूरदृष्टि झलकती अवश्य होता क्योंकि इससे देश के अलग-अलग इलाकों में मौजूद लघु उद्योगों के लिए धन उपलब्धता का एक नया स्रोत पैदा हो सकता है। अंकटाड की रिपोर्ट 'हाउ टु क्रिएट एंड बेनिफिट फ्रॉम एफडीआई-एसएमई लिंकेज' में लघु व मध्यम उपक्रमों के लिए एफडीआई आकर्षित करने की कुछ बेहतरीन नीतियों का जिक्र किया गया था अर्थात-बैकवर्ड लिंकेज, फॉरवर्ड लिंकेज और हॉरिजेंटल लिंकेज। इनके लिए अलग विनिमय की बात चल रही थी, उसे व्यवहारिक रूप दिया जा सकता था, लेकिन अभी ऐसा कुछ नहीं दिख रहा। बजट में छोटे और मझोले उद्योगों को कर रियायत दी गई है, जिसका स्वागत किया जाना चाहिए लेकिन इस क्षेत्र की असली समस्या यह नहीं बल्कि आयात और बड़े उद्योगों के मुकाबले प्रतिस्पर्धी न बन पाने सम्बंधी है, और इस उद्देश्य से कोई प्रावधान नहीं किए गए हैं।

दक्ष भारत नामक राष्ट्रीय बहु-दक्षता कार्यक्रम शुरू करने का प्रावधान भी बजट में किया गया है जो रोजगार समर्थता और उद्यमी कौशलों पर बल देकर युवाओं को दक्ष बनाएगा। इसके माध्यम से परम्परागत धंधों में लगे लोगों के लिए प्रशिक्षण और सहायता भी उपलब्ध कराई जाएगी लेकिन अभी तक यह तय नहीं है कि इस पर सरकार कितना खर्च करेगी, ऐसा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। इस कार्यक्रम को छोड़ दें तब भी बजट में भारतीय युवाओं, फिर वे चाहे अकादमिक क्षेत्र से सम्बंध रखते हों या व्यवसायिक शिक्षा से, के लिए कोई ठोस और प्रगतिशील कार्यक्रम नहीं दिखता। दूसरी फॉरवर्ड लिंकेज की अर्थव्यवस्था को काफी प्रोत्साहित दिया गया है। 100 स्मार्ट शहरों का विकास, राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास, बीस लाख की आबादी वाले शहरों में मेट्रो योजना का विकास, इलाहाबाद से हल्दिया तक जलपरिवहन, स्पेशल इकॉनॉमिक जोन के फिर से सक्रिय करने और 8500 किलोमीटर के हाइवे निर्माण, 16 नए बंदरगाहों का विकास, पूंजीगत निवेश के जरिए कुल 2,47,941 करोड़ रुपये की धनराशि को जुटाने की कवायद या बेसल, बेसल 3 मानकों के अनुरूप होने के लिए 2018 तक बैंकों में 2,40,000 करोड़ रुपये की इक्विटी के निवेश यानी बैंकों में प्राइवेट पूंजी के प्रवेश का रास्ता साफ करने सहित ऐसे बहुत से प्रावधान हैं जिनसे भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ निश्चित तौर पर प्रतिस्पर्धी बनेगी। कार्पोरेट को मिली टैक्स छूट से भारत में रीगनॉमिक्स को दस्तक देते हुए देखा जा सकता है, जिसके पीछे सोच यह थी कि कार्पोरेट को करों में दी गई नई बचतें फिर नए निवेशों का जरिया बनेगी जिससे रोजगार पैदा होंगे लेकिन क्या ऐसा हुआ था?

फिलहाल सरकार फॉरवर्ड लिंकेज की अर्थव्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ाना चाहती है जिससे कि भारतीय अर्थव्यवस्था को सही अर्थों में वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ा जा सके और उसे प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके लेकिन बैकवर्ड लिंकेज की अर्थव्यवस्था के संदर्भ में वह इतने निर्णायक कदम नहीं उठा सकी। यदि बैकवर्ड लिंकेज की भारतीय अर्थव्यवस्था को उसी तरह से आगे नहीं बढ़ाया जैसे कि फॉरवर्ड लिंकेज की अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने की कोशिश की गई है, आने वाले समय में भारत को अपनी आंतरिक सुरक्षा पर कुछ ज्यादा ही व्यय करना पड़ेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि नए प्रयासों से एक कुशल और

कार्पोरेट को मिली टैक्स छूट से भारत में रीगनॉमिक्स को दस्तक देते हुए देखा जा सकता है, जिसके पीछे सोच यह थी कि यदि कार्पोरेट को करों में दी गई नई बचतें नए निवेशों का जरिया बनेंगी जिससे रोजगार पैदा होंगे लेकिन क्या ऐसा हुआ था?

डिजिटल इंडिया बने, भारत की जरूरत है जो मरणासन्न अर्थव्यवस्था में नई जान फूंके लेकिन इसके साथ ही ग्रामीण भारत, ग्रामीण कुशलता, ग्रामीण योग्यता और दक्षता को भी वृहद मंच मिले जहां उन्हें प्रतियोगी बनाया जा सके। एक सच यह भी है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को अपनी प्रगति का रास्ता केवल स्थूल अर्थव्यवस्था में ही नहीं बल्कि सूक्ष्म अर्थव्यवस्था में तलाशना चाहिए, तभी सामाजिक पूंजी को पहचान मिल पाएगी और राष्ट्र को उसका महत्व समझ में आएगा। फिलहाल तो बजट में रीगन-थैचर युग की विशेषताएं दिख रही हैं और कतार के अंतिम व्यक्ति तक ग्रोथ को पहुंचाने के लिए ट्रिकिल डाउन को ही जरिया बनाया गया है, जिससे बहुत ज्यादा उम्मीदें लगाना तार्किक नहीं लगता क्योंकि सही अर्थों में यह फेल हो चुका है। फिर तो ट्रिकिल डाउन के बजाय 'नीचे से विकास' के आर्थिक मॉडल को अपनाना चाहिए। ❑

(पृष्ठ 54 का शेषांश)

अन्नादुराई के नेतृत्व में चंद्रयान-1 अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम देने वाली टीम चंद्रयान-2 पर भी काम कर रही है। इस अभियान को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लॉन्च वेहिकल एमके-II द्वारा भेजे जाने की योजना है। उड़ान के समय इसका वजन लगभग 2650 किलो होगा।

भारत के दूसरे चंद्र मिशन को अपनी मंज़िल तक पहुंचने में काफी देर लग सकती है। इसरो के प्रमुख के राधाकृष्णन का कहना है कि वह समयसीमा को लेकर कुछ नहीं कह सकेंगे क्योंकि रूस से लैंडर की उपलब्धता को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। फिलहाल चंद्रयान-2 मिशन को लेकर इसरो और रोसकोमोस के बीच बातचीत चल रही है, लेकिन बीते एक साल से इसमें कुछ खास प्रगति नहीं दिखाई दी है। यानी दूसरे देशों पर आश्रित रहने का एक और नुकसान यहां स्पष्ट दिख रहा है।

मार्स मिशन के बाद सन मिशन (मिशन आदित्य)

मंगलयान और चंद्रयान-1 की सफलता से उत्साहित इसरो के वैज्ञानिको ने 'आदित्य' नामक मिशन की योजना तैयार की है। अंतरिक्ष सम्बंधी वृहद योजना से जुड़े इस आदित्य मिशन को 2015-16 में प्रारम्भ किए जाने की योजना है। आदित्य एक उपग्रह है, जो सोलर 'कोरोनाग्राफ' यंत्र की मदद से सूर्य के सबसे भारी भाग का अध्यन करेगा। इससे कॉस्मिक किरणों, सौर आंधी, और विकिरण के अध्ययन में मदद मिलेगी। अभी तक वैज्ञानिक सूर्य के भारी भाग कोरोना का अध्यन केवल सूर्यग्रहण के समय में ही कर पाते थे। इस मिशन की मदद से सौर वलयों और सौर हवाओं के अध्ययन में जानकारी मिलेगी कि ये किस तरह से धरती पर इलेक्ट्रिक प्रणालियों और संचार नेटवर्क पर असर डालती हैं। इस उपग्रह का वजन 100 किग्रा होगा। इसका अध्ययन काल 10 वर्ष रहेगा। ये नासा द्वारा सन 1995 में प्रक्षेपित सोहो के बाद सूर्य के अध्ययन में सबसे उन्नत उपग्रह होगा।

पुनर्प्रयोज्य प्रक्षेपण यान

पुनर्प्रयोज्य प्रक्षेपण प्रणाली, रीयूजेबल लांच वेहिकल (या पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण यान,) एक से अधिक बार अंतरिक्ष में एक प्रक्षेपण यान लांच करने में सक्षम है। यह एक एक प्रक्षेपण प्रणाली है। पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण वाहन-प्रौद्योगिकी प्रदर्शक (आरएलवी-टीडी) पूरी तरह से पुनः उपयोग के योग्य प्रक्षेपण वाहन को साकार करने की दिशा में पहला कदम है। इस उद्देश्य के लिए एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शक आरएलवी- टीडी कॉन्फिगर किया गया है। आरएलवी-टीडी विभिन्न प्रौद्योगिकियों मसलन हाइपरसॉनिक उड़ान, स्वायत्त लैंडिंग, संचालित क्रूज की उड़ान और हाइपरसॉनिक उड़ान के लिए एक टेस्ट बेड की तरह काम करेगा जो हवा में प्रणोदन का उपयोग कर सकेगा। अंतरिक्ष के लिए उपयोग की लागत अंतरिक्ष अन्वेषण और अंतरिक्ष उपयोग में बड़ी बाधा है। एक पुनरु उपयोग योग्य प्रक्षेपण यान कम लागत, विश्वसनीय और जरूरत के समय अंतरिक्ष तक पहुंच रखने के लिए एक अच्छा विकल्प है। यह मिशन 2014-2015 में प्रस्तावित है। ❑

YH - 123/2014

बहुत मिला, लेकिन बहुत कुछ बाकी

उमेश चतुर्वेदी

कृषि और ग्रामीण विकास के तार एक दूसरे से गहरे जुड़े हैं। देश के विकास के लिए इन दोनों की कदमताल बेहद जरूरी है। ऐसा तभी संभव है जब नीति-निर्माण और धन आवंटन में दोनों को साथ लेकर चला जाए। नए बाजार में यह कदमताल कुछ बनती दिखी लेकिन वास्तव में इन क्षेत्रों को मजबूत करना इतना आसान काम भी नहीं। उम्मीदों का पहाड़ लांघने के लिए फिलहाल मीलों लंबा सफर बाकी है। इतना जरूर है कि सफर की दिशा अब स्पष्ट होती दिख रही है

1991 में नई आर्थिक नीति को लागू करने के तमाम लक्ष्यों में से एक बड़ा लक्ष्य यह भी था कि देश की जीडीपी पर कृषि की जो भारी-भरकम हिस्सेदारी है, उसे कम किया जाय। आजादी मिलते वक्त देश की जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी 51.9 फीसदी थी, वह घटकर अब 13.9 फीसद रह गई है। इसमें भी पिछले पांच साल में करीब आठ फीसद की गिरावट आई है। उदारीकरण और भूमंडलीकरण के दौर में जिस नई आर्थिक व्यवस्था को विकासशील देशों ने अख्तियार किया, उसमें जीडीपी में खेती की हिस्सेदारी को घटाना ही आदर्श और बेहतर मॉडल माना जाता रहा है। इन अर्थों में देखा जाए तो नई आर्थिक नीति कामयाब ही रही है। इसके बावजूद अगर आज बेहतर मॉनसून की उम्मीद किसानों के साथ सरकार भी लगाए बैठी है तो इसका मतलब साफ है कि जीडीपी में अपनी लगातार गिरती हिस्सेदारी के बावजूद कृषि क्षेत्र अब भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। सामाजिक व्यवस्था की ताकत तो खैर वह पहले से ही रही है और उससे यह स्थान नई से नई सामाजिक व्यवस्था भी नहीं छीन सकती।

कृषि क्षेत्र के इस महत्व को मौजूदा बजट में भी महसूस किया जा सकता है जिसमें वित्त मंत्री ने कृषि में विकास दर को 4 फीसदी तक बनाए रखने पर ज़ोर दिया है। खेती-किसानी पर बजट में जोर देने की उम्मीद उसी दिन बढ़ गई थी, जब संसद में वित्त मंत्री ने आर्थिक सर्वे पेश किया था। संसद में पेश आर्थिक सर्वेक्षण 2013-14 में कृषि क्षेत्र के सामने व्याप्त चुनौतियों एवं अपेक्षित सुधारों की व्यापक चर्चा की गई थी। आर्थिक सर्वेक्षण ने माना कि देश में खाद्यान का पर्याप्त भंडार मौजूद होने के बावजूद कृषि क्षेत्र के विकास पर जोर दिया जाना चाहिए। खेती को लेकर अपने चुनाव अभियान और चुनाव घोषणा पत्र में भारतीय जनता पार्टी ने चिंताएं जताई थीं। भारतीय जनता पार्टी को आमतौर पर शहरी क्षेत्रों की पार्टी माना जाता रहा है लेकिन जिस तरह से उत्तर और पश्चिम भारत में चुनावों में उसे कामयाबी मिली, उससे साफ है कि खेती किसानी से जुड़े लोगों ने भी उसका जमकर समर्थन किया है। शायद यही वजह है कि मौजूदा बजट में किसानों और ग्रामीण विकास को लेकर वित्त मंत्री ने कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की।

यह सच है कि सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं उसके सहयोगी क्षेत्रों की हिस्सेदारी अकेले 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान ही 15.2 प्रतिशत से घट कर 2013-14 में 13.9 प्रतिशत रह गई है। इतना ही नहीं, इसी अवधि में किसानों की संख्या में भी अभूतपूर्व गिरावट आई है। जनगणना, 2001 के मुताबिक तब देश में किसानों की संख्या जहां 127 लाख थी, वहीं जनगणना 2011 के आंकड़ों के मुताबिक यह संख्या घट कर 118.7 लाख ही रह गई है। यह उस देश का हाल है, जिसने साठ के देश में हरित क्रांति का सपना दिया था और उसे एक मुकम्मल ऊंचाई तक पहुंचाया था। आज अगर खाद्यान के भंडार भरे हुए हैं तो इसकी बड़ी वजह यही है कि हरित क्रांति कामयाब रही। बहरहाल आर्थिक सर्वे के मुताबिक कृषि क्षेत्र में उत्पादन की विकास दर

लेखक 'लाइव इंडिया' समाचार चैनल में वरिष्ठ पत्रकार हैं। इससे पहले जी न्यूज, इंडिया न्यूज, सकाल टाइम्स, दैनिक भास्कर, अमर उजाला आदि संस्थानों में काम कर चुके हैं। भारतीय जनसंचार संस्थान, केंद्रीय हिंदी संस्थान आदि अनेक मीडिया संस्थानों में अध्यापन। प्रकाशित पुस्तकें: बाजारवाद के दौर में मीडिया, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के लिए दिनमान पत्रिका पर मोनोग्राफ का लेखन। ईमेल: uchaturvedi@gmail.com

ना सिर्फ अंतरराष्ट्रीय मानकों से काफी कम है, बल्कि महत्वपूर्ण खाद्यान्न चावल और गेहूं का उत्पादन साल 1980 के बाद घटा ही है। इसकी बड़ी वजह यही है कि अभी भी हमारी खेती मॉनसून पर निर्भर है। देश के खाद्यान्न और तिलहन का 60 प्रतिशत हिस्सा सिर्फ खरीफ के मौसम में उत्पन्न होता है। यह भी सच है कि अब भी देश की कुल खेती योग्य भूमि का सिर्फ 35 प्रतिशत हिस्सा ही सिंचित है। ऐसे हालात में विशेषज्ञ मानते रहे हैं कि खेती पर ज़ोर दिए बगैर खुशहाल देश का सपना पूरा नहीं होगा। शायद यही वजह है कि मौजूदा बजट में कृषि पर काफी जोर दिख रहा है। यह आसन्न सूखे का ही असर है कि बजट भाषण में अरुण जेटली ने 1000 करोड़ रुपये से प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना शुरू करने का ऐलान किया। उम्मीद की जानी चाहिए कि सिंचाई से वंचित करीब 65 फीसदी कृषि भूमि तक यह सिंचाई योजना अगले कुछ वर्षों में खुशहाली की नई राह लेकर आएगी।

भारतीय कृषि की एक बड़ी परेशानी यह है कि वह अब महंगी हो गई है। फसल की जरूरत के वक्त भारतीय किसानों को खाद-बीज और जरूरी दवाएं नहीं मिलतीं। फिर नकदी फसलों की उपज के लिए किसानों को कर्ज लेने पड़ते हैं। इस कर्ज के जाल में फंसने का ही असर है कि एक आंकड़े के मुताबिक 1997 से 2006 के बीच एक लाख 66 हजार 304 किसानों ने आत्महत्या की। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार 2008 में 16116 किसानों ने आत्महत्याएं की थीं। 2009 में आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या पिछले साल से 1172 ज़्यादा हुई। 2009 के दौरान 17368 किसानों द्वारा आत्महत्या की आधिकारिक रपट दर्ज हुई। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक 1995 से 2011 के बीच 7 लाख, 50 हजार 860 किसानों ने आत्महत्या की है। किसानों को कर्ज और उनकी आत्महत्याएं देश के लिए चिंता की बड़ी वजह रही है। बहरहाल मौजूदा बजट में सिर्फ मौजूदा वित्त वर्ष के लिए ही वित्त मंत्री ने किसानों को कर्ज देने के लिए 8 लाख करोड़ रुपये का प्रस्ताव रखा है। जिसे नाबार्ड के जरिए किसानों को मुहैया कराया जाएगा। निश्चित तौर पर अगर इतनी बड़ी रकम किसानों को मिलती है तो भारतीय खेती को एक नई दिशा मिल सकती है। वित्त मंत्री ने भी माना है कि भूमिहीन किसानों को कर्ज मिलने में दिक्कत आती है, लिहाजा इस साल ऐसे करीब पांच लाख किसानों को कर्ज देने का फैसला किया गया है।

किसानों की एक बड़ी समस्या यह है कि खेती करने वाले लोगों को यह बताने वाला कोई नहीं है कि उनकी मिट्टी कैसी है और उन्हें कैसी फसल उगानी चाहिए। इसके लिए देशभर में 100 चलती-फिरती प्रयोगशालाएं बनाने का भी वित्त मंत्री ने ऐलान किया है। करीब छह लाख गांवों वाले देश में इतनी प्रयोगशालाएं नाकाफी ही होंगी लेकिन इसे एक बेहतर शुरूआत माना जा सकता है। इसके साथ 100 करोड़ की लागत से देश के हर किसान को मृदा कार्ड मुहैया कराने का भी फैसला लिया गया है। अगर ईमानदारी से इस योजना को लागू किया गया तो खेती की तरफ

जीडीपी में घटती हिस्सेदारी के बावजूद तकरीबन 70 फीसदी लोगों का रोजगार सीधे खेती-किसानी से ही जुड़ा है। निश्चित तौर पर इसमें शोध के जरिए ही बढ़ावा दिया जा सकता है। शायद यही वजह है कि 100 करोड़ की लागत से झारखंड और असम में दो कृषि अनुसंधान केंद्र और 200 करोड़ के निवेश से आंध्र प्रदेश और राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालय के साथ ही तेलंगाना और हरियाणा में बागवानी विश्वविद्यालय बनाने का प्रस्ताव है।

युवाओं को लौटाने में बड़ी मदद मिलेगी। अब तक हरित क्रांति पर जोर रहा है लेकिन अब प्रोटीन क्रांति शुरू करने का ऐलान भी किया गया है। जाहिर है कि इसका मकसद साफ है कि अब दूध और दलहन के उत्पादन पर जोर दिया जाएगा। जीडीपी में घटती हिस्सेदारी के बावजूद तकरीबन 70 फीसदी लोगों का रोजगार सीधे खेती-किसानी से ही जुड़ा है। निश्चित तौर पर इसमें शोध के जरिए ही बढ़ावा दिया जा सकता है। शायद यही वजह है कि 100 करोड़ की लागत से झारखंड और असम में दो कृषि अनुसंधान केंद्र और 200 करोड़ के निवेश से आंध्र प्रदेश और राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालय के साथ ही तेलंगाना और हरियाणा में बागवानी विश्वविद्यालय बनाने का प्रस्ताव है। यूरिया की लगातार हो रही बर्बादी और कंपनियों की बंदरबांट को लेकर सवाल उठते रहे हैं। मौजूदा बजट में नई यूरिया नीति बनाने का ऐलान इसीलिए किया गया है। किसानों के लिए अलग से 100 करोड़ की लागत से किसान चैनल और पूर्वोत्तर के राज्यों के लिए 11750 करोड़ की लागत से जैविक खेती के विकास का लक्ष्य भी बजट की अहम योजनाएं कही जा सकती हैं।

कृषि क्षेत्र की प्रमुख योजनाएं

योजना	बजट (करोड़ रु.)
प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना	1000
झारखंड और असम में दो कृषि अनुसंधान केंद्र	100
आंध्र प्रदेश और राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालय	200
किसान चैनल	100
पूर्वोत्तर के राज्यों में जैविक खेती का विकास	11750
राष्ट्रीय पशुधन मिशन	304
नीली क्रांति (मछली पालन)	50
देशी नस्ल विकास कार्यक्रम	50
डेयरी उद्यमशीलता कार्यक्रम	230
राष्ट्रीय कृषि विकास योजना	9954
राष्ट्रीय फसल बीमा	2823
स्थायी राष्ट्रीय कृषि मिशन	1550
एकीकृत जल संभरण प्रबंध	2142

वित्त मंत्री ने अपनी पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र के मुताबिक गायों को बचाने और देशी नस्लों के पशुओं के विकास के लिए 304 करोड़ की लागत से राष्ट्रीय पशुधन मिशन, 50 करोड़ की लागत से देशी नस्ल विकास कार्यक्रम, 50 करोड़ की लागत से नीली क्रांति यानी मछली पालन और 230 करोड़ की लागत से डेयरी उद्यमशीलता कार्यक्रम भी शुरू किया है। बजट में महत्वपूर्ण यह भी है कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के लिए 9954 करोड़ रुपये, राष्ट्रीय फसल बीमा के लिए 2823 करोड़ रुपये

का बजट रखा है। इसके साथ ही महंगाई पर लगाम लगाने की दिशा में अनाज और सब्जियों की कीमतों को स्थिर बनाए रखने के लिए कोष की स्थापना की है और उसके लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसके साथ ही स्थायी राष्ट्रीय कृषि मिशन भी बनाने का ऐलान किया गया है और इसके लिए 1550 करोड़ रुपये का बजट तय किया गया है। बजट में भूमि संसाधन के महत्व को स्वीकार करने की भी कोशिश नजर आती है। इसके तहत 2142 करोड़ की लागत से एकीकृत जल संभरण प्रबंध के लिए नीरांचल कार्यक्रम के साथ ही 250 करोड़ रुपये भूमि के रिकॉर्ड के रख-रखाव के लिए दिया गया है।

खेती-किसानी का ग्रामीण विकास से गहन रिश्ता है। खेती-विकसित होगी तो ग्रामीण इलाकों का भी विकास होगा लेकिन इसके साथ ही ग्रामीण विकास के लिए अलग से सहयोग और आधारभूत ढांचे का विकास होना भी जरूरी है। ग्रामीण इलाकों में रोजगार के लिए शुरू की गई महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना में भ्रष्टाचार की खबरें आए दिन आती रहती हैं। लेकिन यह भी सच है कि गांवों की तसवीर बदलने में इसने बड़ी भूमिका निभाई है मौजूदा बजट में इसके लिए 34000 करोड़ का प्रावधान करके इसकी महत्ता को ही स्वीकार किया गया है। इस पर विवाद हो सकता है कि गांवों को शहरों की तरह की संरचना की जरूरत है या नहीं, लेकिन इस सरकार ने भाजपा के पूर्व रूप भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम पर शहरी मिशन शुरू किया है और इसके लिए 100 करोड़ के बजट का प्रावधान किया है। अटल बिहारी वाजपेयी की अगुआई वाली सरकार में ग्रामीण विकास मंत्री रहे एम वेंकैया नायडू ने बारहमासी सड़कों से गांवों को जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना शुरू की थी। यह योजना बाद की सरकारों ने भी चलाई और अरुण जेटली ने इसके लिए मौजूदा बजट में 14 हजार 391 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। भारतीय गांवों में पेयजल अब भी बड़ी समस्या है। इसके लिए मौजूदा बजट में 11 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। जिसे राज्यों को सहायता के तौर पर दिया जाएगा। इसके साथ ही करीब 20 हजार कस्बों में राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल योजना के तहत 3600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। ग्रामीण इलाकों में सफाई के लिए 4260 करोड़ का भी प्रावधान किया गया है। भारत में अब भी काफी गरीब हैं। गरीबी को लेकर आए दिन आंकड़े आते रहते हैं। हाल ही में रंगराजन समिति के आंकड़ों के मुताबिक करीब 30 करोड़ लोग गरीब हैं। बहरहाल 4000 करोड़ रुपये की लागत से बजट में गरीब परिवारों के स्वरोजगार और कौशल विकास के लिए योजना शुरू करने का ऐलान किया गया है। गांवों में लोग अपने छोटे उद्यम लगा सकें, सरकार इसके लिए उद्यमिता कार्यक्रम शुरू करने जा रही है और इसके लिए 100 करोड़ के बजट का प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री ने गरीबों के लिए इंदिरा आवास योजना को जारी रखा है और इसके लिए 16 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसके तहत गरीबों को मकान बनाने या पहले से कच्चा मकान है तो उसे पक्का बनाने के लिए राज्यों के जरिए मदद दी जाएगी। इसमें से 60 फीसदी हिस्सेदारी अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षित रहेगी। गांवों में अब भी बिजली बड़ी समस्या है। इसके लिए यूपीए सरकार ने राजीव गांधी ग्राम विद्युतीकरण योजना शुरू की थी। बहरहाल वित्त मंत्री अरुण जेटली ने जनसंघ के दूसरे संस्थापक दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर 500 करोड़ रुपये की लागत से ग्राम ज्योति योजना शुरू की है। इसके साथ ही गांवों को इंटरनेट से जोड़ने के लिए 500 करोड़ की लागत से डिजिटल इंडिया कार्यक्रम शुरू किया गया है। पंचायती राज को मजबूत बनाने के लिए खासतौर पर पिछड़े क्षेत्रों में अनुदान के लिए 5900 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

रंगराजन समिति के आंकड़ों के मुताबिक करीब 30 करोड़ लोग गरीब हैं। बहरहाल 4000 करोड़ की लागत से बजट में गरीब परिवारों के स्वरोजगार और कौशल विकास के लिए योजना शुरू करने का ऐलान किया गया है। गांवों में लोग अपने छोटे उद्यम लगा सकें, सरकार इसके लिए उद्यमिता कार्यक्रम शुरू करने जा रही है और इसके लिए 100 करोड़ के बजट का प्रावधान किया गया है।

ग्रामीण विकास क्षेत्र की प्रमुख योजनाएं

योजना	बजट (करोड़ रु.)
मनरेगा	34000
श्यामा प्रसाद शहरी मिशन	100
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना	14 हजार 391
राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल योजना	3600
ग्रामीण इलाकों में सफाई	4260
स्वरोजगार और कौशल विकास	4000
उद्यमिता कार्यक्रम	100
दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना	500
डिजिटल इंडिया कार्यक्रम	500
पंचायती राज को मजबूत बनाने के लिए	5900

इस बजट को देखकर साफ है कि उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के घोषणा पत्र के मुताबिक गांवों और खेती-किसानी से जुड़े हर शख्स तक अपनी सरकार की पहुंच और उसके जरिए सहयोग बढ़ाने की पुरजोर कोशिश की है। इस बजट से एक बार फिर साफ हो गया है कि कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के बिना देश के विकास की सही मायने में कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन देश में गांवों का जितना बड़ा नेटवर्क है और वहां जितनी बड़ी जनसंख्या निवास करती है, उसके सामने चाहे जितनी भी योजनाएं आएं, इसलिए कम पड़ती हैं, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की वह गति नहीं है, जो बड़े शहरों और महानगरों में है। ❑

100 स्मार्ट शहरों का निर्माण

देश में 100 स्मार्ट शहरों के निर्माण के लिए 7060 रुपये का आवंटन बजट में किया गया है। इस परियोजना के तहत सरकार वर्तमान मध्यम आकार के शहरों के प्रबंधन में उच्च प्रौद्योगिकी आधारित प्रयोगों की शुरुआत कर उनका आधुनिकीकरण करेगी। इन शहरों में सक्षम ऊर्जा प्रणाली, स्वच्छ पेयजल और समुचित कचरा निपटान सुविधाएं प्रदान करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी को भी एक उपस्कर के रूप में प्रयोग किया जाएगा। सरकार ने निर्माण के लिए न केवल न्यूनतम कार्पेट एरिया 50,000 वर्गमीटर से घटाकर 20,000 वर्ग मीटर करने की घोषणा की है बल्कि इसके लिए आवश्यक न्यूनतम पूंजी सीमा एक करोड़ डॉलर से घटाकर 50 लाख डॉलर करने की भी घोषणा की है।

विकासशील देशों का सारथी: ब्रिक्स विकास बैंक

सुरेश अवस्थी

दूसरी दुनिया के देशों द्वारा नई विश्व अर्थव्यवस्था निर्मित किए जाने की मांग यदा कदा उठती रही, परंतु हासिल कुछ नहीं हुआ। इसे ब्रिक्स देशों के नेतृत्व की बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता ही माना जाएगा कि तमाम शंकाओं और आशंकाओं को किनारे रख कर उन्होंने 'ब्रेटेनवुड्स ट्विंस', कहे जाने वाले विश्व बैंक और आईएमएफ का विकल्प तैयार करने का न केवल संकल्प लिया बल्कि उसे जमीन पर भी उतारा। इसी संकल्प शक्ति का परिणाम है कि सदस्य देशों में विकास परियोजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए ब्रिक्स बैंक जिसे न्यू ब्रिक्स डवलपमेंट बैंक का नाम दिया गया है, की स्थापना की गई है

भारत सहित 'ब्रिक्स' (ब्राजील, भारत, रूस, चीन और दक्षिण अफ्रिका के नाम के प्रथमाक्षरों से बना सयुंक्ताक्षर) के पांचों विकासशील देशों का अपना वैश्विक बैंक बनाने का स्वप्न जुलाई 2014 में साकार हो गया है। पश्चिमी देशों के प्रभुत्व वाली अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नया रूप देने के उद्देश्य से बने इस समूह ने पहला ठोस कदम उठाते हुए इस बार के ब्राजील के फोटलिजा में संपन्न छठे शिखर सम्मेलन में 100 अरब डालर के ब्रिक्स विकास बैंक के गठन की घोषणा की। सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार बैंक की पूंजी के लिए प्रारंम्भिक अंशदान में सभी सदस्य देशों की समान भागीदारी होगी। प्रारम्भ में पांचों सदस्य देश कुल 50 अरब डालर, अर्थात प्रत्येक सदस्य दस-दस अरब डालर का योगदान देगा। बैंक का मुख्यालय चीन के प्रसिद्ध औद्योगिक नगर शंघाई में होगा और उसका प्रथम अध्यक्ष भारत से कोई व्यक्ति होगा। जिसका कार्यकाल 5 वर्ष का रहेगा।

ब्रिक्स देशों के राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों की बैठक में सदस्य देशों को विदेशी मुद्रा के संकट से उबारने के लिए 100 अरब का एक आयात आरक्षित कोष (कॉटिजेंसी रिर्जव अरेंजमेंट) के गठन का भी समझौता हुआ है। सदस्य देशों के विदेशी मुद्रा संकट को दूर करने के लिए उठाए गए कदम के बारे में सम्मेलन के घोषणा पत्र में इसे यानी सीआरए को एक सकारात्मक पहल बताया गया है। इससे सदस्य देशों को नकदी के प्रवाह में किसी तात्कालिक दबाव से छुटकारा पाने में मदद मिलेगी; ब्रिक्स देशों में परस्पर सहयोग बढ़ेगा और वैश्विक वित्तीय व्यवस्था में सुदृढ़ता आएगी। आईएमएफ अर्थात अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की तर्ज पर बने इस आकस्मिक कोष में चीन का प्रारंभिक योगदान सबसे बड़ा अर्थात 41 अरब डालर का होगा, जबकि ब्राजील, भारत और रूस 18-18 अरब डालर तथा दक्षिण अफ्रीका पांच अरब डालर का अंशदान करेंगे।

जहां ब्रिक्स बैंक की संरचना का प्रश्न है, इसका एक संचालक मंडल (बोर्ड ऑफ गवर्नर्स), निदेशक मंडल (बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स) अध्यक्ष और उपाध्यक्ष होंगे। बैंक के अध्यक्ष का चुनाव संस्थापक सदस्य देशों में से क्रमानुसार (रोटेशन के आधार पर) होगा। अन्य सदस्य देशों में से कम से कम एक उपाध्यक्ष होगा। इसकी सदस्यता संयुक्त राष्ट्र के अन्य सदस्य देशों के लिए भी खोले जाने का प्रस्ताव है। घोषण पत्र के अनुसार ब्रिक्स बैंक 2016 से काम करना शुरू कर देगा।

ब्रिक्स बैंक और सीआरए की स्थापना के निर्णय की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि 'बैंक से न केवल सदस्य राष्ट्रों को लाभ होगा, बल्कि अन्य विकासशील देश भी इसका लाभ उठा सकेंगे। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय अस्थिरता के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक स्थिरता को बनाए रखने में से दोनों संस्थान अब नए माध्यम बनेंगे'। ब्रिक्स बैंक, विश्व बैंक की तरह काम करेगा, जबकि इसका विदेशी मुद्रा भंडार लघु अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के रूप में काम करेगा।

इस संगठन का मूल विचार 2001 में विश्व विख्यात वित्तीय संस्था गोल्डमैन एसेट मैनेजमेंट के अध्यक्ष जिम ओनील ने एक शोध पत्र में प्रस्तुत किया था। उन्होने बिल्डिंग वेटर ग्लोबल इकोनॉमिक्स का शीर्षक आलेख में नई वैश्विक अर्थव्यवस्था में ब्राजील, रूस, भारत और चीन की ब्रिक्स भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए ब्रिक्स अर्थात नई अर्थव्यवस्था की नींव की ईंटों

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। आकाशवाणी और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के विभिन्न विभागों में कई दशकों की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। ईमेल: esspeeawasthi@gmail.com

के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि भावी अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में इन चारों देशों की भूमिका निर्णायक रहने वाली है। स्पष्ट है कि इन चारों देशों के नामों के पहले अक्षरों का प्रयोग कर जिस नई वित्तीय व्यवस्था की परिकल्पना की गई थी वहीं अब ब्रिक्स बैंक के रूप में सामने आई है।

सितंबर 2006 में इन देशों के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में भाग लेने के दौरान आपस में कई बैठकें कीं। उसके बाद मई 2008 में रूस के येकेटाकरन बर्न में पहली विधिवत राजनयिक बैठक हुई। इसी शहर में 16 जून 2009 को पहला औपचारिक शिखर सम्मेलन हुआ, जिसमें इस समूह की स्थापना की गई। प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका को आमंत्रित सदस्य के रूप में स्थान दिया गया और दिसंबर 2010 में इसे पूर्ण सदस्य बना लिया गया और इस प्रकार 'ब्रिक' ने 'ब्रिक्स' का आकार ग्रहण किया।

ब्रिक्स विकास बैंक की स्थापना से 70 वर्ष पूर्व अमेरिका में न्यू हैंपशर के ब्रेटनवुड्स में 44 देशों द्वारा विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की स्थापना के बाद 5 विकासशील देशों द्वारा इसी तर्ज पर समानांतर संस्थाएं गठित करने का प्रयास फलीभूत हुआ है। विश्व बैंक और आईएमएफ द्वारा पूरी दुनिया पर अपना आर्थिक एजेंडा थोपने की कोशिश की जाती रही है। दूसरी दुनिया के देशों द्वारा नई विश्व अर्थव्यवस्था निर्मित किए जाने की मांग यदा कदा उठती रही, परंतु हासिल कुछ नहीं हुआ। इसे ब्रिक्स देशों के नेतृत्व की बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता ही माना जाएगा कि तमाम शंकाओं और आशंकाओं को किनारे रख कर उन्होने 'ब्रेटेनवुड्स ट्विंस', कहे जाने वाले विश्व बैंक और आईएमएफ का विकल्प तैयार करने का न केवल संकल्प लिया बल्कि उसे जमीन पर भी उतारा। इसी संकल्प शक्ति का परिणाम है कि सदस्य देशों में विकास परियोजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए ब्रिक्स बैंक जिसे न्यू ब्रिक्स डवलपमेंट बैंक का नाम दिया गया है, की स्थापना की गई है। इसके साथ ही, मौद्रिक अथवा वित्तीय संकट के समय सीधी सहायता के लिए आकस्मिक कोष सीआरए की व्यवस्थाओं ने भी अस्तित्व ग्रहण कर लिया है।

भारत सहित एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका (लैटिन अमेरिका) के अनेक विकासशील देशों को अपनी विकास परियोजनाओं और आधारभूत सुविधाओं के उन्नयन के लिए धन जुटाने में भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। संसाधनों के पारंपरिक स्रोतों पर भारी दबाव है जिसके कारण तमाम देशों के विकास कार्यक्रम प्रभावित हो रहे हैं। इसके दूसरी ओर, चीन और गैस एवं तेल उत्पादक देशों के पास अतिशेष धन है। इस वृहद कोष (विश्व बैंक और आईएमएफ) का वास्तविक उपयोग विश्व के उन्नत एवं औद्योगिक देश, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों के माध्यम से उठा रहे हैं। नया ब्रिक्स बैंक जरूरतमंद विकासशील देशों के लिए धन उपलब्ध कराने में समृद्ध देशों के अतिशेष धन का उपयोग कर सकता है। संपन्न देशों के अतिशेष धन का प्रवाह विकासशील देशों की परियोजनाओं की ओर मोड़ा जा सकता है। इससे विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में ढांचागत परियोजनाओं में निवेश की समस्याओं से जूझने की आवश्यकता नही रह जाएगी और उनके आर्थिक विकास को नई ऊर्जा और गति मिलेगी। अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि विकासशील देशों में ढांचागत परियोजनाओं के लिए आवश्यक राशि मौजूदा 8 खरब डालर से बढ़कर अगले दो दशकों में प्रतिवर्ष 240 खरब डालर तक पहुंच जाएगी। इसमें से 120 खरब डालर विकास की वर्तमान गति को बनाए रखने और अपने लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने वाली जरूरी परियोजनाओं के लिए ही बढ़ जाएंगे। रेल मार्गों, बंदरगाहों और हवाई अड्डों के विस्तार की नई परियोजनाओं के कारण शहरी आधारभूत ढांचे की गुणवत्ता और परिणाम पर भारी दबाव रहेगा। अनेक देशों में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में आवास, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता और मलजल विकास की बुनियादी सुविधाओं की मांग काफी ज्यादा बढ़ने की संभावना है। इन सब सुविधाओं को मुहैया कराना न केवल आर्थिक बल्कि एक बड़ी मानवीय आवश्यकता भी है।

सितंबर 2006 में इन देशों के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में भाग लेने के दौरान आपस में कई बैठकें कीं। उसके बाद मई 2008 में रूस के येकेटाकरन बर्न में पहली विधिवत राजनयिक बैठक हुई। इसी शहर में 16 जून 2009 को पहला औपचारिक शिखर सम्मेलन हुआ, जिसमें इस समूह की स्थापना की गई। प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका को आमंत्रित सदस्य के रूप में स्थान दिया गया और दिसंबर 2010 में इसे पूर्ण सदस्य बना लिया गया और इस प्रकार 'ब्रिक' ने 'ब्रिक्स' का आकार ग्रहण किया।

विश्व बैंक की ऋण देने की क्षमता हाल के वैश्विक आर्थिक संकट के पूर्व के दिनों की अपेक्षा लगभग आधी रह गई है और अधिक ऋण प्रदान करने के लिए यह अपने पूंजी आधार में वृद्धि करने में अक्षम है। उसे भय है कि इससे बैंक पर विकसित देशों के परंपरागत नियंत्रण में सेंध लग सकती है। ढांचागत परियोजनाओं के लिए निजी क्षेत्र के निवेश में भी भारी कमी आई है। आर्थिक मंदी के कारण निजी निवेश पूर्व की अपेक्षा एक तिहाई रह गया है। विकासशील देशों की ढांचागत एवं विकास परियोजनाओं के लिए आवश्यक धनराशि जुटाने में यह बैंक निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

जैसा पहले बताया जा चुका है ब्रिक्स डवलपमेंट बैंक में सभी पांच सदस्य देशों का अंशदान बराबरी का होगा। विश्व बैंक और आईएमएफ के कटु अनुभवों को देखते हुए यह जरूरी है कि बैंक के संचालन में सभी सदस्यों का अधिकार और भागीदारी समान हो। इससे यह सुनिश्चित होगा कि बैंक के संचालन और प्रक्रिया को परिभाषित करने वाले सिद्धांत और नियमों में सभी पांच सदस्यों की शक्तियां और अधिकार बराबर के होंगे। ब्रिक्स विकास बैंक में पहले भारतीय अध्यक्ष की भूमिका बैंक के प्रबंधन एवं परिचालन के सिद्धांतों, नियमों और प्रक्रियाओं के निर्धारण में महत्वपूर्ण रहने वाली है। ब्रिक्स देशों के सकल घरेलू उत्पाद में चीन का अंश लगभग 70 प्रतिशत है। उसकी यह शक्ति भविष्य में नई संस्थाओं में असंतुलन का कारण बन सकती है। अत: भारत सहित शेष सभी सदस्यों देशों के लिए उचित होगा कि वे सतर्क और सजग होकर काम करें। नई संस्थाओं को किसी देश विदेश की राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति का साधन बनाने से बचना होगा। वैश्विक वित्तीय संसाधनों पर पश्चिमी देशों और अमेरिका के प्रभाव और नियत्रंण से बचने के लिए ही ब्रिक्स विकास बैंक की स्थापनी की गई है। इससे विकासशील देशों की चिर प्रतीक्षित परियोजनाएं साकार हो सकेंगी।

कभी अव्यवहारिक विचार बताए जाने वाले इस ब्रिक्स बैंक की स्थापना इन पांच देशों की पहली प्रमुख उपलब्धि है। विश्व बैंक और आईएमएफ द्वारा संचालित वैश्विक वित्तीय व्यवस्था में अधिक हस्तक्षेप की कोशीश 2009 से ही जारी थी। हाल के दिनों में अमेरिका ने विकासशील देशों की सहायता में जो कृपणता

देश	मुद्रा	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	जनसंख्या (करोड़)	शिक्षा पर व्यय (जीडीपी का %)	स्वास्थ्य पर (जीडीपी का %)	कृषि भूमि व्यय हेक्टेयर	आर्थिक शक्ति मिलियन
ब्राजील	रीयल	8515	29.37	4.3	4.8	67	औद्योगिक कच्चा माल
रूस	रूबल	17098	14.32	4.1	3.7	121.4	तेल एवं प्राकृतिक गैस
भारत	रुपया	3287	121	3.8	1.3	156	सेवाक्षेत्र
चीन	युआन	9600	135	3.9	6.0	122	विनिर्माण
दक्षिण अफ्रीका	रेंड	1221	6.8	6.8	4.0	उपलब्ध नहीं	कृषि एवं खनन

*(**स्रोतः** संयुक्त सांख्यिकी प्रकाशन, ब्रिक्स 2103)*

दिखाई है, उससे अनेक छोटे-बड़े देशों की विकास गतिविधियों में एक ठहराव सा आ गया है। इसीलिए मेजवान राष्ट्रपति डिल्मा रूसेफ ने कहा कि यह समय की पुकार है कि आईएमएफ में सुधार होने चाहिए।

इस नए विकास बैंक की स्थापना से ब्रिक्स देशों के बढ़ते प्रभाव का भी पता चलता है। इन 5 देशों में न केवल विश्व की लगभग आधी जनसंख्या निवास करती है, बल्कि वैश्विक उत्पादन का पांचवां हिस्सा भी इन्हीं पांच देशों से प्राप्त होता है। इस शिखर सम्मेलन में सदस्य देशों के नेतृत्व को देश विदेश में राजनीतिक रूप से भी लाभ पहुंचने की आशा है। फोटिलेजा में जारी घोषणा पत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि ब्रिक्स बैंक का संचालन 'एक देश एक वोट' के प्रादर्श पर होगा। यह आशंका कि यह बैंक चीन के एक बैंक के रूप में काम करेगा, निराधार है। बैंक के गठन को लेकर वार्ता में भाग लेने वाले एक भारतीय राजनयिक के अनुसार बैंक का प्रथम अध्यक्ष भारत का होने से एक बड़ा लाभ यह होगा कि बैंक की नीतियों के निर्माण में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण रहने वाली है। यह सोचकर आनंद मिश्रित विस्मय होता है कि शंघाई स्थित किसी अंतरराष्ट्रीय बैंक का अध्यक्ष भारत का होगा। यह कदम बहुत निर्णायक सिद्ध हो सकता है। भारत, चीन तथा तीन अन्य उभरते राष्ट्र वित्तीय वैश्विक व्यवस्था के लिए इतनी घनिष्ठता से काम कर रहें हैं कि दुनिया के अन्य देशों को भी हैरानी हो रही है। वे इसे बड़ी रुचि के साथ देख रहें हैं। ब्रिक्स विकास बैंक से आशा की जाती है कि उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के वैकासिक सपनों को साकार करने में वह अन्य विकास बैंकों के साथ मिलकर काम करेगा और ढांचागत विकास के वित्तपोषण की समस्याओं को दूर करेगा। ❑

ॐ सांई राम

मैथिली साहित्य

By Dr. Shekar Jha

(Guiding hand of 95% Success in मैथिली Since 2006)

Our Success in IAS-2013

Manthan & Maithili with Shekhar Jha Cracked Again

Highest Marks 278

Average Marks 200+

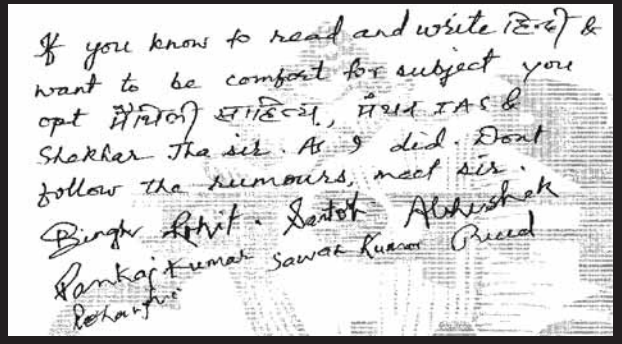

Foundation Batch 15th July, 12th August.

Mains Oriented Batch 27th Aug., 4th Sept.

Batch Both in Old Rajendra Nagar & Mukherjee Nagar

मंथन™ IAS ACADEMY

Head Office : 204, IIIrd Floor, A 40-41, Ansal Building, Comm. Comp. Above HDFC BANK, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09

Branch : With - Passion IAS INST. Shop No.-5, Basement, Near Syndicate Bank, Old Rajendra Nagar

9968548859, 8527333213, 8527345701

YH - 120/2014

माइक्रोफाइनेंस के जरिए जनजीवन बेहतर बनाने का प्रयास

अरुण श्रीवास्तव

बजट में 5 लाख भूमिहीन किसान संयुक्त परिवारों को नाबार्ड के जरिए भी ऋण मुहैया कराने का इंतजाम किया है। इसी के साथ बैंकों को कहा गया है कि किसानों को इस वित्तीय वर्ष में 8 लाख करोड़ रुपये का ऋण मुहैया कराएं। बैंकों द्वारा किसानों को दिए जाने वाले माइक्रो ऋण से उन्हें फसल को तैयार करने में काफी मदद मिलती रही है। इसके साथ फसल के लिए प्राप्त ऋण में ब्याज छूट की यूपीए सरकार की योजना को भी आगे बढ़ा दिया गया है। हालांकि इस ब्याज छूट योजना से बैंकों को तो काफी घाटा उठाना पड़ता है परंतु किसान, वो भी ईमानदार किसान इस योजना से काफी राहत पाता है

वित्तमंत्री द्वारा लोकसभा में दस जुलाई को अपना बजट भाषण समाप्त करने के बाद वेदांता रिर्सोस के कार्यकारी चेयरमैन ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि बजट 2014 सकारात्मक इरादे को दिखाता है तथा इसमें सभी के लिए कुछ जरूर है। अग्रवाल की यह टिप्पणी नयी सरकार के पहले बजट को कम शब्दों में और एक दम सटीक रूप से बयान करती है। वित्त मंत्री अपने पहले बजट में लगभग हर सेक्टर, हर प्रदेश और समाज के हर वर्ग के लिए कुछ न कुछ राहत या तोहफा लेकर आए हैं। नरेंद्र मोदी की अगुवाई में पिछले लगभग डेढ़ साल से चलाए गए चुनाव अभियान और चुनावी रैलियों में किए गए वादों को आंशिक रूप से पूरा करने का प्रयास इस बजट में किया गया। समाज के हर तबके को कमाई के विकल्प उपलब्ध कराए गए। वरिष्ठ नागरिकों और मध्यवर्ग को आयकर से राहत दी गई तो युवा बेरोजगारों, समाज के पिछड़े पायदान पर स्थित तबकों और महिलाओं को आय के साधन मुहैया कराने की घोषणाएं की गई।

साथ-साथ इन तबकों के लिए नई बचत की योजनाएं भी बजट में लाई गई। इन योजनाओं में सबसे महत्वपूर्ण योजना 15 अगस्त को प्रारंभ होगी जब देश के हर घर को वित्तीय समावेश मिशन के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं की जद में लाया जाएगा। मुख्य रूप से महिलाओं, सीमांत किसानों और मजदूरों सहित समाज के दूसरे कमजोर तबकों पर केंद्रित इस योजना के तहत हर घर में दो बैंक खाते खोले जाएंगे। योजना का मुख्य आकर्षण है कि ये दोनों बैंक खाते ऋण सुविधा प्राप्त करने के हकदार रहेंगे।

इस मौके पर किसान विकास पत्र का उल्लेख करना भी उचित होगा। यह योजना हालांकि बैंकिंग सुविधाओं से विहीन तबके को बचत का एक बेहतरीन विकल्प मुहैया कराती रही है परंतु साथ ही यह विवादों में भी घिरी रही थी। पिछली सरकार ने इस योजना को बंद कर दिया था। योजना पर आरोप लग रहा था कि धनाढ्य लोग इस योजना के जरिए काले धन को वैधानिक जामा पहना रहे हैं। अब एक बार यह योजना फिर से सामने आई है तो देखना होगा कि सरकार कैसे पिछले आरोप से बच कर इसे आगे बढ़ाती है।

कल्याणकारी राज्य की अपनी नींव के अनुरूप देश की पिछली सभी सरकारें समाज के सबसे निचले पायदान पर समझे जाने वाले अनुसूचित जाति के लोगों के लिए हमेशा नई योजनाएं बनाती रही हैं। इस बार इस वर्ग के युवा उद्यमियों को नया उद्यम प्रारंभ करने के लिए सरकार एक नई योजना सामने लाई है। वित्तमंत्री ने कहा कि अनुसूचित जाति के युवाओं को नए उद्यम को शुरू करने के लिए ऋण सुविधा प्रदान करने के लिए 200 करोड़ रुपये आवंटित किए जाएंगे। यह राशि आईएफसीआई की योजना के जरिए कार्यान्वित होगी।

व्यापार प्रारंभ करने के लिए पूंजी का इंतजाम करना वास्तव में बहुत कठिन कार्य है। खासकर समाज के उस वर्ग के लिए जिसके पास पूंजी प्राप्त करने के एवज में बैंकों के पास रेहन रखने के लिए कुछ या बहुत अल्प

लेखक समाचार पोर्टल www.delhivarta.com के संपादक हैं तथा आर्थिक विषयों के जानकार हैं। वह कई वर्षों से आर्थिक विषयों पर रिपोर्टिंग करते रहे हैं। ईमेलः 35aroon@gmail.com

संपत्ति होती है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कागजों की खानापूर्ति इतनी होती है कि उसे पूरा करते करते उद्यमी टूट जाता है और निजी बैंकों के नियम समाज के इस वर्ग के सदस्यों के लिए काफी कड़े होते हैं। ऐसे में केंद्र सरकार की यह पहल अनुसूचित जाति के युवा उद्यमियों को काफी राहत प्रदान करेगी।

ग्रामीणों की गरीबी समाप्त करने के लिए जीवनयापन के विकल्प उपलब्ध कराने वाली योजना आजीविका को सरकार ने आगे बढ़ाया है। महिला स्वयं सहायता समूहों को 4 प्रतिशत की सस्ती दर पर लोन उपलब्ध कराने वाली इस योजना को 100 नए जिलों में विस्तारित कर दिया गया है। अभी यह योजना 150 जिलों में चल रही है। गांव के युवाओं को स्थानीय स्तर पर उद्यम प्रारंभ करने के लिए 'ग्रामीण उद्यमिता शुरुआत कार्यक्रम' के लिए वित्त मंत्री ने 100 करोड़ रुपये का आवंटन करने का प्रस्ताव भी संसद के समक्ष रखा है।

अनुसूचित जाति के युवाओं को उद्यम में लगाने के लिए शुरू की गई योजना की तरह इस योजना का लाभ भी ग्रामीण युवा उद्यमियों को मिलेगा। इससे न केवल स्थानीय युवाओं और कामगारों को रोजगार मिलेगा बल्कि क्षेत्र का आर्थिक विकास भी होगा। यहां यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि महिला स्वंय सहायता समूहों ने पिछले सालों में दिखाया है कि किस प्रकार बैंकों की आर्थिक मदद के जरिए उन्होंने न केवल अपने समूह के सदस्यों के जीवन को बेहतर बनाया है बल्कि अपने परिवारों और क्षेत्र का भी विकास किया है।

ग्रामीणों को अपना मकान बनाने के लिए लोन देने वाले 'रूरल हॉऊसिंग फंड' की भूमिका को भी इस वित्त वर्ष में बढ़ा दिया गया है। वित्तमंत्री ने नेशनल हाउसिंग बैंक को 8000 करोड़ रुपये देने का प्रस्ताव किया है जो रूरल हाउसिंग फंड को धनराशि उपलब्ध कराएगा। हालांकि ग्रामीणों को फंड मुहैया कराने वाले इस हाउसिंग फंड पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहे हैं परंतु फिर भी इसने ग्रामीणों को उनका आशियाना बनवाने में काफी मदद की है। अगर केंद्र सरकार इस फंड की निगरानी व्यवस्था को दुरुस्त कर सकी तो यह ग्रामीण क्षेत्र में आवास निर्माण का एक अच्छा विकल्प बन सकता है।

भाजपा के घोषणा पत्र में किए गए 'सभी को घर' के वादे को पूरा करने के लिए बजट में नेशनल हाउसिंग बैंका को आवास ऋण उपलब्ध कराने के लिए 4000 हजार करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। यह ऋण शहरी गरीबों, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा निम्न आय वर्ग के लोगों को आवास बनाने के लिए दिया जाएगा। सरकार ने आवास सेक्टर में प्रत्यक्ष विदेश निवेश को आने के लिए भी रास्ता आसान किया है। इससे भी इस सेक्टर में काम कर रही ऋण प्रदान करने वाली संस्थाओं (एनबीएफसी) को फंड मिलने में आसानी होगी जिसे बाद में वो माइक्रोफाइनेंस के जरिए जरूरतमंदों को वितरित कर पाएंगी।

बजट में 5 लाख भूमिहीन किसान संयुक्त परिवारों को नाबार्ड के जरिए भी ऋण मुहैया कराने का इंतजाम किया है। इसी के साथ बैकों को कहा गया है कि किसानों को इस वित्तीय वर्ष में 8 लाख करोड़ रुपये का ऋण मुहैया कराएं। बैंकों द्वारा किसानों को दिए जाने वाले माइक्रो लोन से उन्हें फसल को तैयार करने में काफी मदद मिलती रही है। पर सरकार को यहां थोड़ी सावधानी भी जरूर दिखानी होगी। बैंक के लोनिंग विभाग में बढ़ता भ्रष्टाचार किसानों के लिए कहीं न कहीं कष्ट का कारण भी बनता है।

इसके साथ फसल के लिए प्राप्त लोन में ब्याज छूट की यूपीए सरकार की योजना को भी आगे बढ़ा दिया गया है। हालांकि इस ब्याज छूट योजना से बैंकों को तो काफी घाटा उठाना पड़ता है परंतु किसान, वो भी ईमानदार किसान इस योजना से काफी राहत पाता है।

वित्तमंत्री ने लंबी अवधि के कृषि ऋण फंड की स्थापना का प्रस्ताव करते हुए उसके लिए 5000 करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं। नाबार्ड के तहत काम करने वाले इस फंड के जरिए किसानों को संपत्ति के निर्माण तथा संबंद्ध क्षेत्र के कार्यों को पूरा करने में काफी मदद मिलने की उम्मीद है।

वित्तीय वर्ष 2008-09 में छोटी अवधि वाली सहकारी ग्रामीण ऋण योजना की शुरुआत की गई थी। यह योजना किसानों के लिए काफी मददगार थी क्योंकि वो छोटी अवधि के लोन कम ब्याज दर से सहकारी बैकों की इस योजना से पा लेते थे। जबकि इस तरह के ऋण नाबार्ड से प्राप्त करने पर उन्हें ब्याज में ज्यादा धन खर्च करना पड़ता था। वित्तमंत्री ने इस फंड के लिए 50,000 करोड़ रुपये आवंटित करने का प्रस्ताव किया है। सरकार ने एमएसएमई सेक्टर के लिए 10,000 हजार करोड़ रुपये के फंड को स्थापित करने का प्रस्ताव किया है जो उद्यमिता को बढ़ावा देने के साथ नई कंपनियों को बढ़ावा देगा।

बजट में लोगों के जीवन को चलाने, उनके स्तर को बनाए रखने तथा उसे ऊंचा उठाने के लिए ऋण मुहैया कराने के प्रावधान निश्चय ही प्रशंसनीय हैं पर काम इतने से बनने वाला नहीं है। अक्सर देखा गया है कि लोग जब तक ऋण प्राप्त नहीं कर पाते हैं तब तक सबसे ईमानदार व्यक्ति बनने का दिखावा करते हैं पर लोन प्राप्त करते ही उसे डकार जाने का हर संभव प्रयास करते हैं। इससे बैंक और उसके जरिए सरकार को नुकसान उठाना पड़ता है जो अंत में आम जनता की ही जेब से वसूला जाता है। सरकार को इस अप्रिय स्थिति से बचने के लिए कुछ दूसरे उपाय भी करने पड़ेंगे।

कुछ उपाय जो कर्ज हड़पने को रोकेंगे

सरकार को आधार तथा राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) के बीच तालमेल तय करना होगा। देश के हर व्यक्ति की बायोमेट्रिक पहचान को जल्दी से जल्दी दर्ज कराना होगा। वित्तीय सेवाओं के लिए यह आवश्यक है। ऐसा होने से लोन लेकर गायब हो जाने वाले दोषियों को ढूढ़ने में सहायता मिलेगी जो डिफाल्टरों के भीतर लोन लेकर गायब न होने का खौफ भी पैदा करेगी।

सरकार को क्रेडिट ब्यूरो सिस्टम को भी पूरे देश मे विस्तारित करना होगा। यह तय किया जाए कि कि किसी भी लोन लेने वाले व्यक्ति (एनबीएफसी या बैंक या फिर स्वयं सहायता समूह से लोन लेने वाले) का ब्योरा क्रेडिट ब्यूरो सिस्टम में दर्ज कराया जाए। ब्यूरो को निरंतर चलने वाली सेवाओं जैसे कि मोबाइल बिल से भी जोड़ा जाए ताकि कोई भी व्यक्ति कही से भी लोन पचाने के बाद दूसरी जगह से लोन न प्राप्त कर पाए।

बाढ़ या दूसरी प्राकृतिक आपदाओं को छोड़ कर राजनीतिक पार्टियों पर लोन से मुक्ति योजना जारी करने पर प्रतिबंध लगाया जाए। कई बार संभव है कि लोन से छूट पाने के वैध कारण उपलब्ध हों पर उसका निर्णय निश्चय ही राजनेताओं द्वारा न किया जाए बल्कि सक्षम बैंक अधिकारियों द्वारा ही किया जाए। ❑

बजट की प्रक्रिया: तैयारी से प्रस्तुति तक

देवेन्द्र उपाध्याय

बजट को अंतिम रूप देने से पहले वित्त मंत्री विभिन्न वर्गों के संगठनों, ट्रेड यूनियनों और अन्य लोगों से भी बातचीत करते हैं। बजट पूर्व बातचीत में सभी अपनी-अपनी समस्याओं के निराकरण तथा करों में कटौती आदि के बारे में वित्त मंत्री को ज्ञापन देते हैं। इन तमाम प्रक्रियाओं के बाद वित्त मंत्रालय का बजट डिवीजन सभी दस्तावेजों, आंकड़ों के साथ तादात्मय बनाकर अंतिम बजट दस्तावेज तैयार करता है।

केंद्रीय बजट, जिसे आम बजट कहा जाता है, हर वर्ष संसद के बजट सत्र के दौरान 28 फरवरी को लोकसभा में प्रस्तुत किया जाता है। पहले 28 फरवरी को हर वर्ष शाम 5 बजे बजट प्रस्तुत करने की परंपरा थी लेकिन वर्ष 1999 से यह परंपरा खत्म कर 28 फरवरी को प्रात: 11 बजे आम बजट प्रस्तुत करने की परंपरा शुरु की गई।

जब नई लोकसभा का गठन होता है, तो इसके गठन के साथ सरकार बजट पेश करती है। चूंकि नई लोकसभा का गठन सामान्यत: जून में होता है इसलिए सरकार अपना पहला बजट जून या जुलाई में प्रस्तुत करती है। इससे पूर्ववती सरकार नई लोकसभा के चुनाव से पहले तीन महीने की अनुदान मांगें पेश करती है ताकि जरूरी सरकारी खर्च और केंद्र सरकार के कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन में कोई रुकावट पैदा न हो।

बजट तैयारी

अगले वित्त वर्ष के लिए लोकसभा में पेश किए जाने वाले केंद्रीय बजट की तैयारी की सामान्य प्रक्रिया अगस्त के अंतिम सप्ताह या सितंबर के पहले सप्ताह से शुरु हो जाती है। वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग में बजट विभाग करीब अगस्त-सितंबर में सभी केंद्रीय मंत्रालयों एवं विभागों को वार्षिक बजट सर्कुलर जारी करता है। उन्हें भेजे जाने वाले प्रपत्र और बजट अनुमान के विवरण तैयार करके भेजने होते हैं।

केंद्र सरकार अगले वित्त वर्ष के लिए बजट अनुमान के साथ उस वित्तीय वर्ष के लिए सशोंधित अनुमान भी पेश करती है। संशोधित अनुमान सरकार को विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों को उसके द्वारा उस वित्तीय वर्ष में आवंटित बजट के अनुसार उसका छ: माह की अवधि में उपयोग करने के आधार पर निधियां पुन:आवंटित करती है। मंत्रालयों को अंततोगत्वा पिछले वित्तीय वर्ष में उसकी वास्तविक प्राप्तियों और व्यय की जानकारी भी देनी होती है। उसके बाद जिस वर्ष बजट पेश होता है उस वर्ष के बजट अनुमान, पिछले वर्ष की वास्तविक प्राप्ति और व्यय तथा अगले वित्तीय वर्ष का बजट पेश किया जाता है।

योजना आयोग की भूमिका

केंद्रीय योजना आयोग से विभिन्न मंत्रालय अगले वित्त वर्ष के लिए योजना व्यय हेतु बजट अनुमान उपलब्ध कराने के बारे में चर्चा करते हैं। उसके बाद ही वे योजना मदों के लिए बजट अनुमान तैयार करते हैं। योजना आयोग को वित्त मंत्रालय पर निर्भर रहना पड़ता है, जो केंद्रीय बजट तैयार करती है। इसके लिए उसे वित्त मंत्रालय द्वारा अगले वर्ष के लिए वार्षिक योजना हेतु कुल बजटीय समर्थन के आकार पर निर्भर रहना पड़ता है।

अनुमानित प्रवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित

केंद्र सरकार के राजस्व अर्जित करने वाले मंत्रालय चालू वित्त वर्ष के लिए (संशोधित अनुमान) और अगले वित्त वर्ष के लिए (बजट अनुमान) तैयार कर वित्त मंत्रालय को सौंपते हैं। इसमें वे अपने राजस्व प्राप्ति का अनुमान उपलब्ध कराते हैं। इसके साथ ही सामान्यत: बजट प्रस्तुत करने से दो

लेखक वरिष्ठ पत्रकार है। विगत दो दशक की ज्यादा अवधि से संसदीय रिपोर्टिंग कर रहे हैं। ईमेल: devendra.kumar@gmail.com

भारत में बजट का इतिहास

भारत में बजट पेश करने का इतिहास करीब 145 साल पुराना है। पहला भारतीय बजट 18 फरवरी 1869 को जेम्स विल्सन ने पेश किया था। वे इंडियन काउंसिल के वित्त सदस्य थे।

सामान्यत: बजट के प्रावधानों को वित्त मंत्री के अभिभाषण तक गुप्त रखा जाता है। ब्रिटेन में 1947 में बजट के दिन ब्रिटिश चांसलर ऑफ एक्सचेकर हग डाल्टन की एक पत्रकार से संसद जाते समय मुलाकात हुई। उसने करों में परिवर्तन के बारे में किए जाने वाले कुछ विवरणों की अपनी योजना के बारे में पत्रकार को बता दिया। पत्रकार ने संसद में उसके भाषण से पहले ही खबर लीक कर दी। डाल्टन को इस्तीफा देना पड़ा।

सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली (केंद्रीय विधानसभा) के अंतिम अध्यक्ष आर.के. षणमुगम चेट्टी संविधान सभा के भी सदस्य रहे। वह 15 अगस्त 1947 से 17 अगस्त 1947 तक स्वतंत्र भारत के पहले वित्त मंत्री रहे। उन्होने 26 नवम्बर 1947 को संसद में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया।

षणमुगम चेट्टी के बाद 1949-50 में जॉन मथाई केंद्रीय वित्त मंत्री बने। उन्होने मुद्रास्फीति और आर्थिक नीतियों पर एक अन्य भाषण दिया और कहा कि बजट के सभी फैसलों को वे नहीं पढ़ रहे हैं बल्कि सभी विवरणों समेत एक श्वेतपत्र सदस्यों को वितरित किया जा रहा है। वास्तव में जान मथाई का बजट ही संयुक्त भारत का पहला बजट था जिसमें पूर्व रियायतों के लिए वित्तीय विवरण भी शामिल किए गए थे। सबसे बड़ी खबर थी योजना आयोग गठित करने और पंचवर्षीय योजना की शुरुआत करने के बारे में।

उसके बाद वित्त मंत्री सीडी देशमुख के सामने योजना व्यय के लिए धन की समस्या उठ खड़ी हुई। जिसके निराकरण के लिए कर का विस्तृत प्रावधान ही प्रमुख रास्ता था। 1957 में संपत्ति कर और व्यय कर के रूप में बजट में करों के उल्लेख की शुरुआत हुई।

वित्त मंत्री मोरारजी देसाई ने भी 1968 में कड़ाई से कर लगाने की जरूरत महसूस की। मोरारजी देसाई देश के पहले वित्त मंत्री थे जिन्होंने वित्त मंत्री के रूप में प्रचार पाने के भरपूर अवसर जुटाए। वे पहले वित्त मंत्री थे जिन्होंने प्रधानमंत्री पद की दावेदारी गंभीरता से की।

सबसे दिलचस्प बजट भाषण अंश वित्त मंत्री मधु दंडवते का 1990 में रहा, जिसमें उन्होने अचार पर से एक्साइज ड्यूटी हटाने का प्रस्ताव करते हुए कहा था कि उन्हें विश्वास है कि उनके बजट में कुछ सुगंध और मसाले का मिश्रण होगा।

महीने पहले (जनवरी) से अनुमानित प्राप्तियों को अंतिम रूप देने देने पर ध्यान केंद्रित किया जाने लगता है। इसमें अगले वित्त वर्ष के व्यय अनुमान के साथ उसके लिए संसाधनों की आवश्यकताओं के अनुमान का आकलन भी किया जाता है।

अंतिम चरण में वित्त मंत्री अपने मंत्रालय द्वारा तैयार बजट प्रस्तावों पर विचार कर जरूरत हो तो, उसमें परिवर्तन करते हैं। उसके बाद वित्त मंत्री आम बजट के बारे में प्रधानमंत्री से विचार-विमर्श करते हैं। अंतिम चरण में बजट को अंतिम रूप देने के साथ कैबिनेट को उसकी जानकारी दी जाती है। अगर बजट को लेकर किसी तरह का कोई विवाद हो जाए तो उसका निराकरण करने के लिए मामला कैबिनेट में रखा जाता है।

बजट को अंतिम रूप देने से पहले वित्त मंत्री विभिन्न वर्गों के संगठनों, ट्रेड यूनियनों और अन्य पक्षों से भी बातचीत करते हैं। बजट पूर्व बातचीत में सभी अपनी-अपनी समस्याओं के निराकरण तथा करों में कटौती आदि के बारे में वित्त मंत्री को ज्ञापन देते हैं।

इन तमाम प्रक्रियाओं के बाद वित्त मंत्रालय का बजट डिवीजन सभी दस्तावेजों, आंकड़ों के साथ तादात्मय बनाकर अंतिम बजट दस्तावेज तैयार करता है। राष्ट्रीय सूचना केंद्र (एनआईसी) बजट दस्तावेज के लिए अंतिम बजट आंकड़े तैयार करने में बजट डिवीजन को सहयोग देता है। इन सबके बाद वित्त मंत्री संसद में केंद्रीय बजट प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रपति की अनुमति लेते हैं।

अंतिम चरण में वित्त मंत्री अपने मंत्रालय द्वारा तैयार बजट प्रस्तावों पर विचार कर जरूरत हो तो, उसमें परिवर्तन करते हैं। उसके बाद वित्त मंत्री आम बजट के बारे में प्रधानमंत्री से विचार-विमर्श करते हैं। अंतिम चरण में बजट को अंतिम रूप देने के साथ कैबिनेट को उसकी जानकारी दी जाती है। अगर बजट को लेकर किसी तरह का कोई विवाद हो जाए तो उसका निराकरण करने के लिए मामला कैबिनेट में रखा जाता है।

संविधान के अनुसार राष्ट्रपति के निर्देश पर निर्धारित तिथि को केंद्रीय बजट संसद में पेश किया जाता है। स्थापित परंपरा के अनुसार हर वर्ष वित्त मंत्री फरवरी माह के अंतिम कार्य दिवस पर लोकसभा में केंद्रीय बजट पेश करते हैं। प्रचलित परंपरा के अनुसार वित्त मंत्री लोकसभा में बजट सदन पटल पर रखते हुए अपना बजट अभिभाषण देते हैं। राज्यसभा में सदन पटल पर मंत्री द्वारा बजट रखा जाता है।

जिस दिन लोकसभा में बजट पेश किया जाता है उस दिन और कोई कार्रवाई लोकसभा में नहीं होती। लोकसभा में वित्त मंत्री दोपहर 11 बजे बजट अभिभाषण देते हैं और दोपहर करीब डेढ बजे राज्यसभा में बजट सदन पटल पर रखा जाता है।

बजट पारित करने की प्रक्रिया

संसद के दोनों सदनों, लोकसभा और राज्यसभा, में बजट पर चर्चा होती है। विभिन्न मंत्रालयों की अनुदान मांगों पर संबंधित स्थायी समितियों में चर्चा होती है लेकिन इस बार चूंकि आम बजट जुलाई में पेश किया गया है इसलिए केंद्रीय बजट पर मंत्रालय के अनुसार विस्तार से चर्चा होने की बजाय उन्हे एक साथ पारित कर दिया जाएगा, जिसे 'गिलैटिन' कहते हैं। ❑

कपास के गोलों को चुनने वाली मशीन

नाथूभाई आर वढेर

गुजरात के कुछ हिस्से में शुष्क भूमि कपास के लिए बहुत अनुकूल है। हालांकि, यहां कपास के इन गोलों की एक अलग किस्म होने के कारण इन्हें सीधे नहीं चुना जा सकता। कपास के बीजों और गोलों को निकालना एक मुश्किल काम है जिसके लिए बहुत मेहनत की जरूरत होती है। गुजरात के सुरेंद्रनगर जिले के इरावाडा के चालीस वर्षीय नाथूभाई ने इसके लिए अपने ट्रेक्टर *पीटीओ* के ज़रिये एक खास युक्ति खोजी है जिसे कपास के गोलों को निकालने वाली चलती फिरती मशीन के रूप में जाना जाता है। यह न केवल कपास को निकालती है बल्कि उन्हें गोलों से भी अलग कर देती है।

नाथूभाई रतुभाई वडेर के परिवार में उनकी मां, पत्नी और दो बच्चे हैं। अपने परिवार के छह बच्चों में सबसे छोटे रहे नाथूभाई को अपने भाई बहनों और माता-पिता से बहुत लाड़-प्यार मिला। बचपन में, मशीनों के काम करने के तरीके को जानने की ललक में उन्होंने कई मशीनों को बिगाड़ा। मशीनों के प्रति इस लगाव और गहन समझ ने ही उन्हें कपास के गोलों को निकालने वाली मशीन का आविष्कार करने के काबिल बनाया।

देश के अन्य भागों की तरह नरोदा राजपूत समुदाय में भी बाल-विवाह का प्रचलन है जिसके चलते नाथूभाई की शादी भी तेरह साल की कम उम्र में पुष्पाबेन के साथ कर दी गई। शादी के एक साल बाद उन्हें मेहसाना जिले के काडी के बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया गया जहां अब उनका बेटा धर्मेंद्र पढ़ रहा है। इस दौरान उनके बड़े भाइयों को सरकारी नौकरी मिल गई और वे गांव छोड़ बाहर जाकर बस गए। उनके सबसे बड़े भाई अहमदाबाद में ठेकेदार हैं और अपना व्यवसाय करते हैं जबकि छोटे भाई दसडा में एक स्कूल में शिक्षक हैं। उनके बाहर बस जाने के बाद, उनके पिता के लिए अकेले खेती करना मुश्किल हो गया। फिर उन्होंने नाथूभाई को अपने साथ काम करने को कहा। ऐसे में एक आज्ञाकारी बेटे ने अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़ अपने पिता के इस आग्रह को स्वीकार लिया। नाथूभाई और उनके पिता का मानना है कि शिक्षा का मतलब केवल एक नौकरी पाना नहीं बल्कि यह व्यक्ति के मूल्य संवर्धन के लिए है। नाथूभाई के पिता रतुभाई का गांव में बहुत सम्मान है उनके पास 150 एकड़ से भी अधिक भूमि है।

नाथूभाई का कहना है कि उनकी घनिष्ठता की वजह से ही मजदूर उनके प्रति ईमानदार हैं और कुछ ने तो जीवनभर उनके साथ काम किया। उनके लिए, खेती करना नौकरी करने से ज्यादा फायदेमंद है इसलिए यह दूसरा कारण है कि उन्होंने खेती को अपना जीवन यापन का ज़रिया बनाया।

उनके पिता के गुजर जाने के बाद उनकी पुश्तैनी जमीन का भाईयों के बीच बंटवारा कर दिया गया जिसमें नाथूराम के हिस्से में 60 एकड़ जमीन आई।

कपास के गोलों को चुनने वाली मशीन की उत्पत्ति

मध्य गुजरात के सुरेंद्रनगर, अहमदाबाद, और राधनपुर जिलों में कपास की खेती मुख्य फसलों में से एक है। इस क्षेत्र में पानी की कमी और अन्य भोगौलिक लक्षणों के चलते स्थानीय कपास की किस्म का नाम कल्याण-वी-797 रखा गया है जिसे शंकर भी कहा जाता है जो इस पटट्री में बड़े स्तर पर उगता है।

नाथूभाई के गांव, इरवाडा में भी यही

संरचना मौजूद है। इसकी खेती वर्षा आधारित होने के साथ-साथ तैयार होने में नौ से दस महीने का समय लेती है। मानसून के दौरान बीजों को रोपा जाता है तथा मार्च से अप्रैल महीने के बीच इसकी कटाई की जाती है।

एक बार जब फसल पक जाती है तो खेतों से कपास चुनने के लिए मजदूरों को लगाया जाता है। खेतों से कपास चुनना एक कड़ी मेहनत का काम है जिसमें अक्सर मजदूरों के साथ-साथ किसान और उनके परिवार के लोग इकट्ठे होकर इस काम में जुट जाते हैं। इस पूरे क्षेत्र में कटाई का मौसम एक ही समय पर आता है जिससे इस दौरान मजदूरों की भी मांग बढ़ जाती है। गांव में मजदूर मिलना मुश्किल हो जाता है।

इस स्थिति को देखते हुए मजदूर ज्यादा मेहनताने की मांग करना शुरू कर देते हैं और कम समय के लिए काम करने से भी मना कर देते हैं। आजकल, इस क्षेत्र में उद्यमों को स्थापित किया जा रहा है जिससे मजदूरों को खेतों से कपास चुनने की बजाए बेहतर मेहनताने के साथ काम पर रखा जाता है। किसानों के पास अधिकतर छोटे तथा मध्यम आकार की भूमि है ऐसे में उनके पास मजदूरों को बाहर से लाने या उन्हें देने के लिए ज्यादा धन नहीं होता और उन्हें किसी न किसी तरीके से कपास को निकालना होता है। क्योंकि साल में केवल यही एक समय ऐसा आता है जब किसानों की कुछ कमाई होती है।

कपास चुने जाने के मौसम में अच्छे तथा समर्पित मजदूरों की बड़ी टीम होने के बावजूद उन्होंने मजदूरों की कमी पर गौर किया। एक बार अपना काम करते हुए, इस काम को करने के लिए एक मशीन बनाने का विचार उनके मन में आया।

नाथूभाई कहते हैं कि मैं अपने पिता और गांव के लोगों की इस परेशानी को नहीं देख सकता था। कपास का बहुत बड़ा भाग बर्बाद चला जाता था। नाथूभाई जिस दौरान मशीन के प्रारूप पर चिंतन-मनन कर रहे थे, एक दुर्घटना में उनकी पत्नी का देहांत हो गया। इससे उन्हें गहरा आघात पहुंचा।

इस बीच, नाथूभाई ने पास के गांव के मुकेश पटेल (पूर्व में जीआईएएन द्वारा हनी बी नेटवर्क से सहायता प्राप्त) द्वारा निर्मित कपास निकालने वाली स्वचालित मशीन-चेतक के बारे में सुना जिसने कपास उद्योग में क्रांति ला दी। मुकेश की कामयाबी से नाथूभाई को भी विश्वास हो गया कि उनकी मशीन भी एक दिन फलियों पर अपनी पकड़ बनाएगी। वे याद करते हुए कहते हैं, ''मेरा विश्वास दृढ़ थाई गयो कि म्हारी मशीन काला बिन्स'' (इसने मेरा विश्वास दृढ़ किया कि मेरी मशीन भी कपास के गोलों को चुन सकती है।)। जब साल दर साल वह अपनी जमा पूंजी इस मशीन के प्रारूप पर लगाते रहे और इसका कोई अच्छा परिणाम दिखाई नहीं दे रहा था नाथूभाई ने इसके शोध पर 10-12 लाख रुपये खर्च कर दिए जिसके कारण वह अपने परिवार की ज़रूरतों पर भी ध्यान नहीं दे पा रहे थे। जब उनका पहला मॉडल सफल नहीं हुआ तो उनकी पत्नी ने इस पर एतराज जताते हुए आगे इस पर और पैसा न लगाने की सलाह दी। वह चाहती थी कि नाथूराम यह सब छोड़ अपने बच्चों की शिक्षा ओर भविष्य के बारे में सोचे।

नाथूराम बताते हैं, ''कभी-कभी मैं अपने घर से कहकर चलता था कि मैं किराने की दुकान पर तेल खरीदने जा रहा हूं। जबकि मैं इसकी जगह अपनी मशीन के लिए कोई आयरन पार्ट ले आता। लेकिन यह बस इतना ही नहीं था। वह दस लाख से भी अधिक का निवेश कर चुके थे और इसकी भी कोई गारंटी नहीं थी कि वह सफल ही होंगे। अपने परिवार की ओर से की जा रही आलोचनाओं के चलते उन्होंने लगभग तीन साल के लिए अपनी इस मशीन पर काम करना बंद कर दिया। साल 2004 में, *सृष्टि* ने उन्हें इस प्रयास के लिए फंड देने का निश्चय किया जिससे नाथूराम को फिर से एक बल मिला। एनआईएफ/जीआईएएन ने इस अनुदान को बढ़ाकर डेढ़ लाख रुपये कर दिया। इसके चलते उन्होंने अपनी मशीन को उन्नत बनाया।

नाथूराम के पास मशीन का प्रारूप तैयार करने का कोई तकनीकी ज्ञान नहीं था। यद्यपि, उनके अंदर कार्य करने और उससे सीखने के प्रति दृढ़ विश्वास था। नाथूभाई ने बताया, ''मैं इस बात में विश्वास रखता था यदि कोई समर्पण से किसी कार्य को करने की इच्छा रखता है तो वह स्वत: ही इसके रास्ते खोज लेता है। मैं घंटों खेत में बैठकर इस पर विचार करता कि कौनसा बल कपास के गोलों को पौधे से अलग कर सकता है। बाद में, जब एक युक्ति मेरे दिमाग में स्पष्ट हुई तब मैंने इसका खाका खींचा। मैं कुछ कटाई और खुदाई के उपकरण आदि लाया और इसके प्रारूप पर काम करना शुरू कर दिया।''

खेतों में काम करते हुए उन्होंने महसूस किया कि पौधे से कपास के गोलों को गिराने के लिए झनझनाहट की आवश्यकता है। अपनी इस परिकल्पना को परखने के लिए उन्होंने पेड़ को अलग-अलग तरीकों से हिलाने की कोशिश की और अंतत: परिणाम निकला कि छड़ियों के समूह से शायद उद्देश्य सफल हो जाए। धीरे-धीरे, उन्होंने मशीन तैयार करने के लिए जरूरी उपकरणों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया और अपनी एक निजी वर्कशॉप खोल ली।

अधिकतर उपकरण उन्होंने अपनी ही वर्कशॉप में बनाए। उन्होंने बताया, ''हालांकि, मेरी वर्कशॉप में सभी प्रकार के उपकरण नहीं थे, कुछ विशेष उपकरण मैंने जीआईडीसी क्लस्टर में गढ़े। मैंने वहां के काम करने वालों को प्रशिक्षित किया और उन्हें अपनी ज़रूरतों के बारे में बताया।

नाथूभाई ने अपनी सहायता के लिए ठेके पर एक सहायक भी रख लिया जिसे वह आवश्यकता होने पर कभी भी बुला लेते थे। नाथूभाई कहते हैं, ''यह अच्छा होता है आप अपने साथ किसी को रखें। मैं जब कहीं अटकता तब मैं उसके साथ अपनी समस्या पर चर्चा कर सकता हूं। उन्हें अपने दोस्त यशीन भाई से भी सुझाव और मदद मिली। इन सब में अपनी मशीन को चलाने में उन्हें दो साल लगे।

कपास के गोलों को चुनने वाली मशीन

कपास के गोलों को चुनने वाली यह मशीन एक बड़े चेम्बर के आकार में स्वंय धकेले जाने वाली मशीन है जो कपास के गोलों को पौधों से अलग करती है। इसे देश में उगने वाले विभिन्न किस्मों के कपास जो एक समय पर नहीं पकते, के अनुकूल विकसित किया गया था। यह खर्च के मामले में भी उपयुक्त है।

यह ट्रेक्टर पर लगी मशीन ट्रेक्टर पीटीओ के माध्यम से चलती है और इसे भूमि की उंचाई के स्तर के अनुरूप हाइड्रोलिक प्रणाली के द्वारा ऊपर या नीचे किया जा सकता है। इसे आसानी से ट्रेक्टर से जोड़कर खेत तक ले जाया जा सकता है। इसके वाइब्रेटर, कन्वेयर ट्रे, सक्शन पंप और स्टोरेज कैबिन नाम के

चार भाग हैं। हर समय घूमती रहने वाली वाइब्रेटर डिस्क, पोधे को एक तेज झटका देती है जिससे कपास के गोले कन्वेयर पर गिर जाते हैं वह इन्हें इकट्ठा कर इन्हें फिर मशीन में पिछले हिस्से में फेंक देता है जहां सक्शन पंप इन्हें खींचकर स्टोरेज बॉक्स में इकट्ठा कर देता है।

ट्रेक्टर जब आगे की ओर चलता है तब कपास के पौधे बीच में आते जाते हैं और इन गोलों को उठाने वाली यूनिट की ओर बढ़ते जाते हैं। कपास के गोले एक झुके हुए शाफ्ट पर लगे घूमने वाले तारक पहियों (प्रत्येक शाफ्ट में तीन या चार) द्वारा चुगे जाते हैं।

चुगने वाले मशीन के नीचे दोनों ओर रबड़ की एक घूमने वाली पट्टी होती है जो सक्शन पाइप से गोलों को अपने पास रखती है। इसके अतरिक्त, सक्शन पाइप के माध्यम से एस्पिरेटर भी कपास के गोलों को खींचतें हैं।

मशीन को एक बीघा भूमि पर चलाने के लिए एक लीटर डीजल या ईंधन की आवश्यकता होती है। कार्य के उद्देश्य से मशीन को अन्य किसी प्रकार की शक्ति की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह ट्रेक्टर के साथ जोड़ी जा सकती है।

नाथूभाई कहते हैं कि ट्रेक्टर को सामान्यत: 10 हॉर्स पावर की जरूरत होती है वहीं इस मशीन को साथ जोड़ने पर और 5 हॉर्स पावर की जरूरत होती है जिसे ईंधन के माध्यम से आसानी से व्यवस्थित किया जा सकता है।

इस मशीन की कार्यप्रणाली की जांच कृषि एंव खाद्य विभाग, आईआईटी खड़गपुर द्वारा की गई है वहीं, सिफारिशों पर अभी जांच जारी है। पूर्व में, आर्ट सर्च से पता चलता है कि नाथूराम द्वारा बनाई गई कपास के गोलों को पकड़ने वाली यह मशीन बाजार में उपलध मशीनों से अलग नियम पर आधारित है। यह स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल है। इसका पेटेंट एनआईएफ की ओर से नाथूभाई के नाम पर जारी किया गया। इसके वर्तमान मॉडल की कीमत मौजूदा मॉडलों की तुलना में अधिक है।

नाथूभाई कहते हैं कि ट्रेक्टर से जोड़े जाने पर वह इससे एक लीटर डीजल में एक घंटे में तीन बीघे से कपास इकट्ठा कर सकते हैं। डीजल की कीमत केवल 40 रुपये प्रति लीटर है जिसमें 600 किग्रा कपास चुना जा सकता है जबकि एक व्यक्ति एक दिन में केवल 100 किग्रा कपास के गोले ही इकट्ठे कर सकता है जिनका मूल्य प्रति 20 किग्रा पर 30-40 रुपये है। इसलिए, यह मशीन फसल कटाई के खर्च को कम करने का दावा करती है।

नाथूभाई कहते हैं कि 60000-70000 प्रति मशीन को जोड़ने में आने वाला खर्च किसानों के लिए एक अच्छा सौदा है। सक्षम किसान अपना निजी ट्रेक्टर खरीद लेते हैं तो अन्य इसे उधार या साझा कर लेते हैं। वह सोचते हैं कि एक छोटे से सुधार से वह कटाई तो कर ही सकते हैं बल्कि कपास भी प्राप्त कर लेते हैं। वे कहते हैं, ''दिमाग में तो है, करना पड़ेगा।''

प्रोत्साहन और मान्यता

नाथूभाई और उनके कपास के गोलों को चुनने वालों को मीडिया, सरकारी अधिकारियों और जनता के बीच ख्याति मिली। सन् 2005 में, उत्तर गुजरात के नरोदा राजपूत समाज की ओर से मशीन तैयार करने में नाथूभाई के प्रयासों को पहचान व शुभकामनाएं मिलीं। सन् 2006 में, उन्हें जिले के सबसे प्रगतिशील किसान के रूप में सरदार पटेल कृषिसम्मान से सम्मानित किया गया। सन् 2007 में, उन्हें अपने आविष्कार के लिए *सृष्टि* सम्मान मिला। उन्होंने बैसाख और तीज पर वर्षा से पहले होने वाले किसानों के सम्मेलन, संवाद और वार्तालाप के कार्यक्रमों में भी भाग लिया। उनकी एक बैठक गुजरात के मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रतिनिधि दिलीप संगनानी के साथ भी हुई जहां कुछ वैज्ञानिक भी शामिल हुए। उन्होंने नाथूराम को भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार की ओर से जल्द ही इस मशीन के सफल निर्माण पर सब्सिडी का प्रावधान किया जाएगा। इसके बाद, नाथूभाई को सन् 2012 में छठवें राष्ट्रीय द्विवार्षिक सम्मान में *नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन्स* गुजरात राज्य सम्मान मिला।

एक समय में जब पैसों की तंगी के चलते नाथूभाई का काम रुक गया था तब गुजरात में जनसाधारण की पहल को बढ़ावा देने के लिए एक संगठन *सृष्टि* आगे आया। इसके अतिरिक्त उन्हें एनआईएफ/जीआईएएन की ओर से भी तकनीकी तथा आर्थिक सहायता मिली। इस अनुदान को पाने के बाद उन्होने अपनी मशीन को दो तरफा हाइड्रोलिक गियर प्रणाली से उन्नत बनाया। नाथूभाई कहते हैं कि अनुदान की राशि का अधिकतर भाग मशीन के सुधार में चला गया।

जैसे ही इस मशीन के बनने की खबर फैली तो क्षेत्र के लोगों ने इसे खरीदने के लिए उत्सुकता दिखानी शुरू कर दी। यहां के किसानों के लिए कपास को चुनना एक बड़ा मुद्दा है इसके लिए हमें मजदूरों पर बहुत ज्यादा खर्च उठाना पड़ता है। हम इस मशीन को महंगी होने के बावजूद भी खरीदेंगे क्योंकि जरूरत पड़ने पर हमारे पैसे बचेंगे। उनके गांव के एक बुजुर्ग सदस्य ने बताया कि ऐसी मशीन को बनाना एक मुश्किल काम है और इसके लिए बहुत ज्यादा मानसिक और शारीरिक समर्पण की आवश्यकता होती है। पूरे गांव में नाथूभाई के पास ही ऐसी मशीन बनाने का हुनर है।

मशीन के बारे में गांव के एक अन्य वरिष्ठ सदस्य ने कहा कि जब जुताई, खुदाई और कपास को अलग करने के लिए मशीनें हो सकती हैं तो कपास के गोलों को चुनने के लिए क्यों नहीं? इसके पीछे कोई कारण नहीं है। सभी अब उसके पास मशीन के बारे में पूछने आएंगे जिससे इसकी मांग भी बढ़ेगी। नाथूभाई इस 'गुणकारी मशीन' के लिए एक बाजार तैयार कर रहे थे जिसके लिए अभी और कदम उठाने बाकी हैं। इस पूरे जिले में फर्गयूसन ट्रेक्टर विक्रेता तथा आपूर्तिकर्ता प्रकाश भाई के दोधिया ने हमें बताया कि इस मशीन के लिए लोग डेढ़ लाख या उससे भी अधिक रुपये देने को तैयार हैं। उन्होंने बताया कि जब लोग एक थ्रेसर के लिए डेढ़ लाख रूपये दे चुका सकते हैं तो वे अपनी इस महत्वाकांक्षी मशीन के लिए दो से ढाई लाख रूपये भी लगा सकते हैं। यह लागत उनकी मजदूरों पर लगने वाली पूंजी की बचत के साथ वसूल हो जाती है।

अगला कदम

जब मशीन का प्रारूप तैयार हो गया है तो अब नाथूभाई की अपने गांव में इसके निर्माण के लिए एक ईकाई शुरू करने की योजना है। क्योंकि इसके लिए भूमि और बिजली कोई बड़ी समस्या नहीं है इसलिए इसे शुरू करना आसान होगा। वह इस मशीन में एक कपास इकट्ठा करने के लिए भी जगह बनाने के बारे में विचार कर रहे हैं। नाथूभाई की इच्छा चुंबक से चलने वाली मशीन बनाने की है, जिसके लिए वह आश्वस्त हैं कि वे जल्द ही इसे तैयार कर देंगे। ❑

रेल बजट: एक नजर में

रेलवे का आय-व्यय

2012-13 में रेलवे के आय-व्यय का लेखा-जोखा

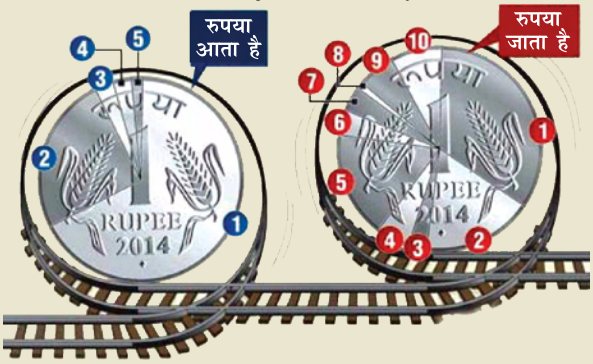

रुपया जहां से आया		रुपया जहां खर्च हुआ	
1 माल ढुलाई आय - 67 पै.	1 कर्मचारी वेतन और भत्ते - 34 पै.	6 लीज खर्च - 4 पै.
2 यात्री आय - 25 पै.	2 ईंधन - 18 पै.	7 लाभांश - 4 पै.
3 अन्य कोचिंग आय - 3 पै.	3 भंडारण - 3 पै.	8 पूंजी निधि - 1 पै.
4 अन्य आय - 3 पै.	4 अवमूल्यन आरक्षित निधि - 5 पै.	9 विकास निध - 6 पै.
5 विविध प्राप्तियां - 2 पै.	5 पेंशन निधि - 17 पै.	10 विविध - 8 पै.

स्रोत: रेल बजट दस्तावेज, 2014-15

मुख्य प्रावधान

बजट अनुमान

- कुल प्राप्तियां - ₹ 1,64,374 करोड़
- कुल खर्च - ₹ 1,49,176 करोड़
  - ✔ रेल आरक्षण प्रणाली की क्षमता बढ़ाकर 7,200 टिकट प्रति मिनट के स्तर पर लाना
  - ✔ महिला सुरक्षा के लिए 4,000 महिला आरपीएफ कांस्टेबल की बहाली
  - ✔ 58 नई रेलगाड़ियां - 5 जनसाधारण, 5 प्रीमियम, 6 एसी, 27 एक्सप्रेस, 8 सवारी गाड़ी, 2 एमईएमयू और 5 डीएमईएमयू
  - ✔ मुंबई-अहमदाबाद क्षेत्र के लिए बुलेट ट्रेन
  - ✔ महानगरों के लिए उच्च गति रेल के हीरक चतुर्भुज नेटवर्क के लिए 100 करोड़ रुपये
  - ✔ चुनिंदा गाड़ियों और ए-1 तथा ए श्रेणी के स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा

योजना का फेसबुक पृष्ठ अब हिंदी में भी

प्रिय पाठकों, योजना ने अपने फेसबुक पृष्ठ (https://www.facebook.com/yojanaJournal) पर 50,000 लाइक्स प्राप्त कर लिए हैं। इस खुशी के मौके पर हिंदी पाठकों और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को समर्पित हिंदी फेसबुक पृष्ठ शुरु किया गया है। हमसे जुड़ने के लिए अड्रेस बार में टाइप करें: https://www.facebook.com/pages/योजना हिंदी

हिंदी उपयोगकर्ताओं से निवेदन है कि इस पृष्ठ पर आकर एक बार फिर से हमारा उत्साह बढ़ाएं।

इस ऑनलाइन मंच के जरिए
पाठक हमारी ओर से तत्क्षण सूचनाएं और जानकारियां
पा सकते हैं तथा अपनी राय और सुझावों से अवगत भी करा सकते हैं।

चुनिंदा केन्द्रीय मंत्रालयों का बजट परिव्यय

¼djkM #i; e½

Ø-	e=ky;	2012&13 ¼okLrfod½	%	2013&14 ¼c-v-½	%	2013&14 ¼l-v-½	%	2014&15 ¼v-c-½	%	2014&15 ¼c-v-½	%
1	—f"k	24254-42	0-24	29772-83	0-26	26070-87	0-23	29962-94	0-23	31062-94	0-24
2	miHkkäk ekey] [kk|] lkotfud forj.k	86676-52	0-86	91591-45	0-81	93339-86	0-82	115948-99	0-90	115952-63	0-90
3	j{kk	230642-11	2-28	253346-51	2-23	253788-01	2-24	279202-87	2-17	285202-87	2-21
4	i;ty o LoPNrk	12968-63	0-13	15265-70	0-13	12006-24	0-11	15266-85	0-12	15266-85	0-12
5	LokLF; o ifjokj dY;k.k	27885-19	0-28	37330-00	0-33	30847-31	0-27	38737-82	0-30	39237-82	0-30
6	vkokl o 'kgjh xjhch mi'keu	933-18	0-01	1468-02	0-01	1207-72	0-01	6008-62	0-05	6008-62	0-05
7	ekuo lalk/ku fodkl	66054-67	0-65	79451-00	0-70	74621-30	0-66	81441-10	0-63	82771-10	0-64
8	vYila[;d ekey	2174-29	0-02	3530-98	0-03	3130-84	0-03	3734-01	0-03	3734-01	0-03
9	iVkfy;e o çk—frd xl	97423-04	0-96	65188-41	0-57	85566-13	0-75	63543-00	0-49	63543-00	0-49
10	lMd ifjogu o jktekx	22536-58	0-22	31302-14	0-28	30338-53	0-27	31257-20	0-24	34345-20	0-27
11	xkeh.k fodkl	53180-98	0-53	0250-50	0-71	61863-93	0-54	82261-46	0-64	83852-46	0-65
12	lkekftd U;k; o vf/kdkfjrk	4939-72	0-05	6725-32	0-06	5723-35	0-05	6845-63	0-05	6845-63	0-05
13	tutkrh; ekey	3072-63	0-03	4295-94	0-04	3896-05	0-03	4397-96	0-03	4497-96	0-03
14	'kgjh fodkl	8465-00	0-08	10363-75	0-09	9548-20	0-08	19589-46	0-15	20009-46	0-16
15	efgyk ,o cky fodkl	17035-72	0-17	20440-00	0-18	18285-65	0-16	21093-88	0-16	21193-88	0-16
	dy ctV dk %		1-21		1-23		1-15		1-20		1-18

स्रोत: केन्द्रीय बजट, 2014-2015 : ब.अ.=बजट अनुमान, सं.अ.=संशोधित अनुमान, %=जीडीपी का प्रतिशत

नमामि गंगे परियोजना

गंगा नदी के संरक्षण और स्वच्छता के लिए इस बजट में 2037 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ नमामि गंगे परियोजना की घोषणा की गयी है। केदारनाथ, हरिद्वार, कानपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, पटना में नदी के घाटों और इसके सामने के भागों के सौंदर्यीकरण के लिए 100 करोड़ रुपये का अलग से प्रावधान किया गया है। गंगा के संरक्षण के प्रति अप्रवासी भारतीयों के उत्साह का प्रयोग कर गंगा की विशिष्ट परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध करने के लिए एक एनआरआई फण्ड भी स्थापित किया गया है। इलाहाबाद से हल्दिया के बीच 1620 किलोमीटर की दूरी में परिवहन के लिए गंगा जलमार्ग विकास परियोजना भी शुरू की गयी है। इससे कम से कम 1500 टन माल ढुलाई के लिए व्यवसायिक नौवहन का मार्ग प्रशस्त होगा। यह परियोजना 4200 करोड़ की अनुमानित लागत से छह वर्ष में पूरी की जानी है।

प्रकाशक एवं मुद्रक ईरा जोशी, अपर महानिदेशक द्वारा प्रकाशन विभाग के लिए इंटरनेशनल-प्रिंट-ओ-पैक लिमिटेड, बी-206, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेस-1, नयी दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. परिसर, लोधी रोड, नयी दिल्ली-110003 से प्रकाशित। संपादक: जयसिंह

रजि.सं.डीएल (एस)-05/3231/2012-14
Reg.No. D.L.-05/3231/2012-14 at RMS, Delhi
30 जुलाई 2014 को प्रकाशित • 7-8 अगस्त 2014 को डाक द्वारा जारी

Licenced under U (DN)-55/2012-14
आर.एन.आई. 951/57
R.N.I. 951/57

प्रतियोगिता दर्पण

के अतिरिक्तांक

टॉपर्स की नजर में

➡ .....प्रतियोगिता दर्पण के अर्थशास्त्र व राजव्यवस्था अतिरिक्तांक काफी अच्छे लगे. —संतोष कुमार राय
सिविल सेवा परीक्षा, 2013 में हिन्दी माध्यम से प्रथम स्थान पर चयनित

➡ .....मैंने प्रतियोगिता दर्पण का उपयोग किया और विशेषतः इसके अर्थव्यवस्था वाले भाग से तैयारी में मुझे बहुत मदद मिली. —मेधा रूपम
सिविल सेवा परीक्षा, 2013 में 10वें स्थान पर चयनित

➡ .....मैंने अर्थव्यवस्था के अतिरिक्तांक का उपयोग समय के सदुपयोग के लिए किया. —प्रियंका निरंजन
सिविल सेवा परीक्षा, 2012 में हिन्दी माध्यम से द्वितीय स्थान

➡ .....मैंने प्रतियोगिता दर्पण के अर्थव्यवस्था एवं सामान्य विज्ञान के अतिरिक्तांकों का अध्ययन किया है, जो तैयारी के दौरान काफी उपयोगी रहे. —दिनेश मिश्रा
उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. परीक्षा, 2012 में हिन्दी माध्यम से प्रथम स्थान

➡ .....मैंने भारतीय अर्थव्यवस्था व प्रतियोगिता दर्पण समसामयिक वार्षिकी पढ़ी है. —प्रियम माहेश्वरी
मध्य प्रदेश पी.एस.सी.परीक्षा, 2010 में तृतीय स्थान

➡ .....मुझे विशेष रूप से अर्थव्यवस्था के अतिरिक्तांक से बड़े स्तर पर फायदा पहुँचा है. —मनोज कुमार
आर.ए.एस. परीक्षा, 2010 में सर्वोच्च स्थान

To purchase online log on to www.pdgroup.in

New Revised & Enlarged Editions

Series-1	Indian Economy 2014	790	325.00
	Economy : At A Glance	799	135.00
Series-2	Geography (India & World)	793	270.00
Series-3	Indian History	798	140.00
Series-4	Indian Polity & Governance	797	210.00
Series-6	General Science Vol. 1	814	130.00
Series-6	General Science Vol. 2	818	90.00
Series-7	Current Events Round-up	819	110.00
Series-12	Indian National Movement & Constitutional Development	812	105.00
Series-15	Indian History-Ancient India	804	140.00
Series-16	Indian History-Medieval India	806	140.00
Series-17	Indian History-Modern India	802	140.00
Series-19	New Reasoning Test	826	245.00
Series-22	Political Science	821	240.00
Series-23	Public Administration	824	195.00
Series-24	Commerce	805	275.00
प. सीरीज–1	भारतीय अर्थव्यवस्था 2014	791	299.00
	अर्थव्यवस्था : एक दृष्टि में	811	125.00
प. सीरीज–2	भूगोल (भारत एवं विश्व)	792	195.00
प. सीरीज–3	भारतीय इतिहास	795	140.00
प. सीरीज–4	भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन	794	175.00
प. सीरीज–5	भारतीय कला एवं संस्कृति	796	125.00
प. सीरीज–6	सामान्य विज्ञान Vol. 1	829	130.00
प. सीरीज–6	सामान्य विज्ञान Vol. 2	830	105.00
प. सीरीज–7	समसामयिक घटनाचक्र	809	95.00
प. सीरीज–9	वस्तुनिष्ठ सामान्य हिन्दी	822	110.00
प. सीरीज–10	बौद्धिक एवं तर्कशक्ति परीक्षा	825	150.00
प. सीरीज–11	समाजशास्त्र	810	130.00
प. सीरीज–12	भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास	823	120.00
प. सीरीज–13	खेलकूद	828	170.00
प. सीरीज–14	कृषि विज्ञान	836	155.00
प. सीरीज–15	प्राचीन इतिहास	837	140.00
प. सीरीज–16	मध्यकालीन इतिहास	838	160.00
प. सीरीज–17	आधुनिक इतिहास	839	180.00
प. सीरीज–18	दर्शनशास्त्र	842	110.00
प. सीरीज–19	न्यू रीजनिंग टेस्ट	843	150.00
प. सीरीज–20	हिन्दी भाषा	860	135.00
प. सीरीज–21	संख्यात्मक अभियोग्यता	861	250.00
प. सीरीज–22	राजनीति विज्ञान	866	199.00
प. सीरीज–23	लोक प्रशासन	813	230.00
प. सीरीज–24	वाणिज्य	816	245.00

प्रतियोगिता दर्पण
2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-282 002 फोन : 4053333, 2531101, 2530966; फैक्स : (0562) 4053330
• E-mail : care@pdgroup.in
ब्रांच ऑफिस : • नई दिल्ली फोन: 011-23251844/66 • हैदराबाद फोन: 040-66753330 • पटना फोन : 0612-2673340
• कोलकाता फोन : 033- 25551510 • लखनऊ फोन : 0522-4109080